@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
वीरवार, 15 मई 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 184 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

21 दिन बाद भारत लौटे बीएसएफ जवान पूर्णम साव

सी.चन्द्रा

नई दिल्ली, 14 मई। पाकिस्तान ने बुधवार को पंजाब में अटारी-वाघा सीमा के रास्ते 23 अप्रैल को पकड़े गए बीएसएफ जवान पूर्णम साव को भारत को सौंप दिया। कॉन्स्टेबल को पाकिस्तान रेंजर्स ने सुबह 10:30 बजे सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) को सौंप दिया गया। बीएसएफ के प्रवक्ता ने बताया कि यह कार्रवाई शांतिपूर्ण तरीके से और स्थापित प्रोटोकॉल के अनुसार की गई। दरअसल, पंजाब के फिरोजपुर सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा (आईबी) को गलती से पार करने के बाद पाकिस्तानी रेंजर्स ने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक जवान को पकड़ लिया था। मामला 23 अप्रैल का है। जवान की पहचान 182वीं बीएसएफ बटालियन के कॉन्स्टेबल पूर्णम साव के रूप में हुई थी। वह भारत-पाकिस्तान सीमा के पास खेत के पास ड्यूटी पर थे। नियमित गतिविधि के दौरान वे अनजाने में भारतीय सीमा की बाड़ को पार कर पाकिस्तानी क्षेत्र में चले गए थे, जहां उन्हें पाकिस्तान रेंजर्स ने हिरासत में ले लिया था। पूर्णम मूल रूप से पश्चिम बंगाल के रिसड़ा के रहने वाले हैं। कुछ दिन पहले सैनिक की पत्नी रजनी ने पति की रिहाई को लेकर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात की थी। रजनी ने चंडीगढ़ पहुंचकर बीएसएफ अधिकारियों से मुलाकात भी की थी। यह घटना तब हुई, जब बीएसएफ जवान पूर्णम साव 182वीं बटालियन, बॉर्डर के गेट संख्या 208/1 पर तैनात थे। वे फसल कटाई के दौरान भारतीय किसानों पर नजर रख रहे थे। बीएसएफ, किसानों की सुरक्षा भी करती है।

ऑपरेशन सिंदूर को लेकर राष्ट्रपति से मिले तीनों सेना प्रमुख

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 14 मई। भारत की तरफ से पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाकर चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर को लेकर देश की शीर्ष सैन्य नेतृत्व ने बुधवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को जानकारी दी। जहां मुख्य रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान, थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए. पी. सिंह, और नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी ने राष्ट्रपति भवन में मुलाकात कर उन्हें ऑपरेशन की प्रगति और उपलब्धियों से अवगत कराया। उधर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कैबिनेट समिति सुरक्षा (सीसीएस) की बैठक की अध्यक्षता की। इसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल हुए। बैठक में मौजूदा सुरक्षा स्थिति और आगे की रणनीतियों पर चर्चा की गई। इसके बाद प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक भी हुई। तीनों सेना प्रमुख और राष्ट्रपति मुर्मू की मुलाकात की जानकारी राष्ट्रपति भवन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर के दी। राष्ट्रपति भवन ने लिखा कि चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) अनिल चौहान, थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह और नौसेना प्रमुख एडमिरन दिनेश के त्रिपाठी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। इस दौरान सेना प्रमुखों ने राष्ट्रपति मुर्मू को ऑपरेशन सिंदूर को लेकर विस्तार से जानकारी दी। राष्ट्रपति मुर्मू ने आतंकियों का पनाहगाह पाकिस्तान और आतंक के खिलाफ भारत की जवाबी कार्रवाई को सफल और सटीक बनाने के लिए सशस्त्र बलों की वीरता और समर्पण की सराहना की। गौरतलब है कि 6 से 7 मई की दरमियानी रात को 1:05 बजे से लेकर 1:30 बजे तक सशस्त्र बलों ने ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। 25 मिनट के इस ऑपरेशन में 24 मिसाइलों के जरिए नौ आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया गया। इन नौ ठिकानों में से पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में थे, वहीं चार पाकिस्तान में थे। इन ठिकानों में आतंकियों को भर्ती किया जाता था। उन्हें प्रशिक्षित किया जाता था। इतना ही नहीं भारतीय सेना के इस कार्रवाई में आतंकी मसूद अजहर के परिवार के दस लोगों की मौत हो गई। भारत-पाकिस्तान के बीच हुए संघर्ष के दौरान तुर्किए की सरकार ने खुलकर पाकिस्तान का समर्थन किया। इसे लेकर भारत में नाराजगी है। भारत में तुर्किए का विरोध शुरू हो गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहयोगी संगठन स्वदेशी जागरण मंच ने तो तुर्किए पर प्रतिबंध लगाने की मांग कर दी है। स्वदेशी जागरण मंच ने बुधवार को केंद्र सरकार से मांग की कि तुर्किए पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाएं, कूटनीतिक संबंधों की समीक्षा की जाए, उसके साथ नागरिक उड़ानें बंद कर दी जाएं। इतना ही नहीं तुर्किए घूमने जाने वाले पर्यटकों को भी वहां न जाने की अपील की जाए। स्वदेशी जागरण मंच ने देशवासियों से अपील की है कि वे देशहित में और देश के सैनिकों के साथ एकजुटता दिखाते हुए तुर्किए के उत्पादों का बहिष्कार करें। गौरतलब है कि भारत पाकिस्तान के बीच चार दिनों तक चले संघर्ष के दौरान तुर्किए ने पाकिस्तान की मदद की और उसे ड्रोन्स मुहैया कराए। इन्हीं ड्रोन्स से पाकिस्तान ने भारतीय सैन्य ठिकानों पर हमले की नाकाम कोशिश की। हालांकि तुर्किए ने ये स्वीकार नहीं किया है, लेकिन ड्रोन्स के मलबे से इसकी पुष्टि हो गई है। स्वदेशी जागरण मंच के सह-संयोजक अश्विनी महाजन ने एक बयान जारी कर कहा कि यह हैरान करने वाला है कि तुर्किए, जो पाकिस्तान को दूसरा सबसे बड़ा हथियार सप्लायर है, उसने पाकिस्तानी नौसेना को आधुनिक बनाने और पाकिस्तान की हवाई हमले करने की क्षमताओं में इजाफा करने में अहम भूमिका निभाई है।

दिल्ली हाईकमान की एमपी भाजपा संगठन को फटकार

संजय अरोड़ा

नई दिल्ली, 14 मई। भारतीय सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी पर जनजातीय मंत्री विजय शाह द्वारा दिए गए आपत्तिजनक बयान ने मध्य प्रदेश की सियासत को गरमा दिया है। इस मामले में मंत्री विजय शाह को केन्द्रीय नेतृत्व से फटकार लगी है। इसके बाद उन्होंने माफी भी मांगी है। भाजपा के विश्वस्त सूत्रों का कहना है कि, भाजपा हाईकमान ने इस मामले में मंत्री विजय शाह के साथ साथ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा और संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा को भी फटकार लगाई है। केंद्रीय नेतृत्व ने दोनों नेताओं से कहा कि, मंत्री पर कार्रवाई करने में इतनी देरी क्यों? केंद्रीय नेतृत्व ने दोनों नेताओं को चेतावनी देते हुए यह भी कहा कि, भविष्य में यदि कोई नेता पार्टी लाइन से हटकर बयानबाजी करता है तो उसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ऐसे में कयास लगाए जा रहा है कि विजय शाह मंत्री पद से जल्द ही इस्तीफा दे सकते

है। इधर, शाह के एक विवादित बयान को लेकर मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। कोर्ट ने कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर दिए गए बयान पर स्वतः संज्ञान लेते हुए 4 घंटे के भीतर विजय शाह के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिए है। विपक्षी दल कांग्रेस ने विजय शाह के इस्तीफे की मांग तेज कर दी है। कांग्रेस के आक्रामक रुख और जनता की नाराजगी को देखते हुए अब बीजेपी बचाव की मुद्रा में है। मंत्री शाह के विवादास्पद बयान से हुई पार्टी की किरकिरी के बाद पार्टी ने डैमेज कंट्रोल की कोशिशें तेज कर दी हैं। बयान के बाद मंगलवार को विजय शाह को प्रदेश पार्टी मुख्यालय तलब किया गया। इसके बाद उन्होंने मीडिया के सामने बयान को लेकर माफी मांगी। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा का कहना है मंत्री विजय शाह को समझाइश दी गई है। पार्टी नेतृत्व ने इस मामले को संज्ञान में लिया है और उन्हें आगाह किया गया है। सोफिया कुरैशी इस देश की बेटी है और उसने जो पराक्रम किया है, उसको पूरा देश सैल्यूट करता है। हालांकि विजय शाह के इस्तीफे के सवाल पर पार्टी अध्यक्ष ने कुछ भी नहीं कहा। विष्णुदत्त शर्मा के निर्देश के बाद पूर्व विधायक मानवेंद्र सिंह समेत भाजपा नेताओं ने कर्नल सोफिया कुरैशी के नौगांव छतरपुर में स्थित उनके घर पहुंचकर परिजनों से मुलाकात की है। इस दौरान भाजपा नेताओं ने कहा कि सोफिया हमारे देश की बेटी है और हमें उन पर गर्व है। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने विजय शाह के बयान को लेकर सीएम डॉ. मोहन यादव को घेरा है। उन्होंने कहा कि जबलपुर हाई कोर्ट ने मंत्री विजय शाह पर एफआईआर दर्ज करने के आदेश दिए हैं, लेकिन मुख्यमंत्री जी पूरे घटनाक्रम को लेकर चुप हैं। जैसा उनका नाम है, मोहन जैसे मौन हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा, भोपाल के श्यामला हिल्स थाने में मंत्री विजय शाह के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

सुन ले बेटा पाकिस्तान, बाप तेरा हिंदुस्तान: फडणवीस

मुंबई, 14 मई। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को लेकर भारतीय सेना के सम्मान में बुधवार को मुंबई में भाजपा ने तिरंगा यात्रा निकाली। तिरंगा यात्रा अगस्त क्रांति मैदान से गिरगांव चौपाटी तक निकाली गई जिसमें मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस भी शामिल हुए। उन्होंने नारे लगाए, सुन ले बेटा पाकिस्तान, बाप है तेरा हिंदुस्तान। उन्होंने कहा कि हमें कोई झुका नहीं सकता। भाजपा ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए देशभर में तिरंगा यात्रा लगाने की शुरुआत की है। इस कड़ी में मुंबई और ठाणे में भी तिरंगा यात्रा निकाली गई। मुंबई में फडणवीस ने नारे लगाकर तिरंगा यात्रा में शामिल होने वाले लोगों का उत्साह बढ़ाया। इस दौरान मुख्यमंत्री फडणवीस के साथ भाजपा की तिरंगा यात्रा में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी शामिल हुए। फडणवीस ने दहशतगर्दों को चेतावनी देते हुए कहा कि जिन लोगों ने पहलगाम में 26 लोगों को उनका धर्म पूछकर मारा। इस तरह का बर्बरतापूर्ण हत्याकांड पहले देखने को नहीं मिला था। लेकिन जिन इरादों ने भारत में इस प्रकार का काम किया और हमारे लोगों के मरने पर मजबूर किया, उन इरादों के बुनियादी ढांचे को चकनाचूर कर दिया जाएगा। फडणवीस ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया और अचूक और सटीक प्रहार कर आतंकियों के 9 अड्डे तबाह कर दिए। फडणवीस ने कहा, आतंकी ठिकानों के साथ उसे भी तबाह कर दिया गया जहां हरामखोर कसाब की ट्रेनिंग हुई थी। मुंबई भाजपा अध्यक्ष व मंत्री आशिष शेलार ने नारा दिया कि सेना ने दम झोका है, पाकिस्तान को ठोंका है।

भारत के नए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस गवई

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 14 मई। भारत के अगले प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) के तौर पर न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई ने आज पद संभाल लिया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें पद की शपथ दिलाई। बीते माह की 30 तारीख को कानून मंत्रालय ने जस्टिस गवई को भारत के 52वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति की अधिसूचना जारी की थी। वहीं, 16 अप्रैल को सीजेआई खन्ना ने केंद्र सरकार से उनके नाम की सिफारिश की थी। जस्टिस गवई का कार्यकाल छह महीने का होगा। वह 23 दिसंबर को सेवानिवृत्त होंगे। जस्टिस बीआर गवई साल 2016 में नोटबंदी को लेकर दिए गए फैसले का हिस्सा रहे। जिसमें कहा गया था कि सरकार को करेंसी को अवैध घोषित करने का अधिकार है। इसके अलावा जस्टिस गवई बुलडोजर कार्रवाई के खिलाफ दिए आदेश का भी हिस्सा रहे और इलेक्टोरल बॉन्ड को लेकर फैसला देने वाली पीठ का भी हिस्सा रहे। वहीं, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) जस्टिस संजीव खन्ना मंगलवार को सेवानिवृत्त हो गए। ?जस्टिस खन्ना ने कहा, वह सेवानिवृत्ति के बाद कोई आधिकारिक पद नहीं संभालेंगे, हालांकि वह कानून के क्षेत्र में काम जारी रखेंगे। जस्टिस गवई का जन्म 24 नवंबर 1960 को महाराष्ट्र के अमरावती में हुआ था। जस्टिस गवई के पिता दिवंगत आरएस गवई भी एक मशहूर सामाजिक कार्यकर्ता और बिहार और केरल के पूर्व राज्यपाल रहे। जस्टिस गवई ने अपने वकालत करियर की शुरुआत साल 2003 में बॉम्बे उच्च न्यायालय में बतौर एडिश्नल जज की थी। इसके बाद साल 2005 में वे स्थायी जज नियुक्त हुए। जस्टिस गवई ने 15 वर्षों तक मुंबई, नागपुर, औरंगाबाद और पणजी की पीठ में अपनी सेवाएं दीं। 16 मार्च, 1985 को वकालत शुरू करने वाले न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई ने नागपुर नगर निगम, अमरावती नगर निगम और अमरावती विश्वविद्यालय के स्थायी वकील के रूप में कार्य कर चुके हैं। उन्होंने अगस्त 1992 से जुलाई 1993 तक बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर खंडपीठ में सहायक सरकारी वकील और अतिरिक्त लोक अभियोजक के रूप में सेवा दी। 17 जनवरी, 2000 को उन्हें नागपुर खंडपीठ के लिए सरकारी वकील और लोक अभियोजक नियुक्त किया गया। 14 नवंबर, 2003 को वे बॉम्बे हाईकोर्ट के अतिरिक्त न्यायाधीश बने और 12 नवंबर, 2005 को स्थायी न्यायाधीश नियुक्त हुए। 24 मई, 2019 को उन्हें सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनाया गया। न्यायमूर्ति गवई सर्वोच्च न्यायालय में कई ऐसी संविधान पीठों में शामिल रहे, जिनके फैसलों का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा। दिसंबर 2023 में, उन्होंने पांच जजों की संविधान पीठ में जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के केंद्र के फैसले को सर्वसम्मति से बरकरार रखा।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने 25 नव-नियुक्त खंड विकास एवं पंचायत अधिकारियों को सौंपे नियुक्ति पत्र

तेजिन्दर कौर बब्बर

चंडीगढ़, 14 मई। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने आज 25 नव-नियुक्त खंड विकास एवं पंचायत अधिकारियों को नियुक्ति पत्र सौंपे। मुख्यमंत्री ने इस उपलब्धि पर बीडीपीओ को बधाई दी और कहा कि वे ग्रामीण हरियाणा के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। मुख्यमंत्री आज उनके आवास संत कबीर कुटीर पर आयोजित कार्यक्रम में नव-नियुक्त अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 2047 तक भारत को 'विकसित भारत' बनाने के विजन को साकार करने में खंड विकास एवं पंचायत अधिकारियों की महत्ती भूमिका होगी। विकसित भारत की यात्रा लिखने की पटकथा का काम आपके हाथ से होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन अधिकारियों के नियुक्त होने से विभाग में बीडीपीओ की कमी पूरी होगी। उन्होंने कहा कि ग्रामीण प्रशासन के अग्रिम पंक्ति के अधिकारी होने के नाते आप सभी की भूमिका केवल प्रशासनिक नहीं बल्कि परिवर्तनकारी भी है। आपको मजबूत ग्रामीण ढाँचा तैयार करने, पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त बनाने और कल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में कार्य करना होगा। हरियाणा में समाप्त हुआ खर्ची-पर्ची का दौर, अब मेरिट के आधार पर मिलती हैं सरकारी नौकरियाँ श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि आप सभी का चयन पूरी तरह मेरिट के आधार पर हुआ है। यह हरियाणा की नई कार्य संस्कृति का प्रतीक है। वर्तमान सरकार ने %खर्ची-पर्ची% की व्यवस्था को समाप्त करके यह सुनिश्चित किया है कि केवल योग्य और पात्र अभ्यर्थियों को ही सरकारी सेवा में स्थान मिले। आज गरीब परिवारों के बच्चे भी बिना पर्ची और बिना खर्ची के अपनी मेहनत के बल पर एचसीएस और बीडीपीओ के पदों पर चयनित हो रहे हैं। ईमानदारी व निष्ठा से कार्य करते हुए जन समस्याओं का करें समाधान मुख्यमंत्री ने कहा कि बीडीपीओ के तौर पर आप सभी सरकार का चेहरा हैं, आमजन आपको सरकार के रूप में देखते हैं और बहुत सी अपेक्षाएं रखते हैं। बीडीपीओ गांव के साथ सीधे तौर पर जुड़े होते हैं, इसलिए गांव के विकास में और सरकार की योजनाओं को धरातल पर उतारने में आप सबकी मुख्य भूमिका रहेगी। लोगों की जो अपेक्षाएं आपसे होंगी, उन अपेक्षाओं पर सदैव खरा उतरने का काम करें और हमेशा ईमानदारी से काम करें। उन्होंने कहा कि जब भी कोई आमजन आपके पास आए तो उसकी बात को धैर्यपूर्वक सुनकर उनकी समस्या का समाधान करे और जनसेवा के अपने दायित्व का निर्वहन करें। श्री नायब सिंह सैनी ने विश्वास व्यक्त किया कि नव-नियुक्त बीडीपीओ सरकार के भरोसे पर खरा उतरेंगे और ग्रामीण हरियाणा में तीव्र और प्रभावी विकास को गति देंगे। उन्होंने कहा कि आज हम केवल अधिकारियों की नियुक्ति नहीं कर रहे, बल्कि हम अपने गाँवों को नई ऊर्जा और उत्तरदायी नेतृत्व से सशक्त बना रहे हैं। उल्लेखनीय है कि भर्ती प्रक्रिया का आयोजन हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा किया गया था और मार्च 2024 में हरियाणा सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा आयोजित की गई थी। साक्षात्कार के बाद, विभिन्न पदों के लिए 113 उम्मीदवारों का चयन किया गया, जिनमें से 34 उम्मीदवारों का बीडीपीओ के पद के लिए चयन हुआ था। हालांकि, एक सिविल याचिका के कारण यह नियुक्ति प्रक्रिया कुछ समय के लिए अदालत में लंबित रही। राज्य सरकार ने न्याय और प्रक्रिया की पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में इस मामले की सक्रिय रूप से पैरवी की। लगभग 11 माह की न्यायिक प्रक्रिया के बाद मामला सुलझा और अंतिम नियुक्तियाँ संभव हो सकीं। आज के कार्यक्रम में उपस्थित 25 अभ्यर्थियों को मुख्यमंत्री ने नियुक्ति पत्र सौंपे। विकास एवं पंचायत मंत्री श्री कृष्ण लाल पंवार ने नवनियुक्त बीडीपीओ को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप सभी निष्ठा और ईमानदारी से काम करें और हरियाणा सरकार के अंत्योदय उत्थान व ग्रामीण विकास के ध्येय को आगे बढ़ाने का काम करें।

कांग्रेस ने संघर्ष विराम में ट्रंप की भूमिका पर उठाए सवाल: जयराम रमेश

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 14 मई। कांग्रेस ने भारत पाकिस्तान संघर्ष विराम में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की भूमिका को लेकर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस ने संघर्ष विराम और भारत पाकिस्तान तनाव को लेकर उच्च स्तरीय बैठक की। बैठक के बाद कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से कांग्रेस पार्टी पूछ रही है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम की घोषणा क्यों की? पीएम मोदी और विदेश मंत्री इस पर चुप क्यों हैं? उन्होंने कहा कि कांग्रेस पूरे देश में जय हिंद रैलियां निकालेगी और संघर्ष विराम और डोनाल्ड ट्रंप की मध्यस्थता पर प्रधानमंत्री की चुप्पी पर सवाल उठाएगी। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम की घोषणा की। ऐसा पहली बार हो रहा है। पीएम मोदी इस पर कुछ नहीं बोलते हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो कहते हैं कि अमेरिका की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण थी कि उनकी वजह से ही यह युद्ध रुका। विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर इसका जवाब भी नहीं देते हैं। हम लगातार पूछ रहे हैं कि पीएम मोदी और विदेश मंत्री इस बात का जवाब क्यों नहीं दे रहे हैं कि अमेरिका की भूमिका क्या है? उन्होंने कहा कि हम अपने सशस्त्र बलों के साथ चट्टान की तरह खड़े हैं। हम आतंकवाद के खिलाफ खड़े हैं और हम पाकिस्तान के खिलाफ की गई कार्रवाई का पूरा समर्थन करते हैं। हमने मांग की है कि एक सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए। अब तक दो सर्वदलीय बैठकें हुईं, लेकिन पीएम मोदी किसी भी बैठक में मौजूद नहीं थे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने पहलगाम आतंकी हमले पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने के लिए पीएम मोदी को पत्र लिखा है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर का राजनीतिकरण गलत है। हमने कभी सुरक्षा के मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं किया। हमें यह जानकारी मिली है कि पीएम मोदी 25 मई को एनडीए के मुख्यमंत्रियों से मिलने जा रहे हैं। कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू-कश्मीर के सीएम की क्या गलती है? यह राजनीतिकरण नहीं तो और क्या है? एक तरफ पीएम मोदी गंभीर सवालों का जवाब नहीं दे रहे हैं, सर्वदलीय बैठकों में शामिल नहीं हो रहे हैं और दूसरी तरफ एनडीए के सीएम के साथ बैठकें कर रहे हैं। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि हमने तय किया है कि हम 10-15 राज्यों में जय हिंद सभा रैलियां करने जा रहे हैं। हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता इसमें भाग लेंगे और हम प्रधानमंत्री से कई सवाल पूछेंगे। हमारी पार्टी की ओर से पहले ही कई सवाल पूछे जा चुके हैं। 16 मई को राहुल गांधी भी कुछ सवाल पूछेंगे। इन रैलियों में हम प्रधानमंत्री से पूछेंगे कि वे चुप क्यों हैं। हमारे पूर्व सैनिक विभाग के सदस्य भी रैलियों में मौजूद रहेंगे। उल्लेखनीय है कि डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को रियाद में एक कार्यक्रम में कहा कि हाल ही में मेरे प्रशासन ने सफलतापूर्वक भारत और पाकिस्तान के बीच ऐतिहासिक संघर्ष विराम कराया है। इसके लिए मैंने व्यापार का इस्तेमाल किया और कहा कि परमाणु हथियारों का आदान-प्रदान करने के बजाय चीजों का व्यापार करें। दोनों ताकतवर और अच्छे नेता हैं और दोनों मान गए और ये सब रुक गया। उम्मीद है कि ये ऐसा ही रहेगा। इससे पहले भी ट्रंप ने दावा किया था कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष रुकवाया। हालांकि भारत सरकार साफ कह चुकी है कि संघर्ष विराम के लिए भारत और पाकिस्तान के मध्य बातचीत हुई और इसमें किसी ने मध्यस्थता नहीं की। भारत ने ये भी कहा कि कश्मीर द्विपक्षीय मुद्दा है और इसमें किसी तीसरे पक्ष के लिए जगह नहीं है। सरकार ने कहा कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा।

जेएनयू ने स्थगित किया तुर्किये के विश्वविद्यालय के साथ समझौता

नसीरउद्दीन

नई दिल्ली, 14 मई। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में भारत द्वारा आतंकवाद के खिलाफ किए गए ऑपरेशन सिंदूर के बाद, तुर्किये ने पाकिस्तान का समर्थन करते हुए उसे रक्षा उपकरण मुहैया कराए थे। ऐसे में देशभर में तुर्किये बहिष्कार किया जा रहा है। इसी कड़ी में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने भी एक महत्वपूर्ण घोषणा की है। दरअसल, केंद्रीय विश्वविद्यालय ने तुर्किये के एक विश्वविद्यालय के साथ तीन साल की अवधि के लिए किए गए समझौता ज्ञापन को स्थगित कर दिया है। जेएनयू की ओर से ऐसा करने की पीछे की वजह सुरक्षा कारणों को बताया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा जारी आधिकारिक बयान में लिखा है, राष्ट्रीय सुरक्षा कारणों से जेएनयू और इनोनू विश्वविद्यालय, तुर्किये के बीच समझौता ज्ञापन को अगली सूचना तक निलंबित कर दिया गया है। तुर्किये के मालट्या में स्थित इनोनू विश्वविद्यालय ने क्रॉस-कल्चरल रिसर्च और छात्र सहयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों के तहत जेएनयू के साथ अकादमिक साझेदारी की थी। एमओयू पर 3 फरवरी को तीन साल की अवधि के लिए हस्ताक्षर किए गए थे। जेएनयू के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, हमने तुर्किये के इनोनू विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन को निलंबित कर दिया है। समझौते के तहत संकाय विनिमय और छात्र विनिमय कार्यक्रमों के अलावा कई योजनाएं और अन्य बातें थीं। समझौता ज्ञापन रद्द करने का निर्णय भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव की पृष्ठभूमि में लिया गया है। दोनों पड़ोसी देशों ने चार दिनों तक सीमा पार से ड्रोन और मिसाइल हमलों के बाद सैन्य कार्रवाई रोकने के लिए 10 मई को एक समझौता किया था।

पाकिस्तान ने भारतीय उच्चायोग के अधिकारी को 24 घंटे में देश छोड़ने को कहा

इस्लामाबाद। भारत की ओर नयी दिल्ली में एक पाकिस्तानी अधिकारी को 'अवांछित व्यक्ति' घोषित करने के कुछ ही घंटों बाद पाकिस्तान ने भी जवाबी कार्रवाई करते हुए यहां भारतीय उच्चायोग के एक अधिकारी को निष्कासित कर दिया है। पाकिस्तान ने मध्यरात्रि के आसपास जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार उक्त भारतीय अधिकारी ऐसी गतिविधियों में शामिल था, जो उसकी राजनयिक स्थिति के अनुरूप नहीं थी और उसे 24 घंटे के भीतर पाकिस्तान छोड़ने का निर्देश दिया।पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने कहा,पाकिस्तान सरकार ने इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायोग के एक कर्मचारी को उसके विशेषाधिकार के अनुरूप गतिविधियों में शामिल होने के कारण अवांछित व्यक्ति घोषित किया है। संबंधित अधिकारी को 24 घंटे के भीतर पाकिस्तान छोड़ने का निर्देश दिया गया है विज्ञप्ति में कहा गया, भारतीय प्रभारी को आज विदेश मंत्रालय में इस निर्णय से अवगत कराने के लिए बुलाया गया था। इससे पहले मंगलवार को नयी दिल्ली स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग के एक अधिकारी को जासूसी गतिविधियों में संलिप्त पाए जाने के बाद भारत ने अवांछित घोषित कर दिया था। अधिकारी को 24 घंटे के भीतर भारत छोड़ने का आदेश दिया गया था।

चीन के शीर्ष अधिकारियों ने भारत, पाकिस्तान के राजदूतों से की मुलाकात

बीजिंग/इस्लामाबाद/नयी दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम के बाद चीन के शीर्ष अधिकारियों ने बीजिंग में भारतीय और पाकिस्तानी राजदूतों से अलग-अलग मुलाकात की। चीन के विदेश मंत्रालय के एशियाई मामलों के महानिदेशक लियू जिनसोंग ने चीन में भारतीय राजदूत प्रदीप कुमार रावत से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने चीन-भारत संबंधों और साझा हितों से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। वहीं मंगलवार को चीन के उप विदेश मंत्री सुन वेदोंग ने पाकिस्तान के राजदूत खलील हाशमी से उनके अनुरोध पर मुलाकात की श्री वेदोंग और पाकिस्तानी राजदूत की मुलाकात में दोनों ने चीन-पाक संबंधों और क्षेत्रीय व अंतरराष्ट्रीय हालात पर चर्चा की। श्री वेदोंग ने भारत-पाक के बीच पूर्ण और स्थायी संघर्ष-विराम का समर्थन करते हुए बातचीत के जरिए मतभेद सुलझाने की अपील की और क्षेत्रीय शांति में चीन की रचनात्मक भूमिका जारी रखने की बात कही।

टोंगा में महसूस किये गये भूकंप के तीव्र झटके

हांगकांग। टोंगा के नीयाफू से 137 किलोमीटर पश्चिम में बुधवार तड़के भूकंप के तीव्र झटके महसूस किए गए। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने बताया कि स्थानीय समयानुसार, आज तड़के करीब 04:15 बजे महसूस किये गये भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 6.4 मापी गयी। इसका केंद्र समुद्र की सतह से 243.1 किमी की गहराई, 18.72 डिग्री दक्षिण अक्षांश और 175.28 डिग्री पश्चिमी देशांतर में था।प्रशांत सुनामी चेतावनी केंद्र ने भूकंप के तेज झटके के आधार पर सुनामी की चेतावनी जारी नहीं की।

उरुग्वे के पूर्व राष्ट्रपति जोस मुजिका का 89 वर्ष की आयु में निधन

मोंटेवीडियो। उरुग्वे के पूर्व राष्ट्रपति जोस 'पेपे' मुजिका का 89 वर्ष की आयु में मोंटेवीडियो में निधन हो गया। उरुग्वे के राष्ट्रपति यामांडू ओरसी ने इसकी पुष्टि की। श्री मुजिका ने जनवरी में घोषणा की थी कि उनका एसोफैजियल कैंसर (जिसका पहली बार अप्रैल 2024 में निदान किया गया था' उनके लीवर में फैल गया है। उन्होंने कहा कि वह आगे का इलाज नहीं करवाएंगे। श्री ओरसी ने सोशल मीडिया पर लिखा, ÷गहरे दुख के साथ हम अपने साथी श्री पेपे मुजिका - पूर्व राष्ट्रपति, कार्यकर्ता, नेता और मार्गदर्शक के निधन की घोषणा करते हैं। हम आपको बहुत याद करेंगे पुराने दोस्त। आपने हमें जो कुछ भी दिया और अपने लोगों के लिए आपके गहरे प्यार के लिए धन्यवाद। गौरतलब है कि स्थानीय साप्ताहिक बुस्केदा के साथ एक साक्षात्कार में श्री मुजिका ने कहा था, यह मेरे लिए सड़क का अंत है। उन्होंने कहा, मेरा चक्र समाप्त हो गया है। उन्होंने मोंटेवीडियो के बाहरी इलाके में अपने खेत में दफन होने की इच्छा व्यक्त की थी।

गाजा में यूरोपीय अस्पताल पर इजरायली हमले में छह फिलिस्तीनी मारे गये, 40 घायल

गाजा। दक्षिणी गाजा शहर खान यूनिस में यूरोपीय अस्पताल पर इजरायली हवाई हमले में कम से कम छह फिलिस्तीनी मारे गए और 40 अन्य घायल हुए हैं। यह जानकारी गाजा स्थित स्वास्थ्य अधिकारियों ने मंगलवार को दी। फिलिस्तीनी आधिकारिक समाचार एजेंसी वाफा ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि हमले में 16 लोग मारे गए हैं। वहीं अन्य मीडिया संस्थानों ने बचावकर्मियों के हवाले से बताया कि मरने वालों की संख्या 28 है। फिलिस्तीनी सुरक्षा सूत्रों ने कहा कि अस्पताल पर कम से कम छह मिसाइलों से हमला किया गया। सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में अस्पताल को काफी नुकसान हुआ है।

ग्रीस में 6.1 तीव्रता का भूकंप, हिल गया कासोस द्वीप, मध्य इजराइल, मिस्र, लीबिया, तुर्किये और पूर्वी भूमध्य सागर तक रहा प्रभाव

एजेंसी

एथेंस। ग्रीस का कासोस द्वीप आज शक्तिशाली भूकंप के झटको से दहल गया। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 6.1 दर्ज की गई। 14 किलोमीटर की गहराई पर आया यह भूकंप इतना शक्तिशाली था कि इसे मध्य इजराइल, मिस्र, लीबिया, तुर्किये और पूरे पूर्वी भूमध्य सागर में महसूस किया गया। अमेरिका के एबीसी न्यूज चैनल के अनुसार, हालांकि भूकंप के कारण तत्काल किसी तरह के नुकसान या हताहतों की सूचना नहीं मिली है, लेकिन इसने डर पैदा कर दिया। यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे के अनुसार, स्थानीय समयानुसार सुबह ग्रीस के निकट 6.1 तीव्रता का भूकंप आया। ग्रीस आपातकालीन प्रबंधन ने भूकंप के बाद संभावित सुनामी के खतरे की चेतावनी दी और लोगों से तट से तुरंत दूर चले जाने को कहा। यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे ने कहा कि भूकंप का केंद्र ग्रीस के फ्राई से नौ मील दक्षिण में स्थित है।

ग्रीस सिटी न्यूज के अनुसार, भूकंप विज्ञानियों ने कहा कि झटकों पर बारीकी से नजर रखी जा रही है। चिंता की कोई बात नहीं है। सेंटोरिनी या तुर्किये में हाल ही में हुई भूकंपीय गतिविधि से इसका कोई संबंध नहीं है। मुख्य भूकंप सुबह 1¬51 बजे आया। यह कासोस और कारपाथोस के बीच समुद्री क्षेत्र में केंद्रित था। जियोडायनामिक इंस्टीट्यूट ने भूकंप का केंद्र कासोस से 20 किलोमीटर दक्षिण में, 64.4 किलोमीटर की फोकल गहराई पर रखा। यूरो मेडिटेरेनियन सीस्मोलॉजिकल सेंटर ने 6.1 तीव्रता के भूकंप का केंद्र कारपाथोस से 38 किलोमीटर दक्षिण और 71 किलोमीटर की गहराई पर बताया है।

सेंटर ने कहा कि इसके झटके क्रेते और रोड्स में महसूस किए गए। शुरुआती भूकंप के बाद, उसी अपतटीय क्षेत्र में दो छोटे झटके महसूस किए गए। पहला झटका सुबह 3:30 बजे आया, जिसकी तीव्रता 2.8 रही। दूसरा झटका सुबह 3¬57 बजे आया, जिसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3.4 मापी गई। इसका केंद्र कासोस से 15 किलोमीटर दक्षिण में 47.2 किलोमीटर की गहराई पर स्थित था।

भूकंप नियोजन और संरक्षण संगठन के अध्यक्ष एफथिमिस लेक्कास ने जनता को आश्वस्त करते हुए कहा कि प्राथमिक भूकंप एक एक बार की घटना प्रतीत होती है। जो इस क्षेत्र में गहरे केंद्रित भूकंपों की विशेषता है। भूकंप की गहराई, जो लगभग 60 किलोमीटर है, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस गहराई का मतलब है कि कासोस और कारपाथोस जैसे आबादी वाले क्षेत्रों में जमीन के हिलने की तीव्रता कम हो गई है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सेंटोरिनी या तुर्किये में हुई भूगर्भीय हलचल से इसका कोई संबंध नहीं है। सेंटोरिनी एक ज्वालामुखीय चाप के भीतर स्थित है। यह पूरी तरह से अलग भूवैज्ञानिक संरचना है।

भारत-पाक तनाव के बीच दोनों देशों के मंत्री काठमांडू में होंगे आमने-सामने

एजेंसी

काठमांडू। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम के बाद भी तनाव की स्थिति बनी हुई है। ऑपरेशन सिंदूर के अस्थाई रूप से रुकने के बाद भी कूटनीतिक और राजनीतिक रूप से स्थिति अब भी सहज नहीं है। ऐसे में दोनों देशों के मंत्री काठमांडू में दो दिनों तक एक ही कार्यक्रम में शिरकत करने वाले हैं। नेपाल सरकार के द्वारा 16-18 मई को सागरमाथा संवाद का आयोजन किया जा रहा है जिसमें भारत, पाकिस्तान और चीन सहित कई देशों के प्रतिनिधि सहभागी होने वाले हैं। जलवायु परिवर्तन को लेकर होने जा रहे इस सागरमाथा संवाद कार्यक्रम में भारत की तरफ से वन तथा वातावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव सहभागी होने वाले हैं। इसी कार्यक्रम में पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करने के लिए वहां के वातावरण तथा जलवायु परिवर्तन मामलों के मंत्री डा मुसादिक मसूद मलिक के सहभागी होने की जानकारी दी गई है। इस्लामाबाद में नेपाल की राजदूत रीता धिताल ने मंगलवार की शाम को मुलाकात कर उन्हें काठमांडू आने का औपचारिक न्यौता दिया है। माना जा रहा है कि मलिक ही पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करते हुए सागरमाथा संवाद कार्यक्रम में सहभागी होने वाले हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच चार दिनों तक चली जंग के बाद इस समय अस्थाई तौर पर युद्धविराम की घोषणा के बाद यह पहली बार होगा जब किसी अंतराष्ट्रीय फोरम पर दोनों देशों के मंत्री एक साथ नजर आने वाले हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के नाम अपने संबोधन में यह कहा था कि टेरर और टॉक एक साथ नहीं चल सकता है। ट्रेड और टॉक एक साथ नहीं चल सकता है। अब देखना यह है कि दो दिनों तक काठमांडू में एक ही कार्यक्रम में सहभागी होने के बावजूद भारत और पाकिस्तान के मंत्री का एक दूसरे के प्रति क्या रवैया रहने वाला है।

जेलेंस्की का ट्रंप से तुर्किये शांति वार्ता में मौजूद रहने का आग्रह

एजेंसी

कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से तुर्किये में रूस के साथ होने वाली शांति वार्ता में शामिल होने का आग्रह किया है। जेलेंस्की को उम्मीद है कि अगर ट्रंप इस दौरान मौजूद रहते हैं तो रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर युद्ध रोकने का दबाव बढ़ेगा।द न्यूयॉर्क टाइम्स की खबर के अनुसार, जेलेंस्की को विश्वास है कि ट्रंप इस दौरान मौजूद रहेंगे। उन्होंने कहा कि क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप जरूरत पड़ने पर तुर्किये पहुंचने की अपनी प्रतिबद्धता दोहरा चुके हैं। इस बीच जेलेंस्की ने कहा कि वह राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन से मिलने के लिए तुर्किये की राजधानी अंकारा जाएंगे और गुरुवार को इस्तांबुल में अपने रूसी समकक्ष व्लादिमीर पुतिन के साथ सीधी बातचीत के लिए उपलब्ध रहेंगे।कीव में जल्दबाजी में आयोजित एक प्रेस ब्रीफिंग में उन्होंने संवाददाताओं से कहा, हम यह सुनिश्चित करने के लिए सब कुछ करेंगे कि यह बैठक हो। हालांकि रूस ने अभी तक यह नहीं बताया है कि इस्तांबुल कौन जाएगा। क्रेमलिन ने केवल इतना कहा है कि पुतिन अगर इसकी जरूरत समझते हैं तो इसकी घोषणा की जाएगी। दोनों देशों के बीच

आखिरी बार सीधी बातचीत इस्तांबुल में मार्च 2022 में हुई थी। यह वही वक्त था जब रूस ने यूक्रेन पर बड़े पैमाने पर आक्रमण किया था।

अमेरिका में मेनेंडेज बंधुओं को माता-पिता की हत्या के जुर्म में आजीवन कारावास की सजा

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका की एक संघीय अदालत ने बेवर्ली हिल्स हवेली कैलीफोर्निया में अपने पिता जोस और मां किट्टी मेनेंडेज की हत्या के जुर्म में लाइल और एरिक मेनेंडेज को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। दोनों तीन दशक के अधिक समय से जेल में बंद हैं। लाइल अब 57 और एरिक 54 वर्ष के हैं। लॉस एंजिल्स सुपीरियर कोर्ट के जज माइकल वी. जेसिक ने यह फैसला परिवार के सदस्यों की गवाही के एक दिन बाद सुनाया।

द न्यूयॉर्क टाइम्स की खबर के अनुसार, सुपीरियर कोर्ट ने जेल से रिहाई की संभावना के मद्देनजर दोनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। परिवार के सदस्यों ने गवाही दी कि दोनों भाइयों ने शिक्षा और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से जेल के अंदर अपने जीवन को बदल दिया है। उन्होंने अदालत से 1989 के इस केस में दोनों भाइयों को कम से कम सजा सुनाने का आग्रह

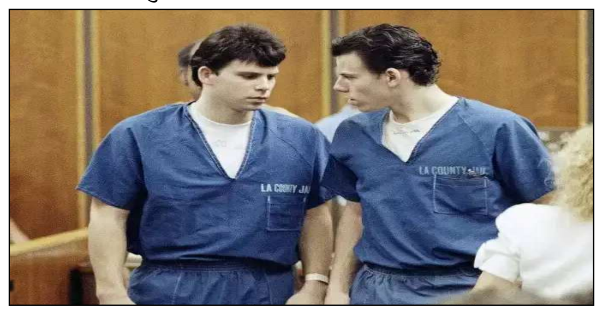

किया। लाइल और एरिक की मौसी जोन वेंडरमोलेन की गवाही इस केस में सबसे अहम रही।

जज जेसिक ने फैसले में लिखा कि यह बहुत ही भयानक अपराध था। गुनाह बहुत चौंकाने वाला था। जेल सुधार अधिकारियों ने दोनों के जीवन में बदलाव के साक्ष्य उपलब्ध कराए। इन साक्ष्यों ने स्पष्ट रूप से इस केस में फैसले को प्रभावित किया। बचाव पक्ष के वकील मार्क गेरागोस ने फैसले की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह न्यायाधीश जेसिक को सलाम करते हैं। उल्लेखनीय है कि दोनों भाइयों ने गुनाह स्वीकार करते हुए कहा था कि उनके सामने हत्या करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। पिता ने उनका यौन उत्पीड़न किया और मां ने कभी भी विरोध नहीं किया।

श्रीलंका में छह डॉल्फिन समुद्र तट पर मिलीं, चोट देखकर विज्ञानी चिंतित

एजेंसी

कोलंबो। श्रीलंका में कम से कम छह डॉल्फिन समुद्र तट पर मिली हैं। सभी चोटिल हैं। इससे वन्यजीव विज्ञानी चिंतित आश्चर्यचकित हैं। वह इसकी वजह के लिए अशांत समुद्री परिस्थितियों की ओर इशारा कर रहे हैं। देश के वरिष्ठ वन्यजीव अधिकारियों ने इसके निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अध्ययन शुरू किया है। डेली मिरर की खबर में वन्यजीव अधिकारियों के हवाले से कहा गया है कि कलूटारा साउथ बीच पर कम से कम छह डॉल्फिन बहकर किनारे पर आ गईं। वन्यजीव संरक्षण विभाग की पशु चिकित्सा इकाई के अधिकारियों ने कहा कि डॉल्फिन को स्पष्ट चोटों के साथ पाया गया। अधिकारियों के अनुसार, इस घटना में अशांत समुद्री परिस्थितियों की भी भूमिका हो सकती है। इसलिए, कलूटारा साउथ बीच के आसपास

की सटीक परिस्थितियों का पता लगाने के लिए जांच चल रही है। समुद्रीय विज्ञानियों के अनुसार, डॉल्फिन को चोट लगने के कई कारण हो सकते हैं। इनमें कुछ मुख्य कारण हैं- मछली पकड़ने के उपकरणों में उलझना। महासागर का प्रदूषण। आवास की हानि। जलवायु परिवर्तन और ध्वनि प्रदूषण। डॉल्फिन का शिकार। गैर जिम्मेदार पर्यटन। इसके अतिरिक्त नावों से टकराना, फंगल संक्रमण और मनुष्यों का प्रताड़ित करना भी डॉल्फिन को चोट पहुंचाने का कारण बन सकता है। श्रीलंका के दक्षिणी समुद्र के जल में ब्लू व्हेल, ब्राइड्स व्हेल, स्पर्म व्हेल, फिन व्हेल, बॉटल नोज डॉल्फिन, कॉमन डॉल्फिन और स्पिनर डॉल्फिन पाई जाती हैं। कलपिटिया के जल में स्पिनर डॉल्फिन के बड़े समूह पाए जाते हैं। यहां स्पर्म व्हेल, ब्लू व्हेल, पिग्मी स्पर्म व्हेल और पायलट व्हेल भी बड़े समूहों में देखे जाते हैं। शर्मीली पिग्मी किलर व्हेल और पेलाजिक मेलन-हेडेड व्हेल इंसानों को शायद ही कभी दिखाई देती हैं। लेकिन वह श्रीलंका के समुद्र में पूरे साल रहती हैं। रिसो की डॉल्फिन भी एक गहरे पानी की प्रजाति है।

महंगाई में गिरावट का दावा करते हुए ट्रंप ने फेड से ब्याज दरों में की कटौती की मांग

एजेंसी

वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर फेडरल रिजर्व (फेड) से ब्याज दरों में कटौती की मांग की है। उन्होंने कहा कि गैस, ऊर्जा, किराना और लगभग हर चीज की कीमतों में गिरावट आई है, इसलिए अब फेड को दरें घटानी चाहिए। ट्रंप ने रात अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा, अब कोई महंगाई नहीं है और गैसोलीन, ऊर्जा, किराना और लगभग हर चीज के दाम कम हो गए हैं! फेड को अब दरें कम करनी चाहिए, जैसा कि यूरोप और चीन ने किया है। उन्होंने फेड चेयर जेरोम पॉवेल को एक बार फिर निशाने पर लेते हुए कहा, टू लेट पॉवेल को क्या हो गया है? यह अमेरिका के साथ अन्याय है, जो अब पूरी तरह से खिलने के लिए तैयार है। इसे होने दो, यह एक खूबसूरत चीज़ होगी! ट्रंप पहले भी कई बार फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति की आलोचना कर चुके

हैं। उनका मानना है कि ब्याज दरों में कमी से अमेरिकी अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा, खासकर ऐसे समय में जब दुनिया के कई बड़े देश पहले ही दरें घटा चुके हैं। हालांकि फेडरल रिजर्व ने अब तक संकेत नहीं दिए हैं कि वह निकट भविष्य में दरों में कटौती करेगा। महंगाई को नियंत्रित करने के उद्देश्य से फेड ने पहले ही कई बार दरें बढ़ाई थीं।

डॉ. मोहम्मद यूनुस अंतरिम सरकार प्रमुख बनने के बाद पहली बार गृहनगर चटगांव पहुंचे

एजेंसी

ढाका। मुख्य सलाहकार डॉ. मोहम्मद यूनुस अंतरिम सरकार के प्रमुख के रूप में पदभार ग्रहण करने के बाद आज सुबह पहली बार अपने गृहनगर चटगांव पहुंचे। मुख्य सलाहकार और उनके सहयोगियों को लेकर बिमान बांग्लादेश एयरलाइंस का विमान सुबह लगभग 9¬22 बजे चटगांव के शाह अमानत अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। बांग्लादेश के प्रमुख अखबार ढाका ट्रिब्यून की खबर के अनुसार, मोहम्मद यूनुस अपनी एक दिवसीय यात्रा के दौरान चटगांव बंदरगाह का दौरा करेंगे और बंदरगाह के अंदर एनसीटी-5 परिसर में एक बैठक में भाग लेंगे। वह बंदरगाह और शिपिंग क्षेत्र के वरिष्ठ अधिकारियों, विभिन्न बंदरगाह उपयोगकर्ता संगठनों के प्रतिनिधियों

और व्यापार निकायों के नेताओं के साथ विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। इसके बाद चटगांव सर्किट हाउस जाएंगे। वहां कर्णफुली नदी पर कलुरघाट पुल की आधारशिला रखेंगे।वह चंटगांव के अधिकारियों से शहर में जलभराव और शहर के ऑक्सीजन चौराहे से हाथजारी रोड पर यातायात के दबाव पर भी चर्चा करेंगे। यूनुस एक समारोह में चटगांव नेशनल हार्ट फाउंडेशन की जमीन के दस्तावेज भी सौंपेंगे। वह चटगांव विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। वह हाथजारी उपजिला में शिकारपुर संघ के तहत बथुआ गांव में अपने पैतृक घर का भी दौरा करेंगे। द डेली स्टार अखबार के अनुसार, मुक्ति युद्ध मामलों के सलाहकार फारूक-ए-आजम, ऊर्जा सलाहकार डॉ. मोहम्मद फौजुल कबीर खान, शिक्षा सलाहकार सीआर अबरार, स्वास्थ्य सलाहकार नूरजहां बेगम, मत्स्य पालन और पशुधन सलाहकार फरीदा अख्तर, एसडीजी मामलों की प्रमुख समन्वयक लामिया मोर्शेद और मुख्य सलाहकार के प्रेस सचिव शफीकुल आलम मुख्य सलाहकार के साथ हैं।

नेतन्याहू का ऐलानः जब तक हमास का अंत नहीं होता, गाजा में युद्ध नहीं रुकेगा

एजेंसी

तेल अवीव। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने स्पष्ट कर दिया कि जब तक हमास पूरी तरह समाप्त नहीं हो जाता, गाजा में चल रहे युद्ध को किसी भी सूरत में रोका नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि बंधकों की रिहाई के बदले अस्थायी युद्धविराम संभव है, लेकिन युद्ध का समापन नहीं।प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा जारी एक बयान में नेतन्याहू ने घायल सैनिकों से मुलाकात के दौरान कहा, हम गाजा में पूरी ताकत के साथ घुसने वाले हैं, ताकि मिशन पूरा किया जा सके। इसका मतलब है हमास को खत्म करना।÷ उन्होंने दोहराया कि अगर हमास कुछ और बंधकों को रिहा करता है, तो इजरायल उन्हें ले लेगा, लेकिन युद्ध की रणनीति नहीं बदलेगी। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि ÷हम कुछ समय के लिए संघर्षविराम कर सकते हैं, लेकिन अंत तक लड़ाई जारी

रहेगी। दूसरी ओर, हमास का कहना है कि वह बचे हुए बंधकों को तभी रिहा करेगा जब इजरायल, और फिलीस्तीनी कैदियों को रिहा करे। साथ ही, गाजा से अपनी सेना हटाए और और एक स्थायी युद्धविराम की घोषणा करे। ऐसे में नेतन्याहू के इस बयान से गाजा संघर्ष को लेकर चल रही संभावित युद्धविराम वार्ताओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। खासकर ऐसे समय में जब हमास ने सोमवार को अंतिम जीवित अमेरिकी बंधक को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सम्मान में रिहा किया था। ट्रंप वर्तमान में पश्चिम एशिया दौरे पर हैं, हालांकि वह इजराइल नहीं जा रहे।

पाकिस्तानी जेलों से 330 अफगान कैदियों को रिहा किया गया

एजेंसी

काबुल। पाकिस्तान में कैद कुल 330 अफगानिस्तानी कैदियों को रिहा कर दिया गया है और उन्हें उनके वतन वापस भेज दिया गया है।शरणार्थी एवं प्रत्यावर्तन मंत्रालय की ओर से मंगलवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक पाकिस्तान ने पिछले एक सप्ताह के दौरान 330 कैदियों को रिहा किया।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address : qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

फ्रांस में कान्स फिल्म फेस्टिवल का आगाज, रेड कार्पेट पर उर्वशी रौतेला का जलवा, ज्यूरी मेंबर बनीं पायल कपाड़िया

एजेंसी

कान्स (फ्रांस)। दुनिया के मशहूर और प्रतिष्ठित फिल्म उत्सव 78वें कान्स फिल्म फेस्टिवल का आगाज हो गया। इसका समापन 24 मई को होगा। फेस्टिवल के पहले दिन 13 मई को अभिनेत्री उर्वशी रौतेला ने दुनियाभर की जानी-मानी हस्तियों के साथ रेड कार्पेट पर शिरकत की। इस दौरान उनके साथ नजर आया उनका खास पैरेट क्लच। इसने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। उर्वशी ने मल्टीकलर गाउन, डायमंड क्राउन और क्रिस्टल पैरेट क्लच के साथ अपनी शानदार एंट्री दर्ज कराई। उन्होंने जूडिथ लीबर का लगभग पांच हजार डॉलर (करीब 4.2 लाख रुपये) की कीमत वाला पैरेट क्लच कैरी किया। भारतीय फिल्म मेकर पायल कपाड़िया भी इस साल कान्स फिल्म फेस्टिवल की ज्यूरी का हिस्सा बनी हैं। उनकी फिल्म 'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' ने पिछले साल कान्स में ग्रैंड प्रिक्स अवॉर्ड जीतकर देश का नाम रोशन किया था। इस साल कान्स फिल्म फेस्टिवल में पायल कपाड़िया ज्यूरी मेंबर के तौर पर शामिल हुईं। फेस्टिवल के पहले दिन पायल को अपने साथी ज्यूरी मेंबर्स के साथ देखा गया। इस बार ज्यूरी पैनल में कई दिग्गज शख्सियत शामिल हैं, जिनमें फ्रेंच एक्टर जूलिएट बिनोश, अभिनेत्री और निर्देशक हाल्ले बेरी, इटालियन एक्टर अल्बा रोरवाकर, राइटर लीला स्लिमानी, डायरेक्टर होंग सैंग सू, डायरेक्टर-राइटर ड्यूडो हमादी, डायरेक्टर-राइटर कार्लोस रेगाडाज और अमेरिकन एक्टर जेरेमी स्ट्रॉन्ग का नाम शामिल है। कान्स फिल्म फेस्टिवल के पहले दिन 'टाइटैनिक' फेम अभिनेता लियोनार्डो डिकैप्रियो ने पाम डिओर अवॉर्ड प्रेजेंट किया। हालांकि, वह रेड कार्पेट पर नजर नहीं आए। जैसे ही वह अवॉर्ड देने मंच पर पहुंचे तो दर्शकों ने उन्हें स्टैंडिंग ओवेशन देकर जोरदार स्वागत किया। लियोनार्डो की मौजूदगी ने समारोह के पहले दिन के माहौल को और भी खास बना दिया। लियोनार्डो डिकैप्रियो ने सीनियर हॉलीवुड एक्टर रॉबर्ट डी नीरो को पाम डिओर अवॉर्ड देते हुए उन्हें अपना रोल मॉडल बताया। अवॉर्ड मिलने के बाद डी नीरो ने कान्स फेस्टिवल का आभार जताया, लेकिन मंच से अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के फैसले पर नाराजगी जाहिर की। डी नीरो ने कहा, कला सच्चाई है, कला विविधता को अपनाती है और यही वजह है कि कला तानाशाहों के लिए हमेशा खतरा बनती है। अमेरिका के असभ्य राष्ट्रपति ने खुद को देश के प्रमुख सांस्कृतिक संस्थानों का प्रमुख बना लिया है। उन्होंने कला, मानवता और शिक्षा के लिए फंड में कटौती की है। अब वह अमेरिका से बाहर बनी फिल्मों पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाने की बात कर रहे हैं। लेकिन आप कनेक्टिविटी पर कोई टैक्स नहीं लगा सकते। उनकी इस बेबाक स्पीच ने फेस्टिवल में खूब सुर्खियां बटोरीं। इस साल कान्स फिल्म फेस्टिवल में भारतीय सिनेमा की दमदार मौजूदगी देखने को मिलेगी। ईशान खट्टर, जान्हवी कपूर और विशाल जेठवा अपनी फिल्म 'होमबाउंड' को फेस्टिवल में पेश करेंगे। इस फिल्म का वर्ल्ड प्रीमियर 'अन सर्टेन रिगार्ड' सेक्शन में होगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ये तीनों कलाकार रेड कार्पेट पर भी शिरकत करेंगे। इसके अलावा, डायरेक्टर नीरज घायवान और फिल्ममेकर करण जौहर भी इस बार फेस्टिवल में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। कान्स 2025 में भारतीय फिल्मों की शानदार मौजूदगी भारतीय सिनेमा की ताकत को एक बार फिर से वैश्विक मंच पर उजागर कर रही है। 'होमबाउंड', 'तन्वी द ग्रेट' जैसे उभरते प्रोजेक्ट्स से लेकर सत्यजीत रे की कालजयी कृति 'अरण्येर दिन रात्री' तक भारत इस बार कान्स में अपनी धाक जमा रहा है। इन फिल्मों के चयन ने भारतीय सिनेमा को वैश्विक पहचान दिलाई है।

बांग्लादेश में आवामी लीग पर प्रतिबंध को लेकर भारत ने जताई चिंता

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत ने बांग्लादेश में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और राजनीतिक दलों के लिए घटती स्वतंत्रता पर गहरी चिंता व्यक्त की है। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग पर प्रतिबंध लगाए जाने पर भारत ने प्रतिक्रिया देते हुए पड़ोसी देश में शीघ्र निष्पक्ष और समावेशी चुनाव कराए जाने की आवश्यकता पर बल दिया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने आज साप्ताहिक पत्रकार वार्ता में कहा कि बिना उचित प्रक्रिया के अवामी लीग पर प्रतिबंध चिंता का विषय है। एक लोकतंत्र के रूप में भारत, लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के हनन और राजनीतिक क्षेत्र के सिकुड़ने को लेकर स्वाभाविक रूप से चिंतित है। हम बांग्लादेश में शीघ्र, निष्पक्ष और समावेशी चुनाव का मजबूती से समर्थन करते हैं। उल्लेखनीय है कि मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने आधिकारिक रूप से देश की सबसे पुरानी और अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के नेतृत्व वाली पूर्व सत्तारूढ़ पार्टी अवामी लीग को प्रतिबंधित कर दिया है।

विश्व समुदाय भारत और पाक को एक दृष्टि से नहीं देखता, आतंक का भारत शिकार और पाक प्रायोजक

नई दिल्ली। विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने भारत और पाकिस्तान को एक ही पलड़े पर नहीं तोला, बल्कि आतंकवाद के शिकार भारत और प्रयोजक पाकिस्तान के बीच साफ अंतर किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने साप्ताहिक पत्रकार वार्ता में कहा कि कुछ पक्षों की यह धारणा गलत है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प सहित विश्व नेताओं ने भारत और पाकिस्तान को एक ही पलड़े पर तौला अथवा एक साथ जोड़कर देखा। वास्तविकता इससे उलट है। पहलगाम आतंकी हमले के तुरंत बाद विश्व नेताओं ने इस घटना की निंदा करने के साथ ही आतंकवाद के शिकार भारत और प्रायोजक पाकिस्तान में साफ अंतर किया। उल्लेखनीय है कि मीडिया, राजनीति और कुटनीतिक हलकों में यह धारणा बनी है कि दशकों बाद विश्व समुदाय भारत और पाकिस्तान को समान स्तर पर आंक रहा है। शांति और सामान्य स्थिति के लिए दोनों देशों से एक जैसी अपील की जा रही है। पाकिस्तान के नेता भी यह दावा कर रहे हैं कि हाल के घटनाक्रम से कश्मीर का मुद्दा फिर केन्द्र में आ गया है।

भाजपा ने पंजाब में जहरीली शराब कांड की सीबीआई जांच की मांग की

नई दिल्ली। पंजाब में जहरीली शराब पीने से हुई मौतों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने घटना की सीबीआई जांच की मांग की है। भाजपा महासचिव तरूण चुघ ने मुख्यालय में मीडिया से कहा कि यह बहुत दुखद घटना है। मन को कष्ट देने वाली घटना है। अमृतसर में जहरीली शराब से एक के बाद एक होती मौतें भगवंत मान सरकार की निकम्मी और जनविरोधी नीतियों का सीधा परिणाम है। पंजाब सरकार गैंगस्टर, जबरन वसूली और हत्या जैसे मुद्दों को सुलझाने के बजाय केजरीवाल पर ध्यान केंद्रित कर रही है। जहरीली शराब पीने से 15 लोगों की मौत हो गई। यह महज मौत नहीं बल्कि नरसंहार है। इसकी सीबीआई जांच होनी चाहिए और जिम्मेदार लोगों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। चुघ ने कहा कि माफिया ज्यादा पैसे कमाने के लिए खतरनाक केमिकल मिलाते हैं। नशे की लत वाले लोग सस्ती शराब पीते हैं, भले ही वह जहरीली हो। शराब घोटाले के किंगपिन केजरीवाल ने पंजाब में कई घरों के चिराग बुझा दिए। दिल्ली शराब घोटाले के सरगना केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने जिस तरह से दिल्ली को बर्बाद करने में और शराब की लत लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, ठीक उसी तरह आम आदमी पार्टी ने पंजाब के युवाओं को भी जहरीली शराब और नशे की गिरफ्त में लाकर बर्बाद करने की ठान ली है। पंजाब को नशा मुक्त करने के बजाय नशे में डुबो दिया है।

एनडीएमसी स्कूलों में शानदार परीक्षा परिणाम, 29 स्कूलों ने हासिल किया 100 प्रतिशत परिणाम

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) के उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल ने अटल आदर्श और नवयुग स्कूलों के छात्रों के बोर्ड परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन पर बधाई दी। उन्होंने कहा, यह हमारे लिए गर्व का क्षण है कि इस वर्ष कक्षा 12 के 7 स्कूलों और कक्षा 10 के 22 स्कूलों ने सौ प्रतिशत परिणाम प्राप्त किया है। यह उपलब्धि छात्रों, शिक्षकों और शिक्षा विभाग की कड़ी मेहनत का प्रमाण है। चहल ने प्रधानमंत्री द्वारा 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम में छात्रों की सक्रिय भागीदारी की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के समय-समय पर प्रेरक संवाद और मार्गदर्शन ने छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाया

तिरंगा यात्रा का आगाज, भाजपा कार्यकर्ताओं ने सैनिकों के सम्मान में निकाली विशाल रैली

एजेंसी

नई दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर और सैनिकों के सम्मान में भारतीय जनता पार्टी ने तिरंगा यात्रा अभियान की शुरुआत की। सामाजिक संस्था सिटीजन फार नेशनल सिक्योरिटी द्वारा कर्तव्य पथ से नेशनल वार मैमोरियल तक निकाली गई तिरंगा यात्रा में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं सहित दिल्ली के हजारों लोग शामिल हुए। इस मौके पर राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ ने कहा कि आज का भारत बदल चुका है। यह नया भारत शांति चाहता है, पर आतंक के समूल विनाश के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तत्पर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने स्पष्ट कर दिया है कि अब भारत किसी प्रकार के न्यूक्लियर धमकी को बर्दाश्त नहीं करेगा। आतंकवाद और वार्ता साथ साथ नहीं चल सकते। टेरर और ट्रेड का पाखंड अब नहीं चलेगा। जब-जब खून बहेगा, पानी का रास्ता बंद होगा। ऑपरेशन सिन्दूर स्थगित है, पर

समाप्त नहीं। पाकिस्तान से बात होगी तो अब सिर्फ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर ही होगी या आतंक के समूल नाश पर। मोदी के नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान की सीमा में घुसकर जैश, लश्कर और हिज़बुल जैसे वैश्विक आतंक के अड्डों को ध्वस्त किया है। तिरंगा सिर्फ एक झंडा नहीं, यह राष्ट्र की आत्मा है और उस आत्मा का नेतृत्व प्रधानमंत्री मोदी कर रहे हैं। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि इस तिरंगा यात्रा से दिल्ली वालों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर प्रहार का समर्थन किया है। यह यात्रा उद्घोष है कि हमारे वीर जवानों ने सीमा पर जिस प्रकार की बहादुरी दिखाई है। सेना ने पाकिस्तान में कड़ा संदेश देने का काम किया है कि भारत अब आतंक के खिलाफ चुप नहीं बैठने वाला है। भारत मुंह तोड़ जवाब देगा।

दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि देश अभी भूला नही है कि अरविंद केजरीवाल ने 2016 में सेना से पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांग कर पाकिस्तान सरकार का मनोबल बढ़ाया था। आज फिर इन्ही केजरीवाल की पार्टी के वरिष्ठ नेता सरकार द्वारा सीजफायर को स्वीकार करने पर सवाल खड़े कर रहे हैं। आम आदमी पार्टी असल में पाकिस्तान के दृष्टिकोण से केन्द्र सरकार से सवाल पूछ कर देश के अंदर कट्टरपंथी मुसलमानों का राजनीतिक समर्थन बटोरने की कोशिश कर रहे हैं।

असम के पंचायत चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की जीत पर भाजपा ने जताया जनता का आभार

एजेंसी

नई दिल्ली। असम पंचायत चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग)की ऐतिहासिक जीत हासिल हुई है। इस विजय पर भारतीय जनता पार्टी ने असम की जनता का आभार जताया है। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने एक्स पर अपने संदेश में कहा कि यह जनादेश विकासोन्मुखी नीतियों में लोगों के विश्वास और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में असम में हो रही उल्लेखनीय प्रगति का प्रमाण है।

उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष दिलीप सैकिया और सभी समर्पित भाजपा कार्यकर्ताओं को इस जीत को हासिल करने में उनके असाधारण योगदान के लिए बधाई दी। इससे पहले असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में लिखा कि राजग ने 'जिला परिषद' चुनावों में 76.22 फीसदी मतदान प्रतिशत के

साथ 397 सीटों में से 300 सीटें जीतीं हैं, जबकि 'आंचलिक पंचायत' चुनावों में सत्तारूढ़ गठबंधन को 66 फीसदी वोट प्रतिशत के साथ 2,192 सीटें में से 1436 सीटें हासिल हुईं।

प्रधानमंत्री मोदी ने टीबी उन्मूलन अभियान पर बैठक की अध्यक्षता की

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तपेदिक (टीबी) उन्मूलन अभियान की प्रगति की समीक्षा के लिए एक बैठक की अध्यक्षता की। भारत ने इस वर्ष के अंत तक भारत को क्षय रोग (टी.बी.) से पूरी तरह मुक्त करने का लक्ष्य रखा है। प्रधानमंत्री मोदी ने बैठक की तस्वीर एक्स पर साझा करते हुए लिखा, ÷टीबी उन्मूलन के लिए भारत के मिशन पर एक बैठक की अध्यक्षता की। सक्रिय जन भागीदारी से प्रेरित होकर, इस आंदोलन ने पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है। हमारी सरकार टीबी मुक्त भारत के सपने को साकार करने के लिए सभी हितधारकों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बैठक में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा, स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव और प्रधानमंत्री कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने अपने राष्ट्रीय तपेदिक उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के

तहत टीबी से निपटने के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियां बनाई हैं। इन पहलों का उद्देश्य निदान, उपचार और रोकथाम के प्रयासों को बढ़ाना है, जिससे टीबी मुक्त भारत की दिशा में प्रगति हो सके। सरकार ने निर्धारित वैश्विक लक्ष्य 2030 से पांच साल पहले ही टीबी उन्मूलन का लक्ष्य रखा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की वैश्विक टीबी रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिसका प्रमाण 2015 से 2023 तक टीबी के मामलों में लगभग 17.7 प्रतिशत की कमी है। टीबी से संबंधित मृत्यु दर में भी कमी आई है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का प्रतिनिधिमंडल धर्मेंद्र प्रधान से मिला

एजेंसी

नई दिल्ली। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मुलाकात की। यह भेंट न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. पंकज मित्तल एवं राष्ट्रीय सचिव डॉ अतुल कोठारी के सान्निध्य में हुई।

बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के प्रभावी क्रियान्वयन, भारतीय ज्ञान परंपरा का पाठ्यक्रमों में समावेश, भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा, तथा परीक्षा एवं मूल्यांकन पद्धतियों में सुधार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन व सकारात्मक चर्चा हुई। शिक्षा मंत्री प्रधान ने न्यास द्वारा शिक्षा क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की एवं इसे शिक्षा के भारतीयकरण की दिशा में एक प्रेरणादायी प्रयास बताया।प्रतिनिधिमंडल ने इस दौरान मंत्री के समक्ष फ़रवरी में प्रयागराज में आयोजित किए गए ज्ञान महाकुंभ की जानकारी भी साझा की। मंत्री ने इन प्रयासों को नई पीढ़ी को भारतीय

दृष्टिकोण से जोड़ने की दिशा में उपयोगी बताया। इस अवसर पर राष्ट्रीय संयोजक ए. विनोद, भारतीय भाषा मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राजेश्वर पराशर, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुरेश गुप्ता, उत्तर क्षेत्र संयोजक जगराम, पर्यावरण विषय के राष्ट्रीय संयोजक संजय स्वामी एवं तकनीकी शिक्षा के राष्ट्रीय सह संयोजक प्रो. प्रदीप गोयल भी उपस्थित रहे। प्रतिनिधिमंडल ने शिक्षा के भारतीयकरण की दिशा में निरंतर सहयोग, संवाद और नीति-निर्माताओं के साथ समन्वय बनाए रखने की प्रतिबद्धता दोहराई।

भारत में मातृ मृत्यु अनुपात में उल्लेखनीय है सुधार, 2019-21 में एमएमआर में घटकर प्रति लाख जीवित जन्मों पर 93 हुई

नई दिल्ली। भारत के महापंजीयक (आरजीआई) के नमूना पंजीकरण प्रणाली (एसआरएस) रिपोर्ट 2021 के अनुसार, भारत में प्रमुख मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में उल्लेखनीय सुधार हो रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त कार्यालय नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत में मातृ मृत्यु अनुपात (एमएमआर) 2019-21 में घटकर प्रति लाख जीवित जन्मों पर 93 हो गई, जो 2018-20 में 97 और 2017-2019 में 103 थी। वही 2021 में शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 बच्चों में 31 हो गई है। जबकि यह संख्या 2014 में प्रति 1000 जन्म पर 45 बच्चे थी। कुल प्रजनन दर 2021 में 2.0 पर स्थिर है, जो 2014 में 2.3 थी। आठ राज्य पहले ही मातृ मृत्यु अनुपात का एसडीजी लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं जिसमें केरल (20), महाराष्ट्र (38), तेलंगाना (45), आंध्र प्रदेश (46), तमिलनाडु (49), झारखंड (51), गुजरात (53), कर्नाटक (63) शामिल हैं। 2030 तक इसके साथ बारह राज्य/केंद्र शासित प्रदेश पहले ही यूएमआर (2030 तक <=25) का एसडीजी लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं जिसमें केरल (8), दिल्ली (14), तमिलनाडु (14), जम्मू और कश्मीर (16), महाराष्ट्र (16), पश्चिम बंगाल (20), कर्नाटक (21), पंजाब (22), तेलंगाना (22), हिमाचल प्रदेश (23), आंध्र प्रदेश (24) और गुजरात (24) शामिल है। छह राज्य/केंद्र शासित प्रदेश पहले ही एनएमआर का एसडीजी लक्ष्य (वर्ष 2030 तक मृत्यु की संख्या 12) प्राप्त कर चुके हैं केरल (4), दिल्ली (8), तमिलनाडु (9), महाराष्ट्र (11), जम्मू और कश्मीर (12) और हिमाचल प्रदेश (12)। 07 अप्रैल 2025 को प्रकाशित वर्तमान संयुक्त राष्ट्र मातृ मृत्यु दर अनुमान अंतर-एजेंसी समूह (यूएन-एमएमईआईजी) रिपोर्ट 2000-2023 के अनुसार, भारत की एमएमआर 2020 से 2023 तक में 23 अंकों की कमी आई है। इस उपलब्धि से, 1990 से 2023 तक पिछले 33 वर्षों में 48 प्रतिशत की वैश्विक कमी की तुलना में भारत की एमएमआर में अब 86 प्रतिशत की कमी आई है। भारत बाल मृत्यु दर में कमी लाने वाले शीर्ष प्रदर्शन करने वाले देशों में से एक है।

NAME CHANGE
I, RAJNISH KUMAR S/O GOPAL CHANDRA GHOSE R/O H.No- I-1125, Gali No- 28, Hari Nagar Extn., VTC-Jaitpur, PO- Badarpur, New Delhi-110044, have changed the name of my minor Son NISHANT KUMAR GHOSH alias NEEL NISHANT, aged 13 years and he shall hereafter be known as NEEL NISHANT.

PUBLIC NOTICE
I, RAJENDRA JAISWAL S/O SHRI SHIV NATH R/O H.No- 508, Block-06, 3rd Floor, Dakshinpuri Ext., Ambedkar Nagar, New Delhi -62, declare that name of mine, my wife and my minor Son have been wrongly written as RAJINDER, ROLI and SHIVAM in my minor son namely SHIVAM JAISWAL, aged 14 year in his School Records. The actual name of mine, my wife and my minor Son are RAJENDRA JAISWAL, ROLI JAISWAL and SHIVAM JAISWAL.

PUBLIC NOTICE
I, RAJENDRA JAISWAL S/O SHRI SHIV NATH R/O H.No- 508, Block-06, 3rd Floor, Dakshinpuri Ext, Ambedkar Nagar, New Delhi -62, declare that name of mine, my wife and my minor Son have been wrongly written as RAJINDER, ROLI and AHEM in my minor son AHEM JAISWAL, aged 12 year in his School Records. The actual name of mine, my wife and my minor Son are RAJENDRA JAISWAL, ROLI JAISWAL and AHEM JAISWAL

PUBLIC NOTICE
The general public is hereby informed my client Gauri Devi W/o Late Sh. Kailash Prasad Sahoo, R/o, H. No. F-3/696, Gali No. 8, Sangam Vihar, New Delhi-110062, has debarred/disowned their Son Dalip Kumar Sahoo and Daughter-in-law Puja Kumari from all their moveable and immoveable properties due to their misbehavior and disobedient attitude towards our clients. Now my client have no relation / connection with them, in future, my client shall not be responsible for their acts, deeds, things etc. if in future anybody dealing with them shall do so at his own risk and responsibility and my client shall not be held liable for the same.
Raj Kumar Baudh Advocate
Ch. No. 541,
Lawyer Block, Saket Courts,
Saket, New Delhi-110017

PUBLIC NOTICE
Be it known to all concerned that our client Sh. Chander Singh Rawat and his wife Smt. Jeevanti Devi R/o H-N0.A-277 Durga Enclave, Gali Number -6, Sehat Pur, Vistar, Tilpat, Amarnagar, Faridabad, Haryana-121003 have severed all relations with their son named Jaman Singh and his wife named Sunita and disowned and disinherited them from all their moveable and immovable properties as they have been doing bad behavior and become quarrelsome and disrespectful to our clients and have been acting against their interests. Anybody dealing with them shall do so at his/her own risk and cost.
SHAINKI KUMAR (Advocate)

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I,Suman Prajapati, W/O Shri Ram, R/O .A-15, Gali No.1, Ramesh Enclave, Kriari Suleman Nagar, Delhi-86,declare that name of mine has been wrongly written as SUMAN in my minor daughter namely Purvi aged 10 years in her school records. The actual name of mine is Suman Prajapati

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mrs. Manju Gupta, Mr. Varun Gupta & Mr. Lakshay Gupta is the owner of Freehold Residential Built-up property bearing no. J&K-8-A area admeasuring 50 sq. yds (41.80 sq. mtrs) out of Khasra/Rectangle no.63, Killa no.24, situated in the abadi of J&K Block, Laxmi Nagar, Village- Khureji Khas, Illaqa-Shahdara, Delhi-110092. by virtue of Relinquishment Deed dated 19.02.2025 which is duly registered at the office of Sub-Registrar- East Preet Vihar Delhi, as Document no.2025/5/I/1444 in Book no.1 Volume no.4113 on Pages.81 to 92 dated 19.02.2025., now our client is declaring that that any other person does not have any right over the said property, and Built on Ground Floor without roof rights which is to be sold to Mrs. Soni Vijay and same has been financed by Piramal Capital & Housing Finance Ltd Branch: Noida, Sector-2 U.P. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE
I, BHAWANA RAWAT/BHAWANA NEGI W/O RAHUL NEGI R/O 1246, GROUND FLOOR, SECTOR-52, WAZIRABAD(75), GURGAON, HARYANA-122003, HAVE CHANGED MY NAME TO BHAWANA FOR ALL FUTURE PURPOSE.

NAME CHANGE
I, SHANTI DEVI Mother of No-4579187K, Rank-HAV, Name-MANDEEP residing at VPO-MATLODA, TEHSIL-BARWALA, DISTT-HISAR, HARYANA-125121 have changed my name from Shanti Devi to Shanti vide affidavit dated 02.04.2025 executed before Notary Public, New Delhi.

NAME CHANGE
I hitherto known as PREM SINGH S/O MUNSHI R/O 207, VILLAGE DUJANA, CHHAPRAULA, GAUTAM BUDDHA NAGAR, UTTAR PRADESH-201009 have changed my name and shall hereafter be known as PEM SINGH.

NAME CHANGE
I SHRUTI D/O KHIMMI R/O HOUSE NO-8 RAM NAGAR EXTESION KRISHNA NAGAR DELHI 110051 HAVE CHANGED MY NAME TO SHRUTI RAJPOOT

NAME CHANGE
I Tina D/o Shankar R/o 86, First Floor, Rani Garden, Shastri Nagar, East Delhi, P.O. Gandhi Nagar, Delhi-110003 have changed my name to TINA ROY for all future purposes.

NAME CHANGE
I, No.4575991F Rank-HAV Name: YogRaj is legally father of Lalita Kumari residing at Vill. Dogri, PO-Kharga, Tehsil-Nirmand, Kullu, Himachal Pradesh-172001 have changed my minor daughter name from Lalita Kumari to Lalita Thakur as per affidavit dated 28.03.2024 executed before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, Kamble Tukaram Kallappa is legally Mother of No.4583915K, Rank-NK-Name: Kamble Sachin Tukaram presently residing at VPO-Kalkundri, The-ChandGad, District.Kolhapur, Maharashtra-416508 have changed my name from Kamble Tukaram Kallapa to Tukaram Kallapa Kamble vide affidavit dated 21.04.2025, executed before Notary Public, Delhi

NAME CHANGE
I, JC-561309P Rank-SUB MAJ Name-KAMLESH KUWAR residing at VILL-MADHUBANI TOLE, PO-PARIHAR PUR, PS-RAJNAGAR, TEHSIL & DIST-MADHUBANI, BIHAR-847235, have changed my name from KAMLESH KUWAR to KAMLESH KUNWAR for all future purposes vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, No-14651753H Rank-HAV Name-KAUSHLENDRA KUMAR SINGH Presently residing at VILL-MIRGANJ, PO-BHORE, TEH+DIST-GAYA, BIHAR-823003, have changed my father's name from NAWAL KISHORE SINHG to NAVAL KISHOR SINGH for all future purposes vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, Kamble Sushila Tukaram is legally Mother of No.4583915K, Rank-NK-Name: Kamble Sachin Tukaram presently residing at VPO-Kalkundri, The-ChandGad, District.Kolhapur, Maharashtra-416508 have changed my name fromKamble Sushila Tukaram to Sushila Tukaram Kamble vide affidavit dated 21.04.2025, executed before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
L Daropati Devi Mother of No, 4589412P Rank NK Name Pintu Gurjar R/o Vill- Jhadisha, PO-Jhadisha Distt Karauli, Rajasthan-321611 have changed my name from Dropti Devi to Daropati Devi vide affidavit dated 08.04.2025 executed before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mrs. Shashi Dua W/o Mr. Rakesh Kumar alias Rakesh Kumar Dua is the owner of Freehold Residential Entire Second Floor, North Face, area measuring 75 Sq. Yds., Built on Property Bearing No. 86-A (86-A/2 New), out of Khasra No. 459/7/3 & 459/7/7, situated in the Revenue Estate of Village Humayunpur, Colony known as Krishna Nagar, New Delhi-110029. by virtue of Gift Deed Dated 20.02.2025 as Doc. No. 2025/8/I/1004, in Book No. 1, Vol. No. 3522, on Pages 155-172, on Dated 20.02.2025, SR- New Delhi Sarojini Nagar., in the Chain Documents Below mentioned Document not available i.e. Probate Order of Will Dated 13.12.1999, now our client is declaring that that any other person does not have any right over the said property, and the said property which is to be sold to Mrs. Neha Singh W/o Mr. Harpal Singh and same has been financed by Piramal Capital & Housing Finance Ltd Branch: Gurgaon Haryana. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE
I GURDEEP SINGH S/O NIRVAIR SINGH SAHNI R/O 2507 PUNJABI BASTI SABZI MANDI MALKA GANJ NORTH DELHI 110007 HAVE CHANGED MY NAME TO GURDEEP SINGH SAHNI

NAME CHANGE
I, RANBIR KUMAR BHOLA S/O MANAK CHAND BHOLA R/O C-34, GF, MAYFIELD GARDEN, SECTOR-50, GURGAON, HARYANA-122001 HAVE CHANGED MY NAME TO RANBIR BHOLA FOR ALL FUTURE PURPOSE

NAME CHANGE
I, Seema Yadav is legally wedded Spouse of No.4581584P, Rank-L/NK Name: Jagdish Yadav residing at Vill:Dullhapur, Baburipur, PO-Paliyagolpur, Distt: Sultanpur, Uttar Pradesh-228131 have changed my name from Sheema Yadav to Seema Yadav vide affidavit dated 10.05.2025 executed before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, POOJA S Wife of 4583342L Nk Suresh S permanently residing at Village-Athdrathan Post - Paiyur Tehsil - Krishnagiri District - Krishnagiri State: Tamil Nadu, PIN- 635112 and presently in Delhi have changed my name from Pooja S to Pooja G vide affidavit dated 13.05.2025 executed before Notary Public, New Delhi.

NAME CHANGE
I, MANOJ KUMAR/MANOJ MITTAL S/O RAM KUMAR R/O HOUSE NO-202, SWARN JYANTI APP., PLOT NO-97, SECTOR-54, GURGAON, HARYANA-122011, HAVE CHANGED MY NAME TO MANOJ KUMAR MITTAL FOR ALL FUTURE PURPOSE.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Hasmat Ali S/O Rehmtulla R/O 27, Ekta Vihar, RK Purm, Sec 6, South West Delhi, Delhi-110022 declare that name of my minor son has been wrongly written as Arsh in my minor son namely Arsh Ali aged 12 years in his school record. The actual name of my minor son is Arsh Ali which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Vinay Jaiswal S/O Chandeshwar Chaudhary R/OC-1002, 10th Floor, Tower C INDOSAM 75, Plot No. GH-05, Eco City, J M Aroma,Sector 75, Noida,Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh-201301, Have changed my name to Vinay Kumar for all future purposes.

NAME CHANGE
I, No. 15337550L Rank-HAV Name-ANIMESH KUMAR Father of ANUSHAKA PANDEY Residing at H. NO. 20, SARASWATI COLONY, GALI NO-10, PO-SOGRIYA, TEHSIL-LADPURA, DISTT-KOTA, RAJASTHAN-324002, have changed my daughter's name from ANUSHAKA PANDEY to ANUSHKA PANDEY for all future purposes vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, No. 15337550L Rank-HAV Name-ANIMESH KUMAR Residing at H. NO. 20, SARASWATI COLONY, GALI NO-10, PO-SOGRIYA, TEHSIL-LADPURA, DISTT-KOTA, RAJASTHAN-324002, have changed my mother's name from SHARDA DEVI to SHARADHA DEVI for all future purposes and in my service records my mother's date of birth wrongly mentioned as 01/07/1955 instead of her correct date of birth as 01/02/1940 vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, RUKHSANA BEGUM W/O FAHEEM PARVEZ R/O 26, GALI NO-21, ZAKIR NAGAR, JAMIA NAGAR, NEW FRIENDS COLONY, DELHI – 110025, I have changed my name from RUKSANA TO RUKHSANA BEGUM for all future purpose.

NAME CHANGE
I, Vibhu Kaushal Sharma D/O Aditya Dev Kaushal W/O Sunil Kumar Sharma R/O A-156, Sector-48 Noida, Gautam Budha Nagar, Uttar Pradesh 201301 Have changed my name from Vibhu Kaushal Sharma to Vibhu Kaushal. Henceforth I would be known by the name of Vibhu Kaushal for all future purposes.

NAME CHANGE
I, PIUSH Wife of No. 15812389Y Rank-NK Name-RANJEET SINGH Presently residing at VPO-PARSAGARH BAZAR, TEH-EKMA, DIST-CHAPRA (SARAN), BIHAR-841220, have changed my name from PIUSH to PIUSH DEVI for all future purposes vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, Karan Thapa S/o Man Bahadur residing at House No.135-C, Second Floor, Back Portion Humayunpur, Safdarjung Enclave, Safdarjung Enclave , PO Safdarjung Enclave, Dist, South West Delhi, Delhi-110029 have changed the name of my minor son Mohammed Amaan Nael alias Aman Thapa aged 15 years and he shall hereafter be known as Aman Thapa

NAME CHANGE
I hitherto known as Pushpa D/o Suraj Bhan Saini R/o D-155, Aman Vihar, Kirari Suleman Nagar, Nithari, Sultanpuri C Block, North West Delhi, Delhi-110086 have changed my name and shall hereafter be known as Pihu Saini.

NAME CHANGE
I, No. 15337550L Rank-HAV Name-ANIMESH KUMAR Father of AARUSH PANDEY Residing at H. NO. 20, SARASWATI COLONY, GALI NO-10, PO-SOGRIYA, TEHSIL-LADPURA, DISTT-KOTA, RAJASTHAN-324002, have changed my son's name from AARUSH PANDEY to ARUSH PANDEY for all future purposes vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, No. 15329092L Rank-NK Name-SANTHOSH KUMAR V V Residing at HOUSE: VADAKKEVELI, VIL-KANNIKUZHI, PO-MAYITHRA MARKET, TEH-CHERTHALA, DISTT-ALAPPUZHA, KERALA-688539, have changed my father's name from V VISWANATHAN PILLAI to VISWANATHA PILLAI for all future purposes and in my service records my father's date of birth wrongly mentioned as 01/07/1948 instead of his correct date of birth as 10/08/1947 vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, ZAMIR S/O MUNNA residing at F-169, GALI NO-22, BALJEET NAGAR, PATEL NAGAR, DELHI-110008. have changed my name to MD ZAMEER for all future purposes.

NAME CHANGE
I, FAHEEM PARVEZ S/O S. ZAMAN R/O 26, GALI NO-21, ZAKIR NAGAR, JAMIA NAGAR, NEW FRIENDS COLONY, DELHI – 110025, I have changed my name from FAHIM PARVEZ TO FAHEEM PARVEZ for all future purpose

NAME CHANGE
I, No-14445862P Rank-HAV Name-DAMOR MUKESH BHAI PRATAP BHAI residing at VPO-BHOJELA, TEHSIL-FATEPURA, DIST-DAHOD, GUJARAT-389190, have changed my son's name from CHIRAG KUMAR to DAMOR CHIRAGKUMAR MUKESHBHAI for all future purposes vide Affidavit dated 14/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NOTICE
Public at large is hereby informed that Smt. Raj Rani is the owner of the House No. 407, area measuring 75 sq. yds., situated in colony 4 Marla, Gurgaon, Tehsil and Distt. Gurgaon. Initially, Sale Deed dated 18/08/1958 executed by Sh. Atma Ram in favour of Sh. Udhodash in respect of the said property. (Doc no. 428), who expired leaving behind legal heirs namely Smt. Raj Rani, Hunny, Sunny, Rakhi, Milnakshi, Thereafter, Suit for Declaration with Regd. Decree, case no. 57 of 01/12/2014, CS/31474/2014, date of decision 13/05/2015 in the court of civil judge (senior division), Gurgaon, titled as Smt. Raj Rani (Plaintiff) Vs. Hunny, Sunny, Rakhi, Milnakshi (Defendant) in respect of House No. 407, area measuring 110 sq.yds. passed in favour of Smt. Raj Rani (Plaintiff). As doc no. 4238, dated 22/05/2015 who intends to sell the abovemention property in favour of Intended Borrower who intends to mortgage the said property with Bandhan Bank Ltd. Whosoever, is having any objection to the said mortgage or anyone has claim or right or interest in the property shall contact the undersigned with the objection within 07 days failing which it shall be presumed that there stands no objections.
NEW DELHI
DATE: 14/5/2025
PRAGYA BHUSHAN ADVOCATE
Enrl. No. D/721/02
Office: L-27,GF, Kailash Colony, New Delhi-48
Mob.: 9968006418

हरियाणा शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा की परीक्षाओं में इस बार भी फिसड्डी रहा नूंह

नूंह। हरियाणा शिक्षा बोर्ड की ओर से 12 वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया है। जिसमें नूंह जिले का रिजल्ट बेहद खराब रहा। नूंह जिले का परीक्षा परिणाम इस वर्ष 45.76 प्रतिशत रहा, जबकि पिछले वर्ष यह परिणाम 56.83 प्रतिशत था। इस बार रिजल्ट में 11 प्रतिशत की गिरावट आना जिले में नकल पर रोक लगना माना जा रहा है। जिला शिक्षा अधिकारी अजीत सिंह ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा के जिला नूंह के स्कूलों के परीक्षा परिणाम के बारे में पत्रकारों को जानकारी देते हुए बताया कि जिला नूंह का परीक्षा परिणाम 45.76 प्रतिशत रहा। इस परीक्षा में जिला के सभी स्कूलों के 7 हजार 588 विद्यार्थी बैठे थे, जिसमें से 3 हजार 472 विद्यार्थी पास हुए और एक हजार 758 विद्यार्थियों की कंपार्टमेंट आई। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन ने इस बार निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन करना सुनिश्चित किया था। बोर्ड परीक्षाओं में सख्ती के साथ नकल रहित परीक्षाएं करवाने में प्रशासन ने काफी सक्रियता के साथ कार्य किया गया था। अब जो परिणाम आया है, वह ईमानदारी के साथ मेहनत करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा है। भविष्य में विद्यार्थियों को और मेहनत करनी होगी और नकल जैसी प्रवृति से बचना होगा।

गुरुग्राम से अवैध नशीले पदार्थ की तस्करी करते दो नशा तस्कर किए काबू

गुरुग्राम। हरियाणा एनसीबी ब्यूरो की गुरुग्राम यूनिट ने सेक्टर-5 थाना एरिया में रेलवे रोड से अवैध नशीले पदार्थ के कारोबार में लिप्त दो नशा तस्करों को तस्करी में इस्तेमाल मोटरसाइकिल सहित गिरफ्तार किया। हरियाणा एनसीबी गुरुग्राम यूनिट के इंचार्ज निरीक्षक धरमबीर सिंह ने बताया कि सहायक उपनिरिक्षक अजय अपनी टीम के साथ थाना सेक्टर-5 गुरुग्राम के एरिया में मौजूद थे। तभी गुप्त सूचना मिली कि दो नशा तस्कर अपनी मोटरसाइकिल पर अवैध नशीले पदार्थ लेकर रेलवे रोड गुरुग्राम से होते हुए तस्करी करने जा रहे है। इस सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने रेलवे रोड पर नाका लगाकर आरोपियों को मोटरसाइकिल सहित काबू किया। आरोपियों की पहचान लखन उर्फ लकी पुत्र हिम्मत और अभिषेक पुत्र सुनील के रूप मे हुई। दोनों आरोपी राजेन्द्र पार्क गुरुग्राम के रहने वाले है। राजपत्रित अधिकारी को मोके पर बुलाकर तलाशी ली गई तो आरोपियों के पास से 1.146 किलोग्राम अवैध नशीला पदार्थ गांजा बरामद हुआ। पुलिस प्रवक्ता संदीप कुमार ने बताया कि नशे के व्यापार में शामिल अन्य आरोपियों को भी जल्द से जल्द गिरफ्तार करने का प्रयास किया जा रहा है। आरोपियों पर थाना सेक्टर-5 में एन.डी.पी.एस. अधिनियम कि विभिन्न धाराओं में माध्यमिक मात्रा का मुकदमा दर्ज आगामी कार्यवाही शुरू कर दी है।

सीजेएम ने नशा मुक्ति केंद्र का दौरा किया

सेफ हाउस तथा वन स्टॉप सेंटर का भी किया दौरा

एजेंसी

नारनौल। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी संजीव काजला ने आज नागरिक अस्पताल में स्थित नशा मुक्ति केंद्र का निरीक्षण किया। इसके अलावा उन्होंने पुलिस लाइन में बने सेफ हाउस तथा वन स्टॉप सेंटर का भी दौरा किया। सीजेएम संजीव काजला ने निरीक्षण के दौरान नशा मुक्ति केंद्र में मौजूद मरीजों से हाल-चाल जाना। साथ ही उन्होंने नशे से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नशा जीवन को अंधकार की तरफ धकेल देता है। नशे से न सिर्फ स्वास्थ्य खराब होता है, बल्कि समाज में भी सामाजिक प्रतिष्ठा खराब होती है। ऐसे में हमें जीवन में कभी भी नशा नहीं करना चाहिए। इसके बाद उन्होंने पुलिस लाइन में सेफ हाउस व पुराने लघु सचिवालय में भूतल पर स्थित वन स्टॉप सेंटर का निरीक्षण कर साफ सफाई का जायजा लिया।

गौ माता के लिए हरी सब्जी की सवामणी लगाई

नारनौल। इस भीषण गर्मी को देखते हुए रोटरी क्लब नारनौल सिटी द्वारा गौमाता के लिए लगातार सवामणी का आयोजन किया गया। भी रोटरी क्लब के तत्वावधान में विपिन अग्रवाल एवं रोटेरियन विवेक अग्रवाल ने अपने पिता स्वर्गीय चंद्रप्रकाश अग्रवाल की पुण्यतिथि के अवसर पर श्री गोपाल गौशाला में गौ माता के लिए हरी सब्जी की सवामणी लगाई। गौशाला में गौ माता की सेवा करते हुए रोटेरियन विवेक अग्रवाल ने कहा कि हमारे देश में गौमाता को मां का दर्जा देकर उसकी पूजा की जाती है और बेजुबान गौवंश की सेवा को सर्वोपरि बताया गया है। प्रोजेक्ट इंचार्ज कोषाध्यक्ष नवीन गुप्ता ने बताया कि गौवंश की सेवा के लिए रोटरी क्लब नारनौल सिटी द्वारा यह मुहीम चलाई गई है। जिसमें क्लब सदस्यों व अन्य जागरूक लोगों के सहयोग से गौ माता के लिए सवामणी लगाई जाती है, जिससे गौ माता की सेवा में अधिक से अधिक सहयोग किया जा सके। इसलिए हम सभी को अपने जन्मदिन, वैवाहिक वर्ष गांठ इत्यादि विशेष अवसरों पर गौ माता के लिए हरी सब्जी, कड़बी, तूड़ा इत्यादि से सवामणी लगाकर गौमाता की सेवा अवश्य करनी चाहिए। प्रधान विनोद चौधरी ने कहा कि बेजुबान गौवंश की सेवा करने से अधिक पुण्य का कर्म कोई नहीं है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के उद्बोधन ने 140 करोड़ देशवासियों का सर गर्व से ऊंचा कर दिया है : अनिल विज

प्रधानमंत्री मोदी ने देश को बता दिया कि युद्ध विराम उस दिन होगा जब पाकिस्तान के एक-एक आतंक का सफाया कर दिया जाएगा : अनिल विज

एजेंसी

अम्बाला। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कल के उद्बोधन ने 140 करोड़ देशवासियों का सर गर्व से ऊंचा कर दिया है। देश के अंदर और बाहर एक ही बिरादरी के लोग कुछ बोल रहे थे उनके मुंह भी बंद कर दिए हैं। प्रधानमंत्री ने बताया है कि हमारी लड़ाई उग्रवाद के खिलाफ है और आप्रेशन सिंदूर में भी उग्रवाद के अड्?डों व उग्रवादियों के गिरोहों पर ही ध्यान दिया है। उन्होंने यह भी बता दिया है कि जो सीजफायर हुआ है यह युद्ध विराम नहीं है। युद्ध विराम उसी दिन होगा जब पाकिस्तान के एक-एक आतंकवादी का सफाया कर दिया जाएगा। श्री विज आज पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने आरोप

लगाया कि ट्रंप के बयान पर ने पीएम मोदी चुप रहे पर ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जयराम को अपने प्रधानमंत्री ने जो कहा वह तो उन्हें पता नहीं है, ट्रंप क्या बोले यह उन्हें मालूम है। उन्होंने कहा सभी की अपनी-अपनी राजनीति है। इस लड़ाई में हमारा क्या ध्येय था वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को बताया और कल जब प्रधानमंत्री देश को संबोधित कर रहे थे तो शहरों में करफ्यू लग गया था। दुकानों में लोग टीवी के आगे खड़े हो गए थे। लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सुनते हैं किसी और को नहीं सुनते। पीएम नरेंद्र मोदी ने युद्ध की रहनुमाई की, यदि संजय राउत को यह हजम नहीं हो रहा तो वह सबके सामने उल्टी करने के बजाए बाथरूम में जाकर करें : विज शिवसेना-यूबीटी के सांसद संजय राउत के प्रधानमंत्री के खिलाफ दिए गए बयान पर ऊर्जा व परिवहन मंत्री अनिल विज ने पलटवार करते हुए कहा कि ऐसे लोगों का इलाज जनता ही करा करती है। सारा हिंदुस्तान अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है कि जिस प्रकार हमारे नायक नरेंद्र मोदी जी ने इस युद्ध की रहनुमाई की है। मगर कुछ लोग है जिन्हें यह हजम नहीं हो रहा है। यदि हजम नहीं हो रहा तो उल्टी करनी है तो बाथरूम में जाकर करें, लोगों के सामने क्यों करते हो।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता भारतीय सेनाओं की पराक्रम की गाथा: राव नरबीर सिंह

सैन्य कर्मियों व उनके आश्रितों के कल्याण के लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के सैनिक एवं अर्ध-सैनिक कल्याण मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता भारतीय सेनाओं के शौर्य एवं पराक्रम की एक और गाथा है। जिस प्रकार प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने धैर्य के साथ रणनीति बनाकर पहलगाम में नरसंहार करने वाले आतंकवादियों को करारा जवाब देकर एक वैश्विक नेता का परिचय दिया है। वह एक सराहनीय कार्य है।

राव नरबीर सिंह ने कहा कि सैन्य कर्मियों व उनके आश्रितों के कल्याण के लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध है। वर्ष 2016 में अलग से सैनिक एवं अर्ध-सैनिक कल्याण विभाग का गठन किया गया है। इस विभाग में कार्यरत अधिकारियों की सेवानिवृति आयु रक्षा मंत्रालय के दिशा-निर्देशानुसार 58 वर्ष से बढ़ाकर 60 वर्ष किया गया है। उन्होंने कहा कि युद्ध के दौरान व आईईडी ब्लास्ट में मारे गए रक्षा कर्मियों एवं केंद्रीय अर्ध–सैनिक पुलिस बल के

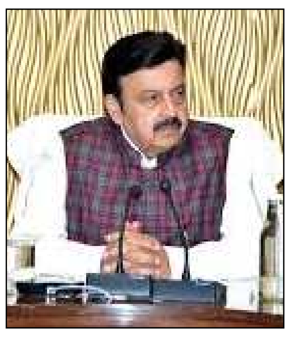

कर्मियों को दी जाने वाली एक्सग्रेसिया राशि 50 लाख रुपये से बढ़ाकर एक करोड़ रुपये की गई है। उन्होंने कहा कि वर्ष अक्टूबर 2014 के बाद से अब तक 410 शहीदों के आश्रितों को सरकारी नौकरी प्रदान की गई है। वर्ष 2024-25 के लिए सैनिक एवं अर्ध-सैनिक कल्याण विभाग का बजट 13540.52 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। पलवल, पानीपत, झज्जर, नूंह, फतेहाबाद, जींद, नारनौल तथा रेवाड़ी में समेकित सैनिक सदन निर्माण के प्रस्ताव पर भी कार्य किया जाएगा। राष्ट्रीय इंडियन मीलिट्री कॉलेज देहरादून में पढ़ने वाले हरियाणा के विद्यार्थियों की स्कॉलरशिप राशि 1 अप्रैल, 2017 से 35 हजार बढ़ाकर 50 हजार रुपये प्रतिवर्ष की गई है। उन्होंने कहा कि रक्षा अकादमी से सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने उपरांत कमीशन प्राप्त करने वाले हरियाणा के अधिकारियों को एक लाख रुपये का स्टाइफंड भी उपलब्ध करवाया जाता है।राव नरबीर सिंह ने कहा कि इसी प्रकार कर्तव्य परायणता के दौरान दिया जाने वाले सेना मेडल व विशिष्ट सेवा मेडल के लिए दी जाने वाली एक मुश्त राशि को वर्ष 2014 से बढ़ाकर 1,75000 रुपये किया गया है।

गुरुग्राम के फर्रुखनगर में पूर्व पार्षद के भतीजे का मर्डर

थाने से चंद कदम दूरी पर फायरिंग, गुस्साए परिजनों और दुकानदारों ने लगाया जाम

एजेंसी

गुरुग्राम। फर्रुखनगर में झज्जर चौक पर दुकानदार की गोली मार कर हत्या कर दी। हमलावर सीधे दुकान में घुसा और काउंटर पर बैठे दुकानदार राकेश पर फायरिंग कर दी। मृतक पूर्व पार्षद मुकेश मुर्कीवाला का भतीजा था और अपनी समोसे की दुकान पर बैठा था। तभी हमलावर ने उस पर ताबड़तोड़ गोलियां चला दीं। यह वारदात थाने से महज चंद कदम की दूरी पर हुई, जिससे इलाके में दहशत फैल गई। गुस्साएं परिजनों और दुकानदारों ने मुख्य सड़क पर जाम लगा दिया है। जिससे ट्रैफिक थम गया है। पुलिस द्वारा वाहनों को दूसरे रास्तों से निकाला जा रहा है।प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बीती शाम राकेश की किसी ग्राहक से समोसे खाने को लेकर कहासुनी हुई थी। माना जा रहा

है कि इसी विवाद ने आज गोलीबारी का रूप ले लिया। दुकान के काउंटर पर बैठे राकेश पर अचानक हमलावर ने फायरिंग शुरू कर दी। गोली लगने से राकेश गंभीर रूप से घायल हो गया और दुकान पर ही उसकी मौत हो गई।

गांव मायना में लगभग 6 एकड़ भूमि में विकसित की जा रही एक अवैध कॉलोनी को तोड़ा गया : उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह

अवैध कॉलोनी में दो चारदीवारी, एक अवैध निर्माण, 3 नींव की गई ध्वस्त, बिजली के खंभे हटाए गए

एजेंसी

रोहतक। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने कहा है कि जिला प्रशासन द्वारा नियमित रूप से जिला के नियंत्रित एवं शहरी क्षेत्र में अवैध निर्माण/कॉलोनियों के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिला के गांव मायना में लगभग 6.11 एकड़ में विकसित की जा रही एक अवैध कॉलोनी को ध्वस्त किया गया। यह अभियान भविष्य में भी जारी रहेगा तथा अवैध कालोनी/निर्माण को पनपने नहीं दिया जाएगा।धर्मेंद्र सिंह ने कहा है कि इस अभियान के दौरान मायना गांव में लगभग 6.11 एकड़ भूमि पर विकसित की जा रही एक अवैध कॉलोनी में दो चारदीवारी, एक अवैध निर्माण, 3 नींव व बिजली के खंभों को तोड़ा गया। आज इस अभियान के दौरान जिला नगर योजनाकार कार्यालय के अधिकारी, कर्मचारी के अलावा किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के

लिए पुलिस बल मौजूद रहा। उन्होंने कहा कि नागरिक अपने जीवन की जमा पूंजी को अवैध कालोनी/निर्माण में निवेश न करें। ऐसी कालोनियों व निर्माण के विरुद्ध जिला प्रशासन द्वारा समय-समय पर अभियान चलाया जाता है। जिला नगर योजनाकार सुमनदीप ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपनी जीवन की पूंजी अवैध निर्माणों में या डीलर/भू-मालिकों के द्वारा काटी जा रही अवैध कालोनियों में निवेश न करें क्योंकि इस तरह की विभागीय कार्यवाही समय-समय पर प्रशासन द्वारा अमल में लाई जायेगी। उन्होंने कहा है कि आमजन अपनी पूंजी को निवेश करने से पहले उनके कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस में आकर पूछताछ कर सकते है।

बिजली के बकाया बिलों के समाधान के लिए सरचार्ज माफी योजना 2025 लागू : उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह

रोहतक। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा बिजली के बकाया बिलों के समाधान के लिए गत 12 मई से सरचार्ज माफी योजना-2025 शुरू की गई है, जो आगामी 11 नवंबर 2025 तक छह माह के लिए लागू रहेगी। इस योजना का लाभ शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सभी उपभोक्ता श्रेणियों के उपभोक्ता उठा सकते हैं, जिनके बिजली बिल 31 अगस्त 2024 तक बकाया थे तथा अब तक बकाया हैं।

सरकार एचकेआरएन कर्मचारियों को हटाने के बजाए उन्हें उसी पद पर करें नियमित: कुमारी सैलजा

वायदों को भूलकर अब जनता पर ही गुर्रा रही है भाजपा सरकार

एजेंसी

चंडीगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि चुनाव के दौरान जनता से किए गए वायदों को भूलकर आज भाजपा सरकार जनता पर ही गुर्रा रही है। हरियाणा कौशल रोजगार निगम के तहत लगे कर्मचारियों को कभी जॉब गारंटी देने वाली सरकार निकालने में लगी हुई है, अब मंत्री कह रहे है कि एचकेआरएन के तहत कर्मचारियों को एक साल के कहकर रखा गया। भाजपा सरकार को अपने वायदे में कायम रहते हुए कर्मचारियो को निकालने के बजाए नियमित करने के बारे में सोचना चाहिए। मीडिया को जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा कि आज सभी को पता चल चुका है कि भाजपा सरकार झूठी घोषणाएं और वायदे करने वाली सरकार है। इस सरकार के पास जुमलों के सिवाय कुछ नहीं है। इस सरकार ने सभी के साथ विश्वासघात किया है। चुनाव के समय सभी से लंबे चौड़े चुनावी वायदे किए जाते है, लंबी लंबी घोषणाएं की जाती है पर सत्ता में आते ही भाजपा दूध में मक्खी की भांति जनता को बाहर निकालकर फैंक देती है। भाजपा का काम ही जनता का शोषण करना है, आज उससे हर वर्ग के लोग परेशान है, किसान पहले ही वर्षो से आंदोलनरत है, कर्मचारी आए दिन सड़क पर आकर प्रदर्शन कर रहे है, महिलाओं ने भी मोर्चा खोला हुआ है। कुमारी सैलजा ने कहा कि चुनाव के समय तत्कालीन सीएम नायब सिंह सैनी ने एचकेआरएन कर्मचारियों से वायदा किया था कि उन्हें नौकरी से नहीं हटाया जाएगा इसके लिए वाकायदा अधिसूचना भी जारी की गई।

उपायुक्त ने दी 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को शुभकामनाएं

कहा, परीक्षा परिणाम में पढ़ने वाले विद्यार्थी न हों हताश, नए सिरे से शुरू करें मेहनत

एजेंसी

नूंह।उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में जिला के जो विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं, उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। इसके साथ ही उन्होंने इस परीक्षा परिणाम में पिछड़ जाने वाले बच्चों को भी भविष्य में अच्छी मेहनत के साथ तैयारी कर पुनः परीक्षा देने का आह्वान किया।

उपायुक्त ने कहा कि जीत व हार तथा पास या फेल एक सिक्के के दो पहलू हैं। कई परिस्थितियों में हार या फेल होना भी हमें आगे बढने् के लिए प्रेरित करता है। हार से सीख यह भी मिलती है कि अभी इस क्षेत्र में और मेहनत की आवश्यकता है। जीवन में जो लोग मेहनत करते हैं, उनके परिणाम भी बेहतर रहते हैं। फेल होने वाले विद्यार्थियों को हताश नहीं होना चाहिए, अपितु नए सिरे से पूरे उत्साह के साथ भविष्य में अच्छी मेहनत करने और अच्छे अंकों के साथ परीक्षा में पास होने का स्वयं से प्रण करना चाहिए।

डिप्टी डीईओ ने दी परीक्षा परिणाम की जानकारी

उप जिला शिक्षा अधिकारी सगीर अहमद ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा के जिला नूंह के स्कूलों के परीक्षा परिणाम के बारे में पत्रकारों को जानकारी देते हुए बताया कि जिला नूंह का परीक्षा परिणाम 45.76 प्रतिशत रहा। इस परीक्षा में जिला के सभी स्कूलों के 7 हजार 588 विद्यार्थी बैठे थे, जिसमें से 3 हजार 472 विद्यार्थी पास हुए और एक हजार 758 विद्यार्थियों की कंपार्टमेंट आई। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन ने इस बार निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन करना सुनिश्चित किया था। बोर्ड परीक्षाओं में सख्ती के साथ नकल रहित परीक्षाएं करवाने में प्रशासन ने काफी सक्रीयता के साथ कार्य किया गया था। अब जो परिणाम आया है, वह ईमानदारी के साथ मेहनत करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा है। भविष्य में विद्यार्थियों को और मेहनत करनी होगी और नकल जैसी प्रवृति से बचना होगा। शिक्षा विभाग इस वर्ष शुरू से ही मॉनिटरिंग व्यवस्था को मजबूत करने का काम करेगा। पीटीएम पर अधिक ध्यान दिया जाएगा तथा अभिभावकों को भी बच्चों पर अधिक ध्यान देने के लिए प्रेरित किया जाएगा। विद्यार्थियों को भी समय-समय पर मोटिवेट किया जाएगा। जो भी कमियां रहीं हैं, उन्हें दूर करने का पूरा प्रयास किया जाएगा।

गुरुग्राम में मानसून पूर्व तैयारियों को लेकर निगम आयुक्त ने अफसरों को दिए सख्त निर्देश

- जलभराव से निपटने के लिए इंजीनियरों के साथ बनाई गई रणनीति
- हर संवेदनशील क्षेत्र की होगी जांच व निगरानी

एजेंसी

गुरुग्राम। आगामी मानसून सीजन को ध्यान में रखते हुए नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त प्रदीप दहिया ने जीएमडीए व एमसीजी के अभियंताओं के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि शहर में जलभराव की समस्या से निपटने के लिए पूर्व से ही पुख्ता इंतजाम किए जाएं। निगमायुक्त ने कहा कि ड्रेनेज और सीवरेज नेटवर्क की पर्याप्त सफाई और आवश्यक मरम्मत कार्य प्राथमिकता के आधार पर कराए जाएं। इसके साथ ही पर्याप्त संख्या में मैनपावर, पंप और मशीनरी की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जलभराव की संभावनाओं वाले क्षेत्रों की पहचान करते हुए उन पर कनिष्ठ अभियंताओं की जिम्मेदारी तय की गई है। एक सप्ताह के भीतर सभी चिन्हित स्थानों का निरीक्षण कर जलभराव के कारण और उसके

समाधान पर कार्य करना सुनिश्चित किया जाएगा। इस दौरान आसपास के नागरिकों से बातचीत भी की जाएगी। प्रत्येक कनिष्ठ अभियंता के साथ सफाई और सीवर से जुड़े कर्मचारियों की एक डेडिकेटेड टीम नियुक्त की जाएगी, जो निरंतर कार्य में जुटी रहेगी। साथ ही संयुक्त आयुक्तों को भी निर्देश दिए गए हैं कि वे अपने-अपने जोन में नियमित निरीक्षण करते रहें। प्रदीप दहिया ने कहा कि कनिष्ठ अभियंता नगर निगम की कार्य प्रणाली की एक अहम कड़ी हैं। उन्हें अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाना है और किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिन अधिकारियों को जिम्मेदारी दी गई है, कार्य की जवाबदेही भी उन्हीं की होगी। उन्होंने यह भी कहा कि बेहतर म्यूनिसिपल सेवाएं नागरिकों का अधिकार हैं और इसे सुनिश्चित करना निगम का कर्तव्य है। इसके साथ ही उन्होंने सहायक अभियंताओं को निर्देश दिए कि सभी इंटरनल ड्रेनेज को मास्टर ड्रेन से जोड़ा जाना सुनिश्चित करें ताकि जल निकासी की प्रक्रिया निर्बाध रूप से संचालित हो सके। नगर निगम गुरुग्राम की यह पहल मानसून से पहले शहर को जलभराव मुक्त बनाने की दिशा में एक ठोस कदम मानी जा रही है। इस मौके पर अतिरिक्त निगमायुक्त यश जलुका व महावीर प्रसाद, संयुक्त आयुक्त सुमित कुमार, विशाल कुमार, डा. जयवीर यादव व अखिलेश यादव, चीफ इंजीनियर विजय ढाका, जीएमडीए के एसई सुधीर, कार्यकारी अभियंता विक्रम सिंह, नगर निगम के कार्यकारी अभियंता संजीव कुमार, मनोज कुमार, सचिन यादव व प्रवीण राघव सहित जीएमडीए व नगर निगम के सहायक अभियंता और कनिष्ठ अभियंता स्तर के अधिकारी उपस्थित थे।

सिविल डिफेंस वालंटियर बनने के लिए प्रशिक्षण शिविर आज

- 16 वर्ष से अधिक आयु के नागरिक ऑनलाइन करें पंजीकरण

गुरुग्रामा। आपात स्थिति से निपटने में जिला प्रशासन के साथ नागरिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए जिलावासियों से उपायुक्त अजय कुमार ने सिविल डिफेंस वालंटियर बनने की अपील की है। जिला के 16 वर्ष से अधिक आयु के युवा, पूर्व सैनिक, स्वास्थ्य कर्मी व अन्य सामाजिक कार्यों में रूचि रखने वाले जिला प्रशासन के सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर जाकर एक गूगल फार्म भर सिविल डिफेंस वालंटियर के लिए अपना पंजीकरण कर सकते हैं।

सिविल डिफेंस के जिला कंट्रोलर एवं डीसी अजय कुमार ने जिलावासियों के नाम जारी अपने संदेश में कहा कि इस बार सिविल डिफेंस वालंटियर्स के लिए छह हजार का लक्ष्य लिया गया है।

नारनौल नागरिक अस्पताल में अब दो शिफ्टों में होगा अल्ट्रासाउंड, आमजन को मिलेगी बड़ी राहतः आरती सिंह राव

एजेंसी

नारनौल। स्थानीय नागरिक अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के निर्देश पर अब अल्ट्रासाउंड सेवा को दो शिफ्टों में संचालित किया जाएगा। पहले यह सेवा केवल एक ही शिफ्ट में उपलब्ध थी, जिससे मरीजों को लंबा इंतजार करना पड़ता था और अनेक बार उन्हें निराश होकर लौटना पड़ता था। अब इस सेवा का समय प्रातः 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक तथा दूसरी शिफ्ट में दोपहर 2 बजे से शाम 8 बजे तक निर्धारित किया गया है। यह निर्णय मरीजों की संख्या में निरंतर वृद्धि और सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए लिया गया है। इससे अब कामकाजी वर्ग, वृद्धजन तथा दूर-दराज से आने वाले मरीजों को समय अनुसार सेवा मिल सकेगी।

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि सरकार नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि मरीजों को समय पर और गुणवत्तापूर्ण सेवाएं मिलें और किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो। अस्पताल प्रशासन को पर्याप्त स्टाफ की व्यवस्था करने और दोनों शिफ्टों में सेवा की निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए हैं। इस बदलाव से मरीजों की सुविधा के साथ-साथ अस्पताल में भीड़भाड़ में भी कमी आएगी और अल्ट्रासाउंड रिपोर्ट की प्रतीक्षा अवधि भी घटेगी। अस्पताल प्रशासन ने आमजन से सहयोग की अपील करते हुए कहा है कि सभी मरीज अपनी निर्धारित समय सारिणी के अनुसार पहुंचें और सेवा का लाभ लें। स्वास्थ्य मंत्री के इस निर्णय की आमजन व समाजसेवियों द्वारा भी सराहना की जा रही है। यह कदम न केवल सुविधा में वृद्धि करेगा बल्कि सरकार की जनहितैषी सोच को भी प्रतिबिंबित करता है।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें यथावत

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज यथावत रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर साप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 0.18 प्रतिशत गिरकर 61.84 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.22 प्रतिशत उतरकर 64.82 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

सोशल मीडिया पोस्ट करना ब्रिटिश बैंक विश्लेषक को पड़ा महंगा, सऊदी में मिली एक दशक की जेल की सजा

सऊदी अरब। सऊदी अरब में एक शख्स को एक सोशल मीडिया पोस्ट के लिए एक दशक की सजा मिली है। बता दें कि, ब्रिटिश बैंकर अहमद अल-दौश, को सऊदी अरब में दस साल की सजा सुनाई गई है। उनका परिवार मानता है कि यह सजा 2018 में किए गए एक ट्वीट के कारण हुई, जिसमें सऊदी अरब का नाम नहीं था, लेकिन वह सूडान के बारे में था। यह ट्वीट अब डिलीट कर दिया गया है। अहमद अल-दौश, जो बैंक ऑफ अमेरिका में विश्लेषक थे, को आतंकवाद और साइबर अपराध कानूनों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया है। उनकी वकील, हेदी डाइकस्टाल ने कहा कि उनका मुकदमा और गिरफ्तारी निष्पक्ष प्रक्रिया का उल्लंघन थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार से इस मामले में सख्त हस्तक्षेप करने की अपील की है।

रियाद एयरपोर्ट से हुई थी गिरफ्तारी

अहमद को अगस्त में रियाद एयरपोर्ट पर गिरफ्तार किया गया था, जब वह अपने परिवार के साथ इंग्लैंड के मैनचेस्टर जा रहे थे। उनकी पत्नी, अमाहर नूर, ने कहा कि अहमद को जेल में काफी परेशानी हो रही है, खासकर थाइरॉइड की समस्याओं और मानसिक तनाव के कारण।

पाकिस्तान समेत 7 पड़ोसी देशों की संयुक्त अर्थव्यवस्था पर भारी एसबीआई की बैलेंसशीट

नई दिल्ली। महज 15 अरब डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार के बल पर भारत के साथ लड़ रहा पाकिस्तान किसी भी पैमाने पर हमारे देश के समक्ष नहीं टिक सकता है। देश के सबसे बड़े बैंक एसबीआई के खाता-बही को देखें तो यह हमारे पड़ोसी सात देशों की संयुक्त जीडीपी से भी ज्यादा है जिसमें पाकिस्तान भी शामिल है। एसबीआई समूह का खाता-बही 858.82 अरब डॉलर यानी 73.14 लाख करोड़ रुपये है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष यानी आईएमएफ के अनुसार, 2024 में सात देशों की अर्थव्यवस्था 611.05 अरब डॉलर रही। यानी एसबीआई के खाता-बही से करीब 200 अरब डॉलर कम है। मालदीव की अर्थव्यवस्था का आकार 7.48 अरब डॉलर रहा है। पाकिस्तान की 373 अरब डॉलर व नेपाल की जीडीपी 46 अरब डॉलर है। भूटान की जीडीपी 3.42 अरब डॉलर, म्यामार की 64.94 अरब डॉलर, अफगानिस्तान की 17.25 अरब डॉलर व श्रीलंका की 98.96 अरब डॉलर है। पाकिस्तान और बांग्लादेश को मिला लिया जाए तो भी एसबीआई अकेले काफी है। बांग्लादेश की जीडीपी 467 अरब डॉलर व पाक की 373 अरब डॉलर है। दोनों मिलकर भी एसबीआई से 19 अरब डॉलर पीछे हैं।

भारत में बनेगी दुनिया की सबसे छोटी सेमीकंडक्टर चिप, वैष्णव ने डिजाइन केंद्रों का किया उद्घाटन

नई दिल्ली। सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहे भारत में अब दुनिया की सबसे छोटी 3 नैनोमीटर की चिप तैयार होगी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने नोएडा और बंगलूरू में जापानी कंपनी रेनेसास के नए सेमीकंडक्टर डिजाइन केंद्रों का उद्घाटन किया। यह पहली बार है जब भारत में तीन नैनोमीटर चिप डिजाइन की जाएगी। वैष्णव ने कहा, रेनेसास के इस केंद्र की मुख्य बात यह है कि पहली बार सबसे उन्नत तीन नैनोमीटर चिप को पूरी तरह भारत में तैयार किया जाएगा। यह एक मील का पत्थर है जो भारत को सेमीकंडक्टर इनोवेशन की वैश्विक लीग में मजबूती से स्थापित करता है। उन्होंने कहा, 3 नैनोमीटर पर डिजाइन करना वास्तव में अगली पीढ़ी है। हमने पहले 7 और 5 नैनोमीटर पर काम किया है। लेकिन यह एक नई सीमा तय करता है।

थोक महंगाई दर अप्रैल में घटकर 13 माह के निचले स्तर 0.85 फीसदी पर आई

एजेंसी

नई दिल्ली। महंगाई के मोर्चे पर जनता को राहत देने वाली खबर है। खुदरा के बाद थोक महंगाई दर में गिरावट दर्ज हुई है। अप्रैल में थोक महंगाई दर 2.05 फीसदी से घटकर 0.85 फीसदी पर आ गई है। यह 13 महीनों का निचला स्तर है। इससे पहले मार्च, 2024 में थोक महंगाई दर 0.53 फीसदी के स्तर पर थी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने बुधवार को जारी आंकड़ों में बताया कि थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) पर आधारित थोक महंगाई दर अप्रैल माह में खाद्य वस्तुओं, विनिर्मित उत्पादों और ईंधन की कीमतों में कमी आने की वजह से घटकर 0.85 फीसदी रह गई। रोजाना की जरूरत के सामानों और खाने-पीने की चीजों की कीमतें घटने की वजह से थोक महंगाई दर घटी है। मार्च में यह 2.05 फीसदी और अप्रैल 2024, में 1.19 फीसदी रही थी। फरवरी, 2025 की थोक महंगाई दर के जारी आंकड़ों को संशोधित

किया गया है। सरकार ने इसे 2.38 फीसदी से बढ़ाकर 2.45 फीसदी किया गया है। इसके अलावा डब्ल्यूपीआई पर आधारित मुद्रास्फीति मार्च महीने में 2.05 फीसदी और अप्रैल, 2024 में 1.19 फीसदी रही थी। खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति अप्रैल में 0.86 फीसदी रही जो मार्च में 1.57 फीसदी थी। अप्रैल में सब्जियों की मुद्रास्फीति दर 18.26 फीसदी रही, जबकि मार्च में यह 15.88 फीसदी रही थी। प्याज में मुद्रास्फीति घटकर अप्रैल में 0.20 फीसदी रह गई, जबकि मार्च में यह 26.65 फीसदी थी। हालांकि अप्रैल में विनिर्मित उत्पादों में मुद्रास्फीति 2.62 प्रतिशत रही, जबकि मार्च में यह 3.07 फीसदी रही थी। ईंधन एवं बिजली के क्षेत्र में मुद्रास्फीति अप्रैल में 2.18 फीसदी रही, जो मार्च में 0.20 फीसदी थी।

उल्लेखनीय है कि रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने चालू वित्त वर्ष के लिए खुदरा महंगाई दर को 4 फीसदी के आसपास बनाए रखने का अनुमान जताया है, लेकिन सब्जियों, फलों एवं दालों की कीमतों में नरमी आने से अप्रैल में खुदरा महंगाई दर घटकर करीब छह साल के निचले स्तर 3.16 फीसदी पर आ गई है, जो जुलाई 2019 के बाद का सबसे निचला स्तर है। जुलाई, 2019 में यह 3.15 फीसदी रही थी।

जीडीपी में औद्योगिक क्षेत्र का हिस्सा 2035 तक 32 प्रतिशत तक जा सकता है:ओमनीसाइंस कैपिटल

एजेंसी

मुंबई। ओमनीसाइंस कैपिटल की जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में औद्योगिक क्षेत्र का हिस्सा वर्तमान 27.3 प्रतिशत से बढ़ कर 2035 तक 30-32 प्रतिशत तक जा सकता है। रिपोर्ट के अनुसार एक दशक में देश के औद्योगिक क्षेत्र में तीन लाख करोड़ डॉलर के कारोबार के अवसर उत्पन्न हो सकता हैं जो अभी एक लाख करोड़ डॉलर के बराबर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2035 तक भारतीय अर्थव्यवस्था 10 लाख करोड़ डॉलर की होगी जिसमें औद्योगिक क्षेत्र का हिस्सा तीन लाख करोड़ डालर से अधिक होगा। उद्योग क्षेत्र के हिस्से में इस विस्तार में विनिर्माण क्षेत्र की भूमिका बड़ी होने की संभावना है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत का उद्योग क्षेत्र 2035 तक जीडीपी में कृषि से आगे निकलकर संभावित 30-32 प्रतिशत तक योगदान कर रहा होगा इसमें मुख्य भूमिका विनिर्माण क्षेत्र की होगी। रिपोर्ट के अनुसार पिछले पांच वर्षों में औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि में निर्माण क्षेत्र की भूमिका अग्रणी रही है। यह बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण निवेश से संचालित है। विनिर्माण क्षेत्र का हिस्सा 2035 तक औद्योगिक क्षेत्र में दो तिहाई तक पहुंच जाएगा और जीडीपी में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत तक पहुंच सकती है।रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2030 तक एक लाख करोड़ के निर्यात के लक्ष्य से देश में प्रति व्यक्ति आय और घरेलू खपत में सुधार होने की उम्मीद है। ओमनीसाइंस कैपिटल का यह भी मानना है कि इस निर्यात-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, व्यापारिक निर्यात को मौजूदा 45000 करोड़ डॉलर से बढ़ाकर एक लाख करोड़ डालर करना होगा और जिसके लिए इसमें साल-दर-साल 12 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की आवश्यकता होगी। ओमनीसाइंस कैपिटल में ईवीपी और पोर्टफोलियो मैनेजर अश्विनी शमी ने कहा है कि कच्चे माल की उपलब्धता, कम श्रम लागत, विनिर्माण के लिए अनुकूल कॉर्पोरेट कर दर और प्रोत्साहनों के माध्यम से सक्रिय सरकारी समर्थन के कारण भारत विनिर्माण निवेश के लिए एक पसंदीदा गंतव्य के रूप में उभरना जारी रखेगा।

एक्सिस बैंक और लक्ष्य शूटिंग क्लब ने की साझेदारी

एजेंसी

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के एक्सिस बैंक ने देश में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और शूटिंग स्पोर्ट्स को वैश्विक ऊंचाइयों तक पहुंचाने के उद्देश्य से लक्ष्य शूटिंग क्लब के साथ साझेदारी की है, जिसके तहत नवी मुंबई में एक विश्वस्तरीय 'एक्सिस बैंक लक्ष्य शूटिंग क्लब हाई परफॉर्मेंस सेंटर (एचपीसी)' स्थापित किया जाएगा।

इस समझौते पर एक्सिस बैंक के समूह कार्यकारी और प्रमुख (होलसेल बैंक कवरेज और सस्टेनेबिलिटी) विजय मुलबागल और लक्ष्य शूटिंग क्लब की अध्यक्ष एवं ओलंपियन सुमा शिरूर ने हस्ताक्षर किए। यह सेंटर युवाओं के लिए न सिर्फ प्रशिक्षण हब बनेगा बल्कि ओलंपिक स्तर के एथलीट्स को तैयार करने का भी प्रमुख केंद्र होगा।इस शूटिंग सेंटर में एयर राइफल, एयर पिस्टल और सिमुलेटेड 50 मीटर रेंज की आधुनिक सुविधाएं होंगी। साथ ही एकीकृत खेल विज्ञान केंद्र, खेल मनोविज्ञान इकाई, चोट निवारण तथा रिकवरी सुविधाएं और आवासीय ट्रेनिंग की व्यवस्था भी की जाएगी। यह केंद्र सालाना 400 से अधिक

शूटर्स को प्रशिक्षण देने में सक्षम होगा, जिसमें रेजिडेंट और नॉन-रेजिडेंट दोनों तरह के खिलाड़ी शामिल होंगे। यह परिसर पैरा-फ्रेंडली होगा, जिससे पैरा-एथलीट्स और डेफलिंपिक प्रतिनिधियों को भी विशेष सहयोग मिलेगा। एक्सिस बैंक के विजय मुलबागल ने कहा, 'यह साझेदारी भारत में विश्वस्तरीय खेल अवसंरचना विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल ओलंपिक के लिए भारत की तैयारियों को मजबूत करेगा बल्कि नई प्रतिभाओं को आगे लाने में भी मदद करेगा। लक्ष्य शूटिंग क्लब की सुमा शिरूर ने इस पहल को 'एक सपने को साकार करने जैसा' बताया। उन्होंने कहा, 'यह केंद्र एक ऐसा स्थान बनेगा जहां हर युवा निशानेबाज को लगेगा कि वह भी सफलता की दौड़ में है, उसके पास संसाधन और समर्थन है।'

खुदरा महंगाई दर अप्रैल में घटकर छह साल के निचले स्तर 3.16 फीसदी पर आई

एजेंसी

नई दिल्ली। । महंगाई के मोर्चे पर लोगों को राहत देने वाली खबर है। खुदरा महंगाई दर अप्रैल में घटकर 3.16 फीसदी पर आ गई है, जो करीब 6 साल का सबसे निचला स्तर है। इस गिरावट की मुख्य वजह सब्जियों, फलों, दालों और अन्य प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों की कीमतों में कमी आना है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित खुदरा महंगाई दर अप्रैल में सलाना आधार पर घटकर 3.16 फीसदी पर आ गई है, जो करीब 6 साल का सबसे निचला स्तर है। इससे पहले मार्च, 2025 में खुदरा महंगाई की दर 3.34 फीसदी रही थी। अप्रैल 2024 में यह 4.83 फीसदी थी, जबकि जुलाई 2019 में यह दर 3.15 फीसदी थी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के जारी आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल में खाद्य महंगाई केवल 1.78 फीसदी रही, जो मार्च में 2.69 फीसदी और पिछले साल अप्रैल में 8.7 फीसदी रही थी। वहीं, अप्रैल में ग्रामीण महंगाई दर 3.25 फीसदी से घटकर 2.92

फीसदी हो गई है, जबकि शहरी महंगाई 3.43 फीसदी से घटकर 3.36 फीसदी पर आ गई है। इस तरह यह दर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की तय सीमा के भीतर है, जो 4 फीसदी के आसपास रहती है।उल्लेखनीय है कि रिजर्व बैंक ने वित त वर्ष 2025-26 के लिए सीपीआई आधारित खुदरा महंगाई दर को 4 फीसदी के आसपास बनाए रखने का अनुमान जताया है। पहली तिमाही में महंगाई 3.6 फीसदी, दूसरी तिमाही में 3.9 फीसदी, तीसरी तिमाही में 3.8 फीसदी और चौथी तिमाही में 4.4 फीसदी रहने की संभावना है।

देश के प्रमुख बंदरगाहों ने वित्त वर्ष 2024-25 में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल कीं

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के प्रमुख बंदरगाहों ने कार्गो हैंडलिंग में 4.3 फीसदी की प्रभावशाली वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की है, जो वित?त वर्ष 2023-24 में 819 मिलियन टन से बढ़कर वित्त वर्ष 2024-25 में 855 मिलियन टन हो गई। ये वृद्धि बढ़ते व्यापार वॉल्यूम को समायोजित करने में प्रमुख बंदरगाहों की लचीलापन और क्षमता को उजागर करती है।पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि देश के प्रमुख बंदरगाहों ने पिछले दशक में लगातार उल्लेखनीय प्रगति प्रदर्शित की है। जहाज से माल ढुलाई, परिचालन दक्षता और बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण के मामले में वित्त वर्ष 2024-25 उपलब्धि पत्थर वर्ष के रूप में उभरा है। देश के प्रमुख बंदरगाहों के यातायात में ये वृद्धि पिछले वित?त

वर्ष की तुलना में उच्च कंटेनर थ्रूपुट (10 फीसदी), उर्वरक कार्गो हैंडलिंग (13 फीसदी), पीओएल कार्गो हैंडलिंग (3 फीसदी) और विविध वस्तुओं की हैंडलिंग (31 फीसदी) के कारण हुई। मंत्रालय ने कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 में प्रमुख बंदरगाहों ने जहाज से माल ढुलाई (कार्गो हैंडलिंग) में 4.3 फीसदी की प्रभावशाली वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की है। वित्त वर्ष 2023-24 में जहाज से माल ढुलाई 819 मिलियन टन से बढ़कर वित्त वर्ष 2024-25 में लगभग 855 मिलियन टन हो गई। यह वृद्धि बढ़ते व्यापार को समायोजित करने में प्रमुख बंदरगाहों की सुदृढ़ता और क्षमता को उजागर करती है।पिछले वित्त वर्ष की तुलना में कार्गो ट्रैफिक में वृद्धि उच्च कंटेनर प्रवाह क्षमता (थ्रूपुट) (10 फीसदी), उर्वरक कार्गो परिवहन (13 फीसदी), पीओएल कार्गो परिवहन (3 फीसदी) और विविध वस्तुओं के परिवहन (31 फीसदी) की वजह से थी। प्रमुख बंदरगाहों पर वित्त वर्ष 2024-25 में जिन वस्तुओं की ढुलाई की गई उनमें पेट्रोलियम, तेल और स्नेहक (पीओएल) जैसे कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद तथा एलपीजी/एलएनजी शामिल हैं, जो 254.5 मिलियन टन (29.8 फीसदी) की मात्रा के साथ चार्ट में सबसे आगे हैं।

एयर इंडिया और इंडिगो ने सुरक्षा कारणों से रद्द की कई उड़ानें

एजेंसी

नई दिल्ली। देश के मौजूदा हालात को देखते हुए विमानन कंपनी एयर इंडिया और इंडिगो एयरलाइंस ने आज उत्तर और पश्चिम भारत के कई शहरों के लिए अपनी उड़ानों को रद्द कर दिया। एयर इंडिया ने जम्मू, लेह, जोधपुर, अमृतसर, भुज, जामनगर, चंडीगढ़ और राजकोट के लिए सभी उड़ानों को लिए स्थगित करने की घोषणा की। वहीं, निजी विमानन कंपनी इंडिगो ने सोमवार देर रात जारी अपनी एडवाइजरी में जम्मू, अमृतसर, चंडीगढ़, लेह, श्रीनगर और राजकोट के लिए अपनी उड़ानें रद्द करने की सूचना दी है।दोनों विमानन कंपनियों ने यात्रियों से अपील की है कि वे हवाईअड्डे के लिए निकलने से पहले अपनी उड़ानों की स्थिति की जांच कर लें और किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ग्राहक सेवा से संपर्क करें। विमानन कंपनियों ने असुविधा के लिए खेद व्यक्त करते हुए यह भी बताया कि उनकी टीमें लगातार हालात पर नजर बनाए हुए हैं और हालात सामान्य होने के बाद उड़ानें दोबारा बहाल की जाएंगी।

व्यापार वार्ता के लिए अमेरिका जाएंगे पीयूष गोयल, 17 मई से शुरू होगी चर्चा

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल 16 मई को वाशिंगटन के दौरे पर जाएंगे, जहां वे दोनों देशों के बीच प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर अमेरिकी अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय वार्ता का नेतृत्व करेंगे। यह कदम भारत-अमेरिका व्यापार संबंधों को और मजबूत बनाने के उद्देश्य से उठाया गया है। आधिकारिक सूत्रों ने दी गई जानकारी में बताया कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के नेतृत्व में वरिष्ठ भारतीय अधिकारियों का एक दल प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर अपने अमेरिकी समकक्षों के साथ 17 मई से वाशिंगटन में चर्चा करेगा। इस बैठक में भाग लेने के लिए पीयूष गोयल 16 मई को वाशिंगटन

पहुंचेंगे।जानकारी के मुताबिक अपनी यात्रा के दौरान पीयूष गोयल के अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) जेमिसन ग्रीर और अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक के साथ बैठक करने की उम्मीद है। इस्पात और एल्युमीनियम पर अमेरिकी शुल्क के विरोध में कुछ अमेरिकी उत्पादों पर जवाबी शुल्क लगाने के भारत के प्रस्ताव पर भी बातचीत होगी। इन चर्चाओं के जरिए भारत और अमेरिका के अधिकारी उच्च शुल्क पर लगी 90 दिनों की रोक के भीतर आम सहमति पर पहुंचना चाहते हैं। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल का ये दौरा ऐसे समय में हो रहा है, जब दोनों देश इस वर्ष सितंबर-अक्टूबर तक व्यापार समझौते के पहले चरण को अंतिम रूप देने से पहले ''शीघ्र पारस्परिक लाभ'' सुनिश्चित करने के लिए वस्तुओं में अंतरिम व्यापार व्यवस्था की संभावना तलाश रहे हैं। उल्लेखनीय है कि अमेरिका ने भारत पर अतिरिक्त 26 फीसदी टैरिफ को 9 जुलाई तक के लिए निलंबित कर दिया है। ट्रंप ने बढ़ते व्यापार घाटे को पाटने के लिए 2 अप्रैल, 2025 को इसकी घोषणा की थी। हालांकि, 10 फीसदी का मूल शुल्क अब भी लागू है।

लाल निशान पर बंद हुआ शेयर बाजार, सेंसेक्स 1,282 अंक लुढ़का

एजेंसी

नई दिल्ली/मुंबई। शेयर बाजार हफ्ते के पहले कारोबारी दिन की रिकॉर्ड तेजी के बाद दूसरे दिन बड़ी गिरावट के साथ लाल निशान पर बंद हुआ। कारोबार के अंत में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का सेंसेक्स 1,282 अंक लुढ़क गया। आईटी और दैनिक उपयोग का सामान बनाने वाली कंपनियों के शेयरों में मुनाफावसूली से बाजार नुकसान में रहा। 30 शेयरों पर आधारित बीएसई का सेंसेक्स 1,281.68 अंक यानी 1.55 फीसदी का गोता लगाते हुए 81,148.22 के स?तर पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 1,386.21 अंक तक लुढ़क गया था। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 346.35 अंक यानी 1.39 फीसदी फिसल कर 24,578.35 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 25 शेयर में गिरावट रही। इंफोसिस, पावर ग्रिड और जोमैटो के शेयर करीब 3.6 फीसदी नीचे गिरकर बंद हुए। हालांकि, एचसीएल टेक और टीसीएस सहित कुल 5 शेयरों में करीब तीन फीसदी की तेजी रही। सनफार्मा, अडाणी पोर्ट्स, बजाज फाइनेंस, एसबीआई और टेक महिंद्रा में मामूली तेजी रही। वहीं, निफ्टी के 50 शेयरों में से 35 शेयर में गिरावट रही। एनएसई के आईटी इंडेक्स में 2.42 फीसदी की सबसे

ज्यादा गिरावट रही। ऑटो, रियल्टी, मेटल और एफएमसीजी इंडेक्स एक फीसदी गिरे। वहीं, मीडिया बैंकिंग और हेल्थकेयर सेक्टर में 1.5 फीसदी की तेजी देखने को मिली। उल्लेखनीय है कि हफ्ते के पहले कारोबारी दिन सेंसेक्स 2975 अंक यानी 3.74 फीसदी चढ़कर 82,430 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी भी 917 अंक यानी 3.82 फीसदी की तेजी के साथ 24,925 के स्तर पर बंद हुआ था।

संघर्ष विराम के बाद चीनी रक्षा शेयरों का बुरा हाल

मुंबई। भारत-पाकिस्तान संघर्ष विराम के बाद रक्षा कंपनियों के शेयरों में उतार चढ़ाव है। संघर्ष विराम के बाद जहां चीन की रक्षा कंपनियों के शेयर धड़ाम हो गए। वहीं दूसरी ओर भारतीय रक्षा कंपनी के शेयरों में उछाल देखने को मिला। भारतीय रक्षा स्टॉक में तेजी के पीछे की वजह देश में ही हथियारों के निर्माण को वजह देना माना जा रहा है। चीन के हैंगसेंग चाइना ए एयरोस्पेस एंड डिफेंस इंडेक्स तीन फीसदी गिरावट के साथ 4269.62 पर बंद हुआ। इसके अलावा चीन के डिफेंस स्टॉक में नौ फीसदी तक गिरावट आई। इसके अलावा एवीआईसी चेंगदू एयरक्राफ्ट के शेयर 9.2 फीसदी तक लुढ़क गए। जबकि पीएल-15 मिसाइल बनाने वाली कंपनी झूझोउ होंगड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन के शेयर छह फीसदी, चाइना स्टेट शिपबिल्डिंग कॉरपोरेशन के शेयर चार फीसदी, सन क्रिएट इलेक्ट्रॉनिक्स के शेयर 6.25 फीसदी और सिचुआन तियानवेई इलेक्ट्रॉनिक्स के शेयरों में आठ फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई। बताया जा रहा है सीजफायर होने से पहले इन कंपनियों के शेयर में 35 फीसदी तक की तेजी आई थी। भारत पाकिस्तान तनाव के बीच भारतीय रक्षा कंपनियां खूब मालामाल हुईं। हथियारों का निर्माण भारत में ही होने से यहां का डिफेंस स्टॉक हरे निशान पर है।

एलआईसी ने नए बिजनेस प्रीमियम में निजी बीमा कंपनियों को पछाड़ा, सालाना आधार पर 10 फीसदी की वृद्धि

एजेंसी

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी जीवन बीमा कंपनी भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने अप्रैल के लिए नए व्यवसाय प्रीमियम (एनबीपी) में सालाना आधार पर 9.91 फीसदी की वृद्धि दर्ज की है। यह समग्र उद्योग की 8.43 फीसदी की वृद्धि दर और निजी जीवन बीमा कंपनियों की 6.09 फीसदी की वृद्धि दर से ज्यादा है।जीवन बीमा परिषद की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक एलआईसी ने अप्रैल महीने में एनबीपी से 13,610.63 करोड़ रुपये एकत्र किए, जो अप्रैल 2024 में 12,383.64 करोड़ रुपये से अधिक है। वहीं, समग्र जीवन बीमा उद्योग ने एनबीपी में 21,965.73 करोड़ रुपये एकत्र किए, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में एकत्र किए गए 20,258.86 करोड़ से 8.43 फीसदी अधिक है। इसी तरह निजी जीवन बीमा कंपनियों ने मिलकर 8,355.10 करोड़ रुपये का योगदान दिया, जो पिछले वर्ष के 7,875.22 करोड़ रुपये से 6.09 फीसदी अधिक है। आंकड़ों के मुताबिक यह एलआईसी की मजबूत स्थिति को

दर्शाता है और यह नए व्यवसाय में अपने प्रदर्शन के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत है। व्यक्तिगत प्रीमियम श्रेणी में एलआईसी ने 0.46 फीसदी की मामूली गिरावट दर्ज हुई है। एलआईसी ने अप्रैल 2025 में 3,160.87 करोड़ रुपये एकत्र किए हैं, जबकि अप्रैल 2024 में यह 3,175.47 करोड़ रुपये रहा था। हालांकि, समूह प्रीमियम खंड में 13.48 फीसदी की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई, जो एक वर्ष पहले 9,208.17 करोड़ रुपये से बढ़कर 10,449.76 करोड़ रुपये हो गई है। जीवन बीमा परिषद के मुताबिक अप्रैल में एलआईसी द्वारा जारी कुल पॉलिसियों की संख्या पिछले साल के मुकाबले 8.56 लाख से घटकर 7.26 लाख हो गई, व्यक्तिगत पॉलिसियों की संख्या 8.55 लाख से घटकर 7.24 लाख और समूह पॉलिसियों की संख्या 1,169 रह गई हैं, जो अप्रैल 2024 में 1,425 थी। जनवरी से अप्रैल 2025 तक की चार महीने की अवधि के लिए एलआईसी का कुल प्रीमियम संग्रह 82,324.58 करोड़ रुपये रहा है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 87,500.97 करोड़ रुपये से कम है। इसके अलावा इसमें व्यक्तिगत प्रीमियम खंड 22,164.24 करोड़ रुपये से बढ़कर 23,188.46 करोड़ रुपये हो गया है, जबकि समूह प्रीमियम खंड 65,336.73 करोड़ रुपये से घटकर अब 59,136.12 करोड़ रुपये रह गया। जनवरी-अप्रैल अवधि के दौरान जारी कुल पॉलिसियों में भी गिरावट दर्ज हुई है, जो पिछले साल 87.05 लाख से घटकर इस साल 68.05 लाख रह गई है।

चावलों में नहीं लगेंगे घुन, स्टोर करते वक्त कंटेनर में डाल दें इनमें से एक चीज

घरों में अक्सर ये शिकायत होती है कि दाल और चावलों को लंबे समय तक स्टोर करने से उनमें घुन हो जाते हैं, अगर आपके साथ भी ऐसा है तो इसका उपाय आपके घर में ही छिपा है. कुछ ऐसे नेचुरल इनग्रेडिएंट्स हैं जो चावल और दालों में घुन लगने से बचाते हैं.

चावल और दाल ऐसी चीजें हैं जो ज्यादातर भारतीय घरों में रेगुलर खाई जाती हैं और इसलिए ही लोग इसे इकट्ठा ही खरीदकर रख लेते हैं. इन्हें लंबे समय तक स्टोर करके रखना थोड़ा मुश्किल होता है, क्योंकि इनमें घुन और कीड़े लगने का डर रहता है. इससे घर में रखी सारी दालें और चावल कई बार खराब हो जाते हैं, इन्हें साफ करना भी काफी मुश्किल होता है. चावल-दाल को कीड़ों के बचाने के लिए वैसे तो बहुत सारे प्रोडक्ट मार्केट में मौजूद हैं, लेकिन इनमें केमिकल होते हैं जो सेहत के लिए भी नुकसानदायक हो सकते हैं, इसलिए दाल और चावलों में कीड़े न लगें, इसके लिए कुछ छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखना चाहिए. इसके अलावा दाल-चावल को स्टोर करते वक्त कंटेनर में घर में ही रखी कुछ चीजें मिला देने से कीड़े नहीं लगते हैं.

दाल और चावल को लंबे समय के लिए स्टोर करना है तो यह ध्यान रखें कि कंटेनर को ऐसी जगह पर रखा होना चाहिए, जहां पर सीलन न रहती हो. कंटेनर एयरटाइट रहते हैं तो उसमें नमी नहीं होती, जिससे कीड़े या घुन पनपने की संभावना काफी कम हो जाती है. चलिए जान लेते हैं कि वो कौन सी चीजें हैं जो चावल और दालों को कीड़ा लगने से बचा सकती हैं.

चावल में मिला दें हल्दी

हर भारतीय घर में हल्दी आसानी से मिल जाने वाला इनग्रेडिएंट है. अगर चावल, दाल या फिर गेहूं को स्टोर कर रहे है तो कंटेनरों में साबुत हल्दी के टुकड़े डाल दें. इससे अनाज को आप कीड़ों से बचा सकते हैं. चावलों को स्टोर कर रहे हैं तो हल्दी पाउडर को अच्छी तरह इनमें मिला दें तो भी कीड़ा नहीं लगता है.

नीम की पत्तियां हैं कारगर

चावलों से लेकर दाल, गेहूं को कीड़ों से बचाने और यहां तक कि कपड़ों को भी बैक्टीरिया से बचाने के लिए नीम की पत्तियां काफी कारगर रहती हैं. सबसे पहले नी की पत्तियों के धूप में सुखा लें. इससे किसी हल्के कपड़े में बांधकर छोटी-छोटी पोटलियां बनाकर कंटेनरों में डाल दें. इसके अलावा नीम की पतली टहनियों के छोटे-छोटे बंडल बनाकर हल्के सुखा लें और चावल-दाल आदि के कंटेनर में डालकर रख दें.

लाल मिर्च भी आती है काम

अनाज को कीड़ों से बचाने के लिए लाल मिर्च भी काफी कारगर रहती है, क्योंकि इनमें तेज ढांस और तीखापन होता है. सूखी मिर्च को चावल-दाल में मिलाकर कंटेनर में स्टोर कर दें. इससे चीटियां भी नहीं आती हैं.

लौंग का करें इस्तेमाल

गर्मी के दिनों में अनाज और चीनी में चीटियां लगना काफी आम होता है, लेकिन इससे काफी दिक्कत हो जाती है.

जीनोम संपादित' चावल : विरासत की बेदखली

प्राकृतिक खेती, जो रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग के बिना टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर जोर देती है, देशी बीजों पर बहुत अधिक निर्भर है। देशी बीज, जो सदियों से स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल विकसित हुए हैं, प्राकृतिक खेती के लचीले और आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र के आधार हैं।भारत में चावल की जीनोम संपादित किस्मों को मंजूरी देने की दिशा में बढ़ते कदम ने कृषि क्षेत्र में एक नई बहस छेड़ दी है। एक तरफ, यह तकनीक फसल सुधार और उत्पादन वृद्धि की अपार संभावनाओं का दावा करती है, वहीं दूसरी तरफ, प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों और देशी बीजों के संरक्षण के लक्ष्यों के लिए कई चुनौतियां खड़ी करती है। यह लेख बीज संप्रभुता, देशी बीजों की शुद्धता और जैव-विविधता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों की चुनौतियों का विश्लेषण करता है। जीनोम इंजीनियरिंग (जीनोम एडिटिंग) का मतलब किसी जीन के जेनेटिक कोड में बदलाव करना है। बदलावों में जीन को खत्म करने के लिए न्यूक्लियोटाइड को हटाना, प्रोटीन को खत्म करने के लिए न्यूक्लियोटाइड को जोड़ना या म्यूटेशन बनाने के लिए न्यूक्लियोटाइड को संपादित करना शामिल है।प्राकृतिक खेती, जो रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग के बिना टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर जोर देती है, देशी बीजों पर बहुत अधिक निर्भर है। देशी बीज, जो सदियों से स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल विकसित हुए हैं, प्राकृतिक खेती के लचीले और आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र के आधार हैं। ये बीज न केवल स्थानीय जलवायु और मिट्टी के लिए अनुकूल होते हैं, बल्कि उनमें रोग-प्रतिरोधक क्षमता और पोषण का भी अपना विशिष्ट संयोजन होता है।जीनोम इंजीनियरिंग तकनीक सदियों से स्थापित इन कृषि पद्धतियों के लिए कई स्तरों पर चुनौती पेश करती है।बीज संप्रभुता पर खतरा-जीनोम संपादित बीजों का विकास और व्यावसायीकरण अक्सर बड़ी, बहुराष्ट्रीय कृषि जैव-प्रौद्योगिकी कंपनियों के हाथों में केंद्रित होता है। इन कंपनियों के पास अक्सर इन बीजों पर बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) होते हैं, जैसे कि पेटेंट। इसके परिणामस्वरूप, किसानों को हर फसल-चक्र के लिए नए बीज खरीदने को मजबूर होना पड़ सकता है, जिससे उनकी परम्परागत रूप से चली आ रही बीज स्वतंत्रता और नियंत्रण कम हो जाता है।प्राकृतिक खेती का एक मूल सिद्धांत किसानों की बीज संप्रभुता है, जहां वे स्वयं अपने बीजों का उत्पादन, संरक्षण और आदान-प्रदान कर सकते हैं। %जीनोम संपादित% बीजों पर निर्भरता इस स्वायत्तता को कमजोर करती है और किसानों को बाहरी संस्थाओं पर निर्भर बनाती है। यह न केवल उनकी लागत बढ़ाता है, बल्कि उन्हें बाजार की ताकतों के प्रति भी अधिक संवेदनशील बनाता है। देशी बीजों के विपरीत, जिन्हें किसान पीढ़ी-दर-पीढ़ी बचाकर और सुधारकर अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार ढाल सकते हैं, जीनोम संपादित बीजों के साथ यह लचीलापन सीमित हो जाता है।देशी बीजों की शुद्धता पर संकट-जीनोम संपादित चावल की किस्मों की खेती से देशी चावल की किस्मों के आनुवांशिक प्रदूषण का खतरा बढ़ जाता है। परागण के माध्यम से, जीनोम संपादित बीजों के जीन जाने-अनजाने में पड़ोसी खेतों में उगाई जा रही देशी किस्मों में स्थानांतरित हो सकते हैं। यह न केवल देशी बीजों की अनुवांशिक शुद्धता को खतरे में डालता है, बल्कि उनकी विशिष्ट विशेषताओं और स्थानीय अनुकूलन को भी बदल सकता है।प्राकृतिक खेती में बीजों की शुद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मिट्टी के सूक्ष्मजीवों और अन्य जैविक घटकों के साथ उनकी जटिल अंतःक्रिया को प्रभावित करती है। यदि देशी बीजों की अनुवांशिक संरचना बदल जाती है, तो यह प्राकृतिक खेती के समग्र पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित कर सकती है। जैविक प्रमाणीकरण के लिए भी बीजों की गैर-जीएमओ (गैर-अनुवांशिक रूप से संशोधित) स्थिति आवश्यक है, और जीनोम संपादन के माध्यम से होने वाला अनपेक्षित जीन-प्रवाह इस प्रमाणीकरण को खतरे में डाल सकता है।

जैव विविधता के लिए चुनौती-भारत चावल की समृद्ध जैव-विविधता का केंद्र रहा है, जिसमें हजारों वर्षों से विकसित हुई अनगिनत देशी किस्में मौजूद हैं। ये किस्में विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों के लिए अनुकूल हैं और विभिन्न प्रकार की पोषण संबंधी और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। यदि जीनोम संपादित अधिक उपज वाली किस्में व्यापक रूप से अपनाई जाती हैं, तो ये किसानों को व्यावसायिक रूप से आकर्षक बीजों की ओर आकर्षित कर सकती हैं, जिससे देशी चावल की किस्मों की खेती कम हो जाएगी। इसके परिणामस्वरूप चावल की अनुवांशिक-विविधता का भारी नुकसान हो सकता है। जैव-विविधता का नुकसान कृषि-पारिस्थितिकी तंत्र को कमजोर करता है, फसलों को बीमारियों, कीटों और जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।प्राकृतिक खेती जैव-विविधता को बढ़ावा देने पर जोर देती है, क्योंकि यह मिट्टी के स्वास्थ्य, कीट-नियंत्रण और समग्र पारिस्थितिकी-तंत्र के संतुलन के लिए आवश्यक है। देशी बीज इस जैव-विविधता का एक अभिन्न अंग है और उनका नुकसान कृषि को कमजोर बना सकता है।

चावल की जीनोम संपादित किस्मों को मंजूरी देना संभवतः खाद्य-सुरक्षा और फसल सुधार के क्षेत्र में नई संभावनाएं खोलता है, लेकिन प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों और देशी बीजों के संरक्षण के लक्ष्यों के साथ इसके गहरे विरोधाभास और चुनौतियां हैं। बीज संप्रभुता का क्षरण, देशी बीजों की अनुवांशिक शुद्धता पर खतरा और जैव-विविधता का नुकसान ऐसे गंभीर मुद्दे हैं जिन पर नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों और किसानों को मिलकर विचार करना होगा।

एक टिकाऊ और समावेशी कृषि भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि हम ऐसी नीतियों को बढ़ावा दें जो न केवल उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करे, बल्कि किसानों की स्वायत्तता, देशी बीजों के संरक्षण और कृषि जैव-विविधता की सुरक्षा को भी प्राथमिकता दे। %जीनोम संपादन% जैसी नई तकनीकों का मूल्यांकन सावधानीपूर्वक और समग्र दृष्टिकोण के साथ किया जाना चाहिए, जिसमें प्राकृतिक खेती और देशी बीजों के महत्व को भी समझा जाए। हमें एक ऐसे मार्ग की तलाश करनी होगी जो नवाचार और स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखे और किसानों को सशक्त बनाए रखते हुए हमारी कृषि विरासत को सुरक्षित रखे।

संपादकीय

भाजपा के असंतुलन से देश को नुकसान

लगभग 20 दिनों की चुप्पी के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार रात आठ बजे राष्ट्र के नाम संबोधन करने का फैसला लिया तो देश को इत्मीनान हुआ कि आखिरकार प्रधानमंत्री देश की सुरक्षा को लेकर सीधी बात करेंगे। इससे पहले सोमवार दोपहर तक भारत-पाक के बीच संघर्ष को लेकर कई किस्म के सवाल चर्चा में थे, जैसे अमेरिका किस तरह भारत और पाकिस्तान के मामले में दखलंदाजी कर सकता है। क्या चीन ने इस बार पाकिस्तान को भारत पर आक्रमण करने में मदद की है। क्या भारत ने अमेरिका के पास जाकर युद्धविराम की पहल की। इन सवालों के बीच पहले खबर आई कि भारत और पाक के बीच डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस यानी डीजीएमओ स्तर पर चर्चा हो रही है और उसके थोड़ी देर बाद खबर आ गई कि प्रधानमंत्री मोदी रात आठ बजे राष्ट्र को संबोधित करने वाले हैं। माना गया कि यह संबोधन ऑपरेशन सिंदूर और उसके बाद के घटनाक्रम को लेकर ही होगा।दरअसल इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री के संबोधन का इंतजार इसलिए था क्योंकि उनकी चुप्पी से बातें अनावश्यक उलझती जा रही थीं।

श्री मोदी ने भले ही राजनैतिक लाभ के लिए चुप रहना बेहतर समझा हो, लेकिन इसका कूटनीतिक नुकसान भारत को हुआ और पार्टी के तौर पर भी भाजपा को इसमें संभावित नुकसान ही हुआ। इसलिए रविवार को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा के आवास पर भाजपा के मंत्रियों और बड़े नेताओं की बैठक हुई, और मंगलवार से पार्टी ने 10 दिनों तक यानी 23 मई तक तिरंगा यात्रा निकालने का फैसला किया है, जिसमें ऑपरेशन सिंदूर की उपलब्धियां देश को बताई जाएंगी।हालांकि सैन्य अभियानों की उपलब्धियां गिनाने की जरूरत नहीं होती। हाथ कंगन को आरसी क्या, जो कुछ सेना ने किया वह नजर आ ही जाता है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी दिख रहा था कि भारत के आगे पाकिस्तान पस्त पड़ रहा है। लेकिन शनिवार शाम से हालात बदल गए। पहले युद्धविराम का ट्रंप की तरफ से ऐलान करना, फिर भारत का यही घोषणा करना और उसके बाद पाकिस्तान की तरफ से नए हमले, ये सारा घटनाचक्र इतनी जल्दी घूमा कि जनता परेशान हो गई कि आखिर कौन सी मजबूरी थी कि भारत को युद्धविराम के लिए सहमत होना पड़ा। युद्धविराम के लिए क्या किसी कागज पर हस्ताक्षर हुए हैं, अगर नहीं तो क्या मुंहजुबानी बात को मान लिया जाए। पाकिस्तान इस बात को क्यों नहीं मान रहा। क्यों एक तरफ पाकिस्तान के हमले हो रहे हैं और दूसरी तरफ शाहबाज शरीफ जीत वाला भाषण दे रहे हैं। ये सारे सवाल विपक्ष से ज्यादा भाजपा समर्थक लोग और खासकर पत्रकार ही उठाने लगे। इस बीच विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री और उनके परिजनों की सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग भी होने लगी क्योंकि युद्धविराम की जानकारी उन्होंने ही दी थी। भाजपा ने ट्रोल आर्मी की शक्ल में भस्मासुर पाले हैं, यह बात जाहिर होने लगी।भाजपा ने पहलगाम हमले को जिस तरह चुनाव में भुनाने की योजना बनाई होगी, वह अमल में आने से पहले ही बेकार होती नजर आई तो अब प्रधानमंत्री को सामने आना ही पड़ा। इस बीच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हालात ऐसे बने जिसमें नजर आया कि किस तरह भारत को अकेला किया जा रहा है। शाहबाज शरीफ ने तो अ संबोधन में अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, तुर्किए, सऊदी अ कतर सबका नाम लेकर शुक्रिया अदा कर दिया, इनमें से किसी ने भी ये नहीं कहा कि अपनी लड़ा हमारा नाम मत लो। यानी सबने सहमति दी कि पाकिस्तान के साथ खड़े थे। वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति जो बार-बार ये कहते रहे कि भारत-पाक मेरे लिए बराबर हैं, उन्होंने भी इस युद्धविराम की घोषणा पाकिस्तान को खुश और भारत को असहज दिया।भारत की यह नीति रही है कि कश्मीर एक द्विप मसला है और इसमें किसी तीसरे देश की मध्यस् स्वीकार्य नहीं है। लेकिन ट्रंप ने पहले युद्धविराम ट्वीट किया फिर अगले दिन के ट्वीट में कश्मीर म का जिक्र कर संकेत दे दिए कि ये दखलंदाजी कश्मीर मुद्दे तक पहुंचने वाली है। अमेरिका के वि मंत्री मार्को रुबियो ने भी लिखा है कि भारत पाकिस्तान विवादों को सुलझाने के लिए किसी तीसरे में बात करेंगे।

ऑपरेशन सिंदूर : एक पूर्व-सुनिश्चित नाकामी का रोजनामचा

जिस तरह से यह युद्धविराम हुआ है, इस संघी ट्रोल सेना में ही नहीं, आम लोगों में भी उस पर काफी असंतोष है। इस असंतोष की एक वजह तो यह युद्धविराम, अमेरिका के हस्तक्षेप से होना ही है। सभी जानते हैं कि शिमला समझौते के बाद से भारत इस रुख पर दृढ़ रहा है कि भारत-पाकिस्तान के बीच जो भी विवाद हैं, जिसमें कश्मीर विवाद भी शामिल है, द्विपक्षीय मामला ही हैं।जैसा कि आसानी से अनुमान लगाया जा सकता था, ऑपरेशन सिंदूर के अचानक पटाक्षेप के बाद, उसे %कामयाब% साबित करने की विभिन्न स्तरों पर कोशिशें शुरू हो गयी हैं। बेशक, खुद प्रधानमंत्री ही नहीं, उनके बाद दूसरे-तीसरे नंबर के दावेदार राजनीतिक नेताओं ने भी, पहले चरण में चुप रह कर, इसके जबर्दस्त प्रयास में सैन्य प्रतिष्ठान को ही सबसे आगे धकेला है। डीजीएमओ और तीनों सेनाओं के शीर्ष प्रतिनिधियों की एक साझा पत्रकार वार्ता में जहां एक ओर, यह स्थापित करने की कोशिश की जा रही थी कि 10 तारीख की शाम से हुई जंगबंदी, पाकिस्तानी डीजीएमओ की फोन करने की पहल के बाद, दोनों पक्षों में बनी सहमति से हुई थी, न कि अमेरिका की मध्यस्थता से हुई थी। वहीं दूसरी ओर यह दिखाने की भी कोशिश की जा रही थी कि इस तीन दिन की लड़ाई में, पाकिस्तानी आतंकवादी ठिकानों को ही नहीं, सेना को भी बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ा है, जबकि भारत को उसकी तुलना में बहुत ही कम नुकसान उठाना पड़ा है। यानी 7 से 10 मई तक का यह ऑपरेशन, भारत की नजर से कामयाब रहा है।

इसी के समानांतर, सत्ताधारी संघ-भाजपा के आईटी सेल और उससे निर्देशित ट्रोल सेना ने कम से कम तीन धारणाएं बनाने के लिए अपनी ताकत झोंक दी है। पहली यह कि जो जंगबंदी हुई है, वह वास्तव में जंगबंदी से कमतर कोई चीज है। ऑपरेशन सिंदूर भी खत्म नहीं हुआ है बल्कि वह तो बराबर जारी है। दूसरे, इस संक्षिप्त कार्रवाई में मोदी सरकार ने बता दिया है कि अब हरेक आतंकवादी कार्रवाई का जवाब इसी तरह पाकिस्तान के अंदर प्रहार से दिया जाएगा। तीसरे, पाकिस्तान को भारत की प्रहार शक्ति का अंदाजा हो गया है और अब वह भारत के खिलाफ कोई शरारत करने से पहले दस बार सोचेगा।

आने वाले दिनों में बार-बार दोहराने के जरिए, जीत के इन दावों को और कई गुना फुलाने की ही कोशिश नहीं की जा रही हो, तो ही हैरानी की बात होगी। विडंबनापूर्ण तरीके से यहां उनके लिए गोदी मीडिया का वह कुख्यात रूप से अतिरंजित प्रचार भी, किसी न किसी तरह से प्रयोग में आ रहा हो सकता है, जिसकी इस तरह प्रचार उपयोगिता को ही पहचान कर, सत्ताधारी ताकतों ने आधिकारिक स्तर पर उनके ऊल-जुलूल दावों से दूरी बनाने के बावजूद, उन्हें रोकना तो दूर, टोकने तक की कोई जरूरत नहीं समझी थी। दूसरी ओर, लड़ाई के संदर्भ में फेक न्यूज और भारत-विरोधी खबरों पर अंकुश लगाने के नाम पर, मोदी सरकार के प्रति आलोचात्मक रुख रखने वाले कई यूट्यूब चैनलों सहित सोशल मीडिया प्लेटफार्म, एक्स पर एक साथ पूरे आठ हजार खातों को रोकने के लिए, जबर्दस्त सरकारी प्रहार किया गया था। इसी सिलसिले में लोकप्रिय डिजिटल समाचार प्लेटफार्म, दवायर तक पर सरकार की गाज गिरी थी। ऐसी ही गाज़ चर्चित पत्रकार, पुण्यप्रसून वाजपेयी के यूट्यूब चैनल पर भी गिरी थी।बहरहाल, ये सारी प्रचार कोशिशें अपनी जगह, सत्ताधारियों के लिए अपनी समर्थक कतारों से भी इस अचानक खत्म हुई लड़ाई को अपनी और सबसे बढ़कर नरेंद्र मोदी की जीत मनवाना, आसान नहीं हो रहा है। इसके सबूत के तौर पर हम, 10 तारीख की शाम संवाददाता सम्मेलन में युद्ध विराम की घोषणा करने मात्र के लिए, विदेश सचिव मिस्त्री को ही नहीं, उनके पूरे परिवार को ही, जिस तरह की भीषण ट्रोलिंग का सामना करना पड़ रहा है, उसे रखना चाहते हैं। कहने की जरूरत जरूरत नहीं है कि इस संक्षिप्त लड़ाई के दौरान खासतौर पर देश का चेहरा बने रहे विदेश सचिव के परिवार की इस तरह की भीषण ट्रोलिंग शर्मनाक है। लेकिन, सिर्फ उक्त निर्णय की घोषणा करने के लिए मिस्त्री की इस तरह की ट्रोलिंग से साफ हो जाता है कि %जीत% का नैरेटिव, खुद सत्ताधारी संघ-भाजपा की कतारों के गले से नीचे नहीं उतर रहा है और वे अपना फ्रस्टेशन निकालने के लिए किसी अपेक्षाकृत कमजोर शिकार की तलाश में हैं। कमजोर शिकार की तलाश में इसलिए कि वास्तव में जंगबंदी का फैसला लेने वालों, नंबर वन, नंबर टू आदि के निर्णय पर सीधे सवाल उठाने की, उनमें हिम्मत नहीं है।

इस संघी ट्रोल सेना के मिस्त्री पर इस तरह झपट पड़ने के खिलाफ सत्तापक्ष से इन पंक्तियों के लिखे जाने तक किसी ने चूं तक नहीं की थी। इसकी वजह समझना मुश्किल भी नहीं है। इस तरह की सेना को, शिकारी कुत्तों की तरह लहकाया तो जा सकता है, लेकिन अंकुश में नहीं रखा जा सकता। यही इस परिघटना का चरित्र है। इस सिलसिले में आईएएस एसोसिएशन के अलावा शासन की ओर से किसी के हस्तक्षेप न करने से बरबस, कई साल पहले की घटना याद आ जाती है। तब नरेंद्र मोदी सरकार के पहले कार्यकाल के दौरान, तब तक भाजपा के शीर्ष नेताओं में मानी जाने वाली, तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को, उनके

मंत्रालय से जुड़े किसी छोटे से काम के लिए, जो इस ट्रोल पलटन को नागवार गुजरा था, भीषण तरीके से ट्रोल किया गया था। बुजुर्ग नेता के पति तक को इसमें नहीं बक्शा गया था। इसके बावजूद, उस समय भी संघ-भाजपा का कोई नेता, सुषमा स्वराज की हिमायत में सामने नहीं आया था। बहरहाल, इतने पीछे क्यों जाएं। मिस्त्री से चंद रोज पहले ही, पहलगाम में ही आतंकवादियों के हाथों मारे गए नौसेना अधिकारी की विधवा, हिमांशी नरवाल को इसी संघी ट्रोल सेना ने सिर्फ इतना कहने के लिए बुरी तरह से ट्रोल किया था कि हमें न्याय चाहिए, लेकिन हम नहीं चाहते हैं कि कश्मीरियों के, मुसलमानों के पीछे पड़ जाया जाए। और यह भी संयोग ही नहीं है कि हिमांशी नरवाल और मिस्त्री की पुत्री, दोनों को ही उनके जेएनयू नेक्शन के हवाले से इस ट्रोलिंग का निशाना बनाया गया है।बेशक, जिस तरह से यह युद्धविराम हुआ है, इस संघी ट्रोल सेना में ही नहीं, आम लोगों में भी उस पर काफी असंतोष है। इस असंतोष की एक वजह तो यह युद्धविराम, अमेरिका के हस्तक्षेप से होना ही है। सभी जानते हैं कि शिमला समझौते के बाद से भारत इस रुख पर दृढ़ रहा है कि भारत-पाकिस्तान के बीच जो भी विवाद हैं, जिसमें कश्मीर विवाद भी शामिल है, द्विपक्षीय मामला ही हैं और इसमें किसी तीसरे पक्ष का दखल मंजूर नहीं है। इसने, कश्मीर के मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने की पाकिस्तान की कोशिशों से भारत को निजात दिलायी है। लेकिन, अमरीकी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा विदेश सचिव के सार्वजनिक बयानों के बाद, इसमें किसी संदेह की गुंजाइश नहीं रह गयी है कि अमेरिका की मध्यस्थता में ही यह युद्धविराम हुआ है। और यह भारत के बहु-प्रचारित रुख के लिए एक बड़ा धक्का है।लेकिन, आम नाराजगी सिर्फ अमेरिका के दखल के लिए गुंजाइश बनाए जाने पर ही नहीं है। नाराजगी खुद इस युद्धविराम को लेकर भी है। सैन्य मामलों के विशेषज्ञों से लेकर, आम लोग यह समझ पाने में असमर्थ हैं कि आखिरकार, इस ऑपरेशन सिंदूर का हासिल क्या है? सैन्य मामलों के जानकार, जीत और कामयाबी के दावों को ज्यादा महत्व देने के लिए तैयार नहीं हैं। और इनमें जंगबंदी पर भावनात्मक प्रतिक्रिया करने वालों और अनाप-शनाप मांगें करने वालों से अलग, ऐसे वस्तुगत नजरिया अपनाने वाले भी शामिल हैं, जो यह जानते भी हैं और मानते भी हैं कि ऐसी लड़ाइयों का अंत, युद्धविराम में ही होता है और युद्ध जितना कम चले और युद्धविराम जितना जल्दी हो, सभी के लिए उतना ही बेहतर होता है।

इस जंगबंदी से उठने वाला असली मुद्दा यह है कि अगर इस तरह के परिणामों पर ही जंगबंदी होनी थी, तो क्या जंग शुरू किए जाने की रणनीति ही गलत नहीं थी? बेशक, पहलगाम की नृशंसता को बिना दंड के नहीं छोड़ा जा सकता था। लेकिन, इसके लिए जो रणनीति आपरेशन सिंदूर के नाम से मोदी सरकार ने अपनायी, वह इकलौती रणनीति तो नहीं थी। इससे भिन्न, क्या 26/11 के बाद भारत द्वारा अपनायी गयी रणनीति ही कहीं बेहतर नहीं थी, जिसमें मुंबई पर हमला करने वाले सभी आतंकवादियों को न सिर्फ मार गिराया गया था और जिंदा पकड़े गए इकलौते आतंकवादी अजमल कस्साब को बाकायदा कानूनी प्रक्रिया का पालन कर फांसी दी गयी थी, आतंकवादियों के पाकिस्तान में बैठे हेंडलरों तथा कुल मिलाकर पाकिस्तान की संलिप्तता को भी, व्यापक रूप से बेनकाब करना संभव हुआ था। इसके मुकाबले, मोदी सरकार ने सैन्य ऑपरेशन का जो नाटकीय तरीका अपनाया, उसका हासिल कहीं कम है और कीमत कहीं ज्यादा है। इसके बावजूद, मोदी सरकार ने वही रास्ता अपनाया, जबकि उन्हें बखूबी पता था कि इसका परिणाम ऐसे शस्त्र विराम में होना है।

मोदी सरकार ने आपरेशन सिंदूर का ही रास्ता क्यों अपनाया, इसका कारण समझना कोई बहुत मुश्किल भी नहीं है। इन कारणों की शुरूआत, पहलगाम की घटना के लिए जिम्मेदार, भारी सुरक्षा चूक पर पर्दा डालने की जरूरत से होती है। इस सुरक्षा चूक को यह सच और भी खटकने वाला बना देता है कि पिछले छः साल से ज्यादा से जम्मू-कश्मीर में वास्तविक सत्ता केंद्र सरकार के हाथों में है और इसके लिए वहां तमाम जनतांत्रिक प्रक्रियाओं की इस सरकार ने बाकायदा हत्या की है। इस पर्दापोशी के लिए ही ऑपरेशन सिंदूर का ईवेंट आयोजित किया जाता है, जैसी कि नरेंद्र मोदी की जानी-पहचानी शैली है। और युद्ध के इस ईवेंट का आयोजन यह जानते हुए भी किया जाता है .

हर रिश्ता बड़ी ही ईमानदारी से निभाया भगवान श्रीकृष्ण ने

भगवान श्रीकृष्ण ने हर रिश्ता बड़ी ही ईमानदारी से निभाया और हर रिश्तों को उन्होंने महत्व दिया। आओ जानते हैं कि इस संबंध में कुछ खास जानकारी।

मित्रता का रिश्ता

भगवान श्रीकृष्ण के हजारों सखा या कहें कि मित्र थे। श्रीकृष्ण के सखा सुदामा, श्रीदामा, मधुमंगल, सुबाहु, सुबल, भद्र, सुभद्र, मणिभद्र, भोज, तोककृष्ण, वरूथप, मधुकंड, विशाल, रसाल, मकरन्द, सदानन्द, चन्द्रहास, बकुल, शारद, बुद्धिप्रकाश, अर्जुन आदि थे। श्रीकृष्ण की सखियां भी हजारों थीं। राधा, ललिता आदि सहित कृष्ण की 8 सखियां थीं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार सखियों के नाम इस तरह हैं- चन्द्रावली, श्यामा, शैव्या, पद्या, राधा, ललिता, विशाखा तथा भद्रा। कुछ जगह ये नाम इस प्रकार हैं- चित्रा, सुदेवी, ललिता, विशाखा, चम्पकलता, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगदेवी और सुदेवी। कुछ जगह पर ललिता, विशाखा, चम्पकलता, चित्रादेवी, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगदेवी और कृत्रिमा (मनेली)। इनमें से

गई सभी महिलाएं कृष्ण की सखियां थीं। द्रौपदी भी श्रीकृष्ण की सखी थीं। श्रीकृष्ण ने सभी के साथ अंत तक मित्रता का संबंध निभाया।

प्रेमी कृष्ण

कृष्ण को चाहने वाली अनेक गोपियां और प्रेमिकाएं थीं। कृष्ण-भक्त कवियों ने अपने काव्य में गोपी-कृष्ण की रासलीला को प्रमुख स्थान दिया है। पुराणों में गोपी-कृष्ण के प्रेम संबंधों को आध्यात्मिक और अति श्रांगारिक रूप दिया गया है। महाभारत में यह आध्यात्मिक रूप नहीं मिलता, लेकिन पुराणों में मिलता है। उनकी प्रेमिका राधा, रुक्मिणी और ललिता की ज्यादा चर्चा होती है।

पति कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण की 8 पत्नियां थीं- रुक्मिणी, जाम्बवंती, सत्यभामा, मित्रवंदा, सत्या, लक्ष्मणा, भद्रा और कालिंदी। इनसे श्रीकृष्ण को लगभग 80 पुत्र हुए थे।

भाई कृष्ण

कृष्ण की 3 बहनें थीं- एकानंगा (यह यशोदा की पुत्री थी), सुभद्रा और द्रौपदी (मानस भगिनी)। कृष्ण के भाइयों में नेमिनाथ, बलराम और गद थे।

श्रीकृष्ण के माता पिता

श्रीकृष्ण के माता पिता वसुदेव और देवकी थे, परंतु उनके पालक माता पिता नंदबाबा और माता यशोदा थीं। श्रीकृष्ण ने इन्हीं के साथ अपनी सभी सौतेली माता रोहिणी आदि सभी के सात बराबरी का रिश्ता रखा।

अन्य रिश्तों में श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण ने अपनी बुवाओं से भी खूब रिश्ता निभाया था। कुंती और सुतासुभा से भी रिश्ता निभाया। कुंती को वचन दिया था कि मैं तुम्हारे पुत्रों की रक्षा करूंगा और सुतासुभा को वचन दिया था कि मैं तुम्हारे पुत्र शिशुपाल के 100 अपराध क्षमा करूंगा। इसी प्रकार सुभद्रा का विवाह कृष्ण ने अपनी बुआ

पुत्र साम्ब का विवाह दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा से किया था। श्रीकृष्ण के रिश्तों की बात करें तो वे बहुत ही उलझे हुए थे। श्रीकृष्ण ने अपने भांजे अभिमन्यु को शिक्षा दी थी और उन्होंने ही उसके पुत्र की गर्भ में रक्षा की थी।

शत्रुता का रिश्ता

इसी तरह श्रीकृष्ण ने अपनी शत्रुता का रिश्ता भी अच्छे से निभाया था। उन्होंने कंस, जरासंध, शिशुपाल, भौमासुर, कालय यवन, पौंड्रक आदि सभी शत्रुओं को सुधरने के भरपूर मौका दिया और अंत में उनका वध कर दिया।

रक्षक कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण ने किशोरावस्था में ही चाणूर और मुष्टिक जैसे खतरनाक मल्लों का वध किया था, साथ ही उन्होंने इंद्र के प्रकोप के चलते जब वृंदावन आदि ब्रज क्षेत्र में जलप्रलय हो चली थी, तब गोवर्धन पर्वत अपनी अंगुली पर उठाकर सभी ग्रामवासियों की रक्षा की थी।

शिष्य कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण के गुरु सांदीपनी थे। उनका आश्रम अवंतिका (उज्जैन) में था। कहते हैं कि उन्होंने जैन धर्म में 22वें तीर्थंकर नेमीनाथजी से भी ज्ञान ग्रहण किया था। श्रीकृष्ण गुरु दीक्षा में सांदीपनी के मृत पुत्र को यमराज से मुक्ति कराकर ले आए थे।

चंद्र की उत्पत्ति कैसे हुई? क्या कहते हैं पुराण? चंद्रमा की जन्म कथा

सुंदर सलोने चंद्रमा को देवताओं के समान ही पूजनीय माना गया है। चंद्रमा के जन्म की कहानी पुराणों में अलग-अलग मिलती है। ज्योतिष और वेदों में चंद्र को मन का कारक कहा गया है। वैदिक साहित्य में सोम का स्थान भी प्रमुख देवताओं में मिलता है। अग्नि, इंद्र, सूर्य आदि देवों के समान ही सोम की स्तुति के मंत्रों की भी रचना ऋषियों द्वारा की गई है।

पुराणों के अनुसार चंद्र की उत्पत्ति

मत्स्य एवं अग्नि पुराण के अनुसार जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचने का विचार किया तो सबसे पहले अपने मानसिक संकल्प से मानस पुत्रों की रचना की। उनमें से एक मानस पुत्र ऋषि अत्रि का विवाह ऋषि कर्दम की कन्या अनुसुइया से हुआ जिससे दुर्वासा, दत्तात्रेय व सोम तीन पुत्र हुए। सोम चंद्र का ही एक नाम है। पद्म पुराण में चंद्र के जन्म का अन्य वृतांत दिया गया है। ब्रह्मा ने अपने मानस पुत्र अत्रि को सृष्टि का विस्तार करने की आज्ञा दी। महर्षि अत्रि ने अनुत्तर नाम का तप आरंभ किया। तप काल में एक दिन महर्षि के नेत्रों से जल की कुछ बूंदें टपक पड़ी जो बहुत प्रकाशमय थीं। दिशाओं ने स्त्री रूप में आकर पुत्र प्राप्ति की कामना से उन बूंदों को ग्रहण कर लिया जो उनके उदर में गर्भ रूप में स्थित हो गया। परंतु उस प्रकाशमान गर्भ को दिशाएं धारण न रख सकीं और त्याग दिया।

उस त्यागे हुए गर्भ को ब्रह्मा ने पुरुष रूप दिया जो चंद्रमा के नाम से प्रख्यात हुए। देवताओं, ऋषियों व गंधर्वों आदि ने उनकी स्तुति की। उनके ही तेज से पृथ्वी पर दिव्य औषधियां उत्पन्न हुई। ब्रह्मा जी ने चंद्र को नक्षत्र, वनस्पतियों, ब्राह्मण व तप का स्वामी नियुक्त किया।

स्कंद पुराण के अनुसार जब देवों तथा दैत्यों ने क्षीर सागर का मंथन किया था तो उस में से चौदह रत्न निकले थे। चंद्रमा उन्हीं चौदह रत्नों में से एक है जिसे लोक कल्याण हेतु, उसी मंथन से प्राप्त कालकूट विष को पी जाने वाले भगवान शंकर ने अपने मस्तक पर धारण कर लिया। पर ग्रह के रूप में चंद्र की उपस्थिति मंथन से पूर्व भी सिद्ध होती है। स्कंद पुराण के ही माहेश्वर खंड में गर्गाचार्य ने समुद्र मंथन का मुहूर्त निकालते हुए देवों को कहा कि इस समय सभी ग्रह अनुकूल हैं। चंद्रमा से गुरु का शुभ योग है। तुम्हारे कार्य की सिद्धि के लिए चंद्र बल उत्तम है। यह गोमंत मुहूर्त तुम्हें विजय देने वाला है।

अत: यह संभव है कि चंद्रमा के विभिन्न अंशों का जन्म विभिन्न कालों में हुआ हो। चंद्र का विवाह दक्ष प्रजापति की नक्षत्र रूपी 27 कन्याओं से हुआ जिनसे अनेक प्रतिभाशाली पुत्र हुए। इन्हीं 27 नक्षत्रों के भोग से एक चंद्र मास पूर्ण होता है।

इस मंदिर में मूर्तियों से निकलती हैं आवाजें

पत्थर की होती है, लेकिन जिस भी देवी या देवता की यह मूर्ति बनाई गई है उन देवी या देवताओं के अस्तित्व और उनकी शक्ति को नहीं नकारा जा सकता। आए दिन देवी या देवता अपने होने का अहसास कराते रहते हैं। इसी अहसास को चमत्कार कहा जाता है। ऐसा ही एक चमत्कार बिहार के बक्सर में स्थित देवी के एक मंदिर में देखने को मिला। यहां आकर आपको दुर्गा शक्ति के होने पर यकीन हो जाएगा क्योंकि यहां की मूर्तियां आपसे बात करती है। जब वैज्ञानिकों ने इसकी खोज की तो उन्होंने भी इस बात से इनकार नहीं किया। यह मंदिर 400 वर्ष पुराना है। प्रसिद्ध तांत्रिक भवानी मिश्र ने करीब 400 वर्ष पहले इस मंदिर की स्थापना की थी। तब से आज तक इस मंदिर में उन्हीं के परिवार के सदस्य पुजारी बनते रहे हैं। तंत्र साधना से ही यहां माता की प्राण प्रतिष्ठा की गई है। दरअसल, तंत्र साधना के लिए प्रसिद्ध बिहार के इस इकलौते राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर में यहां पर किसी के नहीं होने पर आवाजें सुनाई तेती हैं। इस मंदिर में दस महाविद्याओं काली, त्रिपुर भैरवी, धुमावती, तारा, छिन्न मस्ता, षोडसी, मातंगड़ी, कमला, उग्र तारा, भुवनेश्वरी की मूर्तियां स्थापित हैं। इसके अलावा यहां

काल भैरव व मातंगी भैरव की प्रतिमा स्थापित की गई है। यहां साधना करने वाले हर साधकों की हर तरह की मनोकामना पूर्ण होती है। देर रात तक साधक इस मंदिर में साधना में लीन रहते हैं। मंदिर में प्रधान देवी राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी है। तांत्रिकों की आस्था इस मंदिर के प्रति अटूट

तरह की आवाजें सुनाई देती हैं। राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर की सबसे अनोखी मान्यता यह है कि निस्तब्ध निशा में यहां स्थापित मूर्तियों से बोलने की आवाजें आती हैं। मध्य-रात्रि में जब लोग यहां से गुजरते हैं तो उन्हें आवाजें सुनाई पड़ती हैं। वैज्ञानिकों की मानें, तो यह कोई वहम नहीं है। इस

पर शब्द भ्रमण करते रहते हैं। वैज्ञानिकों ने यह भी मान लिया है कि हां पर कुछ न कुछ अजीब घटित होता है, जिससे कि यहां पर आवाज आती है। मानो या न मानो यह एक चमत्कार ही है कि यहां अजीब तरह के आवाजें आती है जो कि किसी मानव की आवाजों की तरह की है। माना जाता है कि संपूर्ण अखंड भारत में जहां भी माता के शक्तिपीठ हैं वे सभी जागृत और सिद्ध शक्तिपीठ हैं।

क्या गाय, कुत्ते और पक्षियों को पानी पिलाने से खुल जाते हैं किस्मत के दरवाजे

हिन्दू धर्म में कुछ पशु और पक्षियों को बहुत ही शुभ माना जाता है। मान्यता के अनुसार इन्हें अन्न और जल देने से जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। प्रत्येक हिन्दू घर में जब भोजन बनता है तो पहली रोटी गाय के लिए और अंतिम रोटी कुत्ते के लिए होती है। भोजन करने के पूर्व अग्नि को उसका कुछ भाग अर्पित किया जाता है जिसे अग्निहोत्र कर्म कहते हैं। प्रत्येक हिन्दू को भोजन करते वक्त थाली में से 3 ग्रास (कोल) निकालकर अलग रखना होता है। यह तीन कोल ब्रह्मा, विष्णु और महेश के लिए या मन कथन के अनुसार गाय, कौए और कुत्ते के लिए भी रखा जा सकता है।

गाय - गाय को पत्ते पर भोजन परोसकर जल देने से भाग्य जागृत होता है। गाय में सकारात्मक ऊर्जा का भंडार होता है, जो भाग्य को जागृत करने की क्षमता रखती है। गाय को अन्न और जल देने से सभी तरह के संकट दूर होकर घर में सुख, शांति और समृद्धि के द्वारा खुल जाते हैं। प्रतिदिन गाय को रोटी खिलाने गुरु और शुक्र बलवान होता और धन-समृद्धि बढ़ती है।

कुत्ता - कुत्त को पत्ते पर भोजन परोसकर जल पिलाने से भैरव महाराज प्रसन्न होते हैं और हर तरह के आकस्मिक संकटों से वे भक्त की रक्षा करते हैं। कुत्ता आपकी राहु, केतु के बुरे प्रभाव और यमदूत, भूत प्रेत आदि से रक्षा करता है। कुत्ते को प्रतिदिन भोजन देने से जहां दुश्मनों का भय मिट जाता है वहीं व्यक्ति निडर हो जाता है। ज्योतिषी के अनुसार केतु का प्रतीक है कुत्ता। कुत्ता पालने या कुत्ते की सेवा करने से केतु का अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाता है। पितृ पक्ष में कुत्तों को मीठी रोटी खिलानी चाहिए।

कौवा- कौए के लिए छत या भूमि पर भोजन परोसकर सकोरे में उसके लिए जल रखा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कौआ को यमदूत, पितर और देवपुत्र भी माना गया है। कौए को भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पहले से ही आभास हो जाता है। कहते हैं कि यदि कौआ आपका भोजन ग्रहण कर ले तो समझो आपके पितर आपसे प्रसन्न और तृप्त हैं और यदि नहीं करें तो समझो कि आपके पितर आपसे नाराज और अतृप्त हैं।

चींटी - चींटियों के लिए पत्ते पर भोजन परोसा जाता। उनके बिल हों, वहां चूरा कर भोजन डाला जाता है। इससे सभी तरह के संकट मिट जाते हैं और घर परिवार में सुख एवं समृद्धि आती है।

देवता - देवबलि अर्थात पत्ते पर देवी देवतों और पितरों को भोजन परोसा जाता है। बाद में इसे उठाकर घर से बाहर उचित स्थान रख दिया जाता है।

पक्षी - पक्षियों को जल अर्पित करने से पुण्य की प्राप्ति होती है और साथ ही हमारे जीवन के संकट मिट जाते हैं। नियमित जल पिलाने से भाग्य जागृत हो जाते हैं और किसी कार्य में आ रही रुकावट दूर होती है। हर कार्य आसानी से होने लगते हैं।

कुंडली की जांचे पन्ना पहनने के नुकसान भी है

पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। बुध ग्रह वाणी, व्यापार, बहन, बुआ, मौसी आदि का कारक है। यह रत्न गहरे से हल्के हरे रंग का होता है। पन्ना मुख्यतः 5 रंगों में पाया जाता है। तोते के पंख के समान रंग वाला, पानी के रंग जैसा, सरेस के पुष्प के रंगों वाला, मयूरपंख जैसा और हलके संदुल पुष्प के समान होता है। पन्ना रत्न किसे पहनना चाहिए और किसे नहीं यह जानना भी जरूरी है, क्योंकि कुंडली की जांच किए बगैर इसे पहनने के नुकसान भी है।

किसे पन्ना धारण करना चाहिए

- लग्न कन्या या मिथुन है तो पन्ना रत्न धारण किया जा सकता है, लेकिन यह भी देखना जरूरी है कि लग्न में कौनसा ग्रह है या लग्न के सामने सप्तम भाव में कौनसा ग्रह है।
- कुंडली को देखकर यदि किसी रोगी को पन्ना पहनाया जाता है तो उसके बल में वृद्धि होती है आरोग्य का सुख मिलता है।
- मिथुन लग्न वाले यदि पन्ना धारण करे तो पारिवारिक परेशानी कम होती है।
- कन्या लग्न यदि पन्ना धारण करे तो राज्य, व्यापार, पिता, नौकरी, शासकीय कार्यों में लाभ पा सकते हैं।
- यदि बुध की महादशा या अंतरदशा चल रही हो और बुध 8वें या 12वें भाव में नहीं हो तो पन्ना पहनने से लाभ मिलेगा।
- यदि बुध, मंगल, शनि, राहु या केतु के साथ स्थित हो या उस पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि हो तो पन्ना पहना जा सकता है। इससे नौकरी व्यवसाय में रुकावट दूर होगी।
- लाल किताब अनुसार यदि किसी घर में कोई ग्रह सोया हुआ हो तो उस घर को और उस ग्रह के प्रभाव को जाग्रत करने के लिए उस घर का रत्न धारण करें। जैसे यदि तीसरे में बुध नहीं है तो तीसरे के लिए बुध का रत्न धारण करें। इससे बुध के अच्छे प्रभाव मिलना प्रारंभ होंगे।
- यदि आपकी कुंडली में बुध मीन राशि का होकर बुरा प्रभाव दे रहा है तो पन्ना पहन सकते हैं।

पन्ना किसे धारण नहीं करना चाहिए

- लाल किताब के अनुसार बुध तीसरे या 12वें हो तो पन्ना नही पहनना चाहिए इससे नुकसान होगा।
- ज्योतिष के अनुसार 6, 8, 12 का बुध स्वामी हो तो पन्ना पहनने से अचानक नुकसान हो सकता है। इसलिए पहले किसी ज्योतिष को कुंडली दिखाएं फिर ही पहनें।
- यदि बुध की महादशा चल रही है और बुध 8वें या 12वें भाव में बैठा है तो भी पन्ना धारण करने से समस्या उत्पन्न हो सकती है।
- नकली, अशुद्ध, टूटा-फूटा, धब्बेदार, चमकदार, स्वर्ण रंग का या अन्य रंग का पन्ना धारण करने से धन, समृद्धि और संतान पक्ष का नाश हो जाता है।
- उचित धातु, नक्षत्र, दिन और ग्रहों की स्थिति देखे बगैर पन्ना धारण किया है तो वह भी नुकसानदायक सिद्ध हो सकता है।

पन्ना पहनने के फायदे

- पन्ना धारण करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। इससे बुद्धि तेज होने लगती है।
- हाजमा अच्छा करने के लिए भी इसे धारण करते हैं।
- नौकरी और व्यापार में उन्नति के लिए भी इसे धारण करने की सलाह दी जाती है।
- पन्ना धारण करने से वाणी प्रभावशाली हो जाती है।
- पन्ना धारण करने से अधूरी तमन्नाएं पूरी होने लगती हैं।
- घर में पन्ना रत्न उचित स्थान पर रखने से अन्न-धन्न आदि में वृद्धि होती है, सुयोग्य संतान का सुख मिलता है।
- पन्ना पहनने से यदि बुद्ध उत्तम प्रभाव देने लगता है तो जातक की बहन की जिंदगी में भी परेशानियां कम हो जाती है।

फलों से करें अपनी पाचनक्रिया दुरुस्त!

फलों में प्राकृतिक मिठास के साथ-साथ ऐसे-ऐसे मिनरल होते हैं जो आपके शरीर को बीमारियों से बचाते हैं साथ ही ये ऊर्जा भी प्रदान करते हैं। यदि शरीर में विटामिनों और पाचनक्रिया में कोई कमी आ जाए तो आपको अपने रोजाना के आहार में फलों को शामिल करना चाहिए जिनमें कि सभी पोषक तत्व और प्रोटीन हों। एक्सपर्ट्स के अनुसार सभी को रोजाना दो से तीन तरह के फल खाने चाहिए ताकि आवश्यक ऊर्जा मिल सके। फल आपके शरीर को शुद्ध भी करते हैं।केला और पपीता जैसे फल सुबह खाली पेट खाने चाहिए। इन दोनों में फाइबर और सोडियम की प्रचुर मात्रा होती है जो कि आपको दिनभर एक्टिव बनाए रखते हैं। साथ ही कुछ ऐसे फल हैं जो कि खाना खाने के बाद खाने चाहिए। ऐसे फल पाचन को सही बनाए रखते हैं, नाशपती और अनानास ऐसे ही फल हैं जिनमें एंजाइम्स और फाइबर की अधिकता होती है जिससे गैस्ट्रोइंटेस्टीनल सिस्टम सही तरह काम करता है। यह पचने में मुश्किल होने वाले खाद्य पदार्थों को भी विभाजित कर उनसे प्रोटीन निकालने में मददगार है। अच्छी पाचन क्रिया के लिए ऐसे ही कुछ फल हैं जो आपको खाने के बाद खाने चाहिए।

बेहतर पाचन क्रिया के लिए ये फल खाएं

1. नाशपती : ये पेट के लिए अच्छा फल है जिसे आप सप्ताह में एक बार खा सकते हैं। हाल ही में हुए अध्ययन के अनुसार नाशपती में फाइबर होता है जिससे दस्त साफ लगता है। नाशपती सोडियम फ्री, कोलेस्ट्रॉल फ्री, और फैट फ्री होता है और इसमें 190 मिलीग्राम पोटेशियम होता है जो कि पाचन को मजबूत करता है।

2. सेब: इसमें भी फाइबर की अधिकता होती है यदि आपको पाचन से संबंधित समस्या है तो यह आपके लिए एक अच्छा फल है। खाने को सही तरह पचाने के लिए खाना खाने के 15 मिनट बाद एक सेब खा सकते हैं।

3. रसभरी : यदि आपको मधुमेह और पाचन की समस्या भी है तो रसभरी आपके लिए एक अच्छा विकल्प है। इनमें फाइबर अधिक मात्रा में है और शुगर कम होता है। इनमें कैलोरीज भी कम होती हैं, यह पाचन क्रिया के लिए एक अच्छा फल है।

4. पपीता : यदि आप 24 घंटे के अंदर ही अपने पाचन को सुधारना चाहते हैं तो कच्चा पपीता आपके लिए अच्छा है। यदि आंत की कमजोरी के कारण आप में विटामिन्स का संचय नहीं होता है तो आप इससे विटामिन ''सी' प्राप्त कर सकते हैं। इसमें पपाइन होता है जो कि प्रोटीन को विभाजित करता है और खाने को पाचन योग्य बनाता है।

5. केला : यह आपके आंतों के कार्य को सही बनाए रखता है, आप इसे खाना खाने के बाद या पहले कभी भी खा सकते हैं। दोनों ही तरीकों से यह आपके पेट के लिए फायदेमंद है।

6. अनानास : पाइन एप्पल जीभ पर अजीब स्वाद छोड़ने के कारण कई लोग अनानास का सेवन नहीं करते हैं। लेकिन यह पाचन के लिए अच्छा फल है, इसमें ब्रोमेलिन इंजाइम होता है जो कि खाने को पचाने में मददगार है।

7. अंजीर : एक कप सूखे अंजीर में 15 ग्राम फाइबर होता है जो कि खाने को विभाजित कर उसे पचाने के लिए पर्याप्त है। खाने के बाद एक कप अंजीर का सेवन पाचन क्रिया के लिए सही है।

8. एवोकैडो : इस फल में पोषक तत्वों, विटामिन्स और एनर्जी की भरपूर मात्रा होती है। भारी खाने को पचाने के लिए खाने के बाद आधे एवोकैडो का सेवन फायदेमंद होता है।

झूठको बढ़ावा दे रहा मोबाइल

आम आदमी की जरूरत बन चुका मोबाइल फोन झूठ बोलने की संस्कृति को हवा दे रहा है। व्यस्त जीवनशैली के बीच काम के बोझ तले पेशेवर लोग जाने-अनजाने झूठ बोलने की आदत का शिकार हो रहे हैं और यह उन्हें सिखा रहा है मोबाइल फोन। इससे मनोचिकित्सक भी इत्तेफाक रखते हैं कि मोबाइल क्रांति ने आम आदमी की जीवनशैली को पूरी तरह बदल दिया है।

मोबाइल फोन के लाभ अनेक हैं मगर हानियां भी कम नहीं हैं। समय की पाबंदी के बीच एक समय कई ग्राहकों को एक साथ निपटाने की जद्दोजहद में पेशेवर लोग कई बार ग्राहक को संतुष्ट करने के लिहाज से अपनी स्थिति और काम के बारे में झूठी जानकारी देते हैं और धीरे-धीरे उनकी यह आदत कब उनकी कार्यपणाली में समा जाती है, इसका उन्हें भी पता नहीं चलता है। किंग जार्ज चिकित्सा विविद्यालय (केजीएमयू) में मनोरोग विभाग के प्रभारी डा पीके दलाल ने शनिवार को यहां कहा ''बचपन से हमें नसीहत दी जाती रही है कि झूठ बोलना गंदी बात है मगर यह गंदी आदत दशकों पुरानी है और बात-बात में झूठ बोलने वाले लोगों की पहले भी कोई कमी नहीं थी। हालांकि इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि मोबाइल फोन के बढ़ते प्रचलन ने झूठ बोलने की आदत को बढ़ावा दिया है।'

डा. दलाल ने कहा कि काम के बोझ तले झूठ बोलने वाले लोग इस बात से अनजान रहते हैं कि उनकी बातों को उनका बच्चा भी सुन रहा है। बच्चे जिज्ञासु होते हैं और वे घर और आसपास के बुजुगरे से ही संस्कार लेते हैं। ऐसे में वे बड़ों की देखा-देखी झूठ बोलने की आदत भी सीख सकते हैं। उन्होंने कहा कि बात-बात पर झूठ बोलने की आदत के शिकार लोग 'पैथॉलॉजिकल लाइंग डिसआर्डर' का शिकार हो सकते हैं। इसे 'एंटी सोशल पर्सनॉलिटी' की एक शाखा के रूप में जाना जाता है।

मनोचिकित्सक ने कहा कि अमेरिका से प्रकाशित पत्रिका 'कम्प्रेहेंसिव टेक्सट बुक ऑफ साइकोथेरैपी' के अनुसार भारत समेत दुनिया के ज्यादातर देशों में आमतौर पर 30 प्रतिशत लोग झूठ बोलने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते हैं। चिकित्सा विज्ञान में झूठ बोलने की आदत से निजात पाने का उपाय है, लेकिन यह 25 वर्ष से कम उम्र के लोगों पर ही अधिक प्रभावी रहता है जबकि इससे अधिक उम्र के लोगों की मानसिक क्षमता के स्थायित्व के कारण यह इलाज अधिकतर निष्प्रभावी ही साबित होता है। ऐसे लोग यदि स्वयं चाहें तो ही उन्हें इस रोग से मुक्ति मिल सकती है।

इस बारे में कानपुर के जानेमाने मनोचिकित्सक कलीम अहमद ने कहा 'पैथॉलॉजिकल लाइंग डिसआर्डर' का एक पहलू यह भी है कि बच्चों में पनपती ऐसी आदतों में यदि अभिभावक जल्द ध्यान नहीं देते हैं तो यह किशोरावस्था से ही अपराध के दलदल में फंस सकते हैं। अमेरिका समेत कई विकसित देशों में ऐसे मरीजों के लिए 'करेक्शन होम' होते हैं, जहां ''बिहेवियर थेरैपी' के जरिए उन्हें इस समस्या से छुटकारा दिलाया जाता है जबकि अपने देश में इस नाम को 'बाल सुधारगृह' के नाम से जाना जाता है। झूठ बोलने से ग्रसित बच्चों के अभिभावक से कहा जाता है कि वे बच्चे के सच बोलने पर उसे प्रोत्साहन के तौर पर उपहार दें जबकि झूठ बोलने पर दंड की हिदायत दें। बच्चों से यह भी कहें कि यदि उसने झूठ बोला तो उसकी कोई भी मांग नहीं मानी जाएगी। अभिभावक को यह भी चाहिए कि वे बच्चों के सामने आपस में कभी न झगड़ें और न ही झूठ का सहारा लें। घर में अनुशासन का माहौल बनाएं। झूठ बोलने पर बच्चों को मारने-पीटने की जगह कुछ समय के लिए उससे बात करना बंद कर दें।

दिमागी सेहत पर गंभीर असर डाल रही हैं सोशल साइट्स

टोरंटो। जो किशोर फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर प्रतिदिन दो घंटे से ज्यादा समय बिताते हैं, उनके लिए यह नया अध्ययन कुछ जानकारियों का खुलासा करता है। इसके हिसाब से सोशल नेटवर्किंग साइट्स के ज्यादा लंबे समय तक प्रयोग से किशोरों में आत्महत्या की भावना बढ़ाने वाले विचारों, मनोवैज्ञानिक परेशानियों और मानसिक विकारों के बढ़ने का खतरा रहता है और यह उनके मानसिक स्वास्थ्य को भी खराब करता है।शोधार्थियों का कहना है कि जो किशोर लंबे समय तक सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रयोग करते हैं, उन्हें मानसिक स्वास्थ्य सहायता की जरूरत है। उन्होंने कहा कि यह अध्ययन अभिभावकों को तो महत्वपूर्ण संदेश देता ही है, साथ ही मानसिक स्वास्थ्य सहायता सेवा प्रदाताओं के लिए अवसर भी है कि वे इन साइटों पर अपनी पहुंच बढ़ाएं। कनाडा में ओटावा पब्लिक हेल्थ के ह्यूग्यूस सांपसा-कयिंगा और रोजमंड लुईस ने सातवीं से 12वीं कक्षा तक के छात्रों के ओंटेरियो छात्र दवा उपभोग एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षण आंकड़ों का विश्लेषण किया। इनमें से लगभग 25 प्रतिशत छात्रों को दो घंटे से ज्यादा सोशल नेटवर्किंग साइट्स प्रयोग करने का आदी पाया गया। शोधार्थियों ने सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर बिताए वक्त की तुलना किशोरों के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों और आवश्यक मानसिक स्वास्थ्य सहायता जरूरतों से की। कैलिफोर्निया के सैन डिएगो के इंटरेक्टिव मीडिया इंस्टीट्यूट की ब्रेंडा के. वीडरहोल्ड ने कहा ''यह वह है जहां हम सोशल नेटवर्किंग साइट्स को पाते हैं, जो किसी के लिए परेशानी का सबब हैं और किसी के लिए समाधान।' उन्होंने कहा कि जैसा कि किशोर इन साइटों का प्रयोग करते हैं तो यह जन स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए अवसर की तरह है कि वे इस विस्तृत जनसंख्या तक पहुंचकर स्वास्थ्य सेवाओं और सहायता का यहां पर प्रचार करें। यह अध्ययन साइबर साइकलोजी, बिहेवियर एंड सोशल नेटवर्किंग जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें। शुभांक-6-8-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): आत्मविश्वास बढ़ेगा। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। मांगलिक कार्योंक्रमों का आयोजन होगा। शुभांक-2-5-8

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। शुभांक-5-7-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंग। शुभांक-4-5-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शुभांक-1-3-6

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। शुभांक-2-4-6

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-5-7-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। पुरुषार्थ का सहारा लें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नही। शुभांक-3-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। पुराने मित्र से मिलन होगा। स्वविवेक से कार्य करें। शुभांक-4-6-8

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। स्वविवेक से कार्य कर। शुभांक-3-6-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। यात्रा का योग। जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूंजी निवेश सोच-समझकर करें। शुभांक-2-4-6

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। शत्रुहानि की आशंका रहेगी। आय के योग बनेंगे। किसी की सफलता से प्रेरित होंगे। शुभांक-1-3-5

हंसी के फूव्वारें

'यार, एक बात समझ में नहीं आई,तुमने अपनी फर्म के लिए विकलाँग खजांची का चुनाव क्यों किया?' पहले मित्र ने जानना चाहा.

'ताकि फरार होने पर वह जल्द से जल्द पकड़ा जा सके.'दूसरे मित्र ने कारण बताया.

□ □ □

द्वार पर बहुत देर तक दस्तक पड़ने के कारण पति महोदय की नींद खुली,तो पत्नी को जगाते हुए बोली,'सुनती हो, बहुत देर से कोई हमारे द्वार पर दस्तक दे रहा है.'

'ओह ! तो तुम घर पर ही हो.' पत्नी उनींदे स्वर में बोली,'मैं तो यह सोचकर निश्चित थी कि द्वार पर तुम खड़े चिल्ला रहे हो.'

□ □ □

'मेरी घरवाली मेरे सिवा किसी और मर्द की ओर देखना तक पसंद नहीं करती.' पहले दोस्त ने बताया.

'पर यह बात आपको कैसे मालूम हुई ?'दूसरे दोस्त ने जानना चाहा.

'ऐसे कि कल जब मेरी घरवाली का एक परिचित घर आया, तो वह उसे देखती ही बोली, दफा हो जाओ मेरी नजरों से हमेशा के लिए. अब मैं तुम्हारा चेहरा तक देखना पसंद नहीं करती.' पहला मित्र बोला.

काकुरो पहेली - 4054

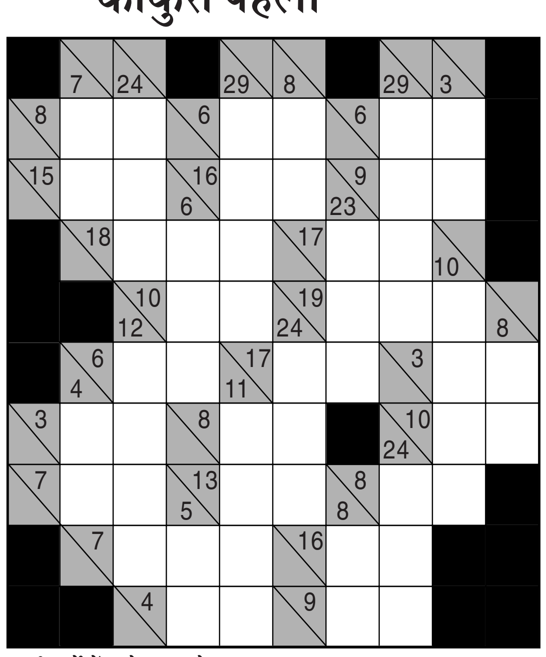

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 4053 का हल

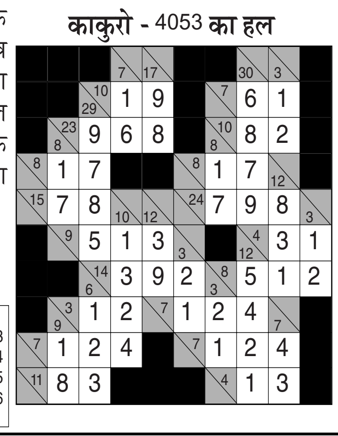

फिल्म वर्ग पहेली- 4054

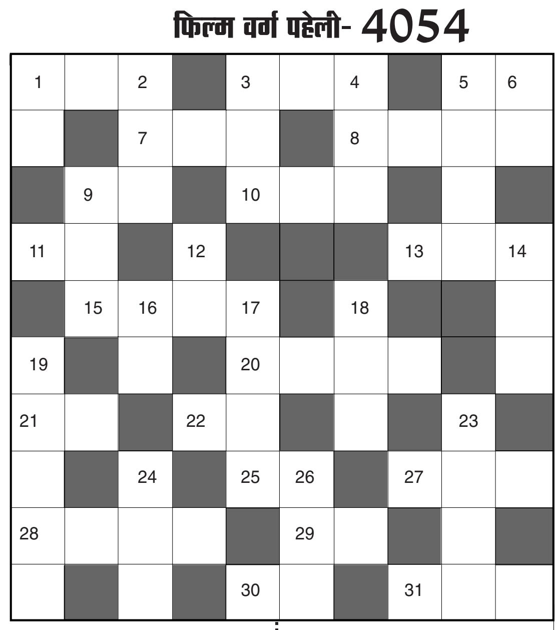

ऊपर से नीचे:-

१. 'दुनिया हसीनों का' गीत वाली बॉबी देओल, मनीषा, काजोल की फिल्म-२
२. अनिल धवन, नीतूसिंह की 'अपने दिल में जगह' गीत वाली फिल्म-३
३. 'मैं निकला' गीत वाली सनी देओल, अमीषा पटेल की फिल्म-३
४. करण दीवान, वैजयंती की 'दुनिया का मजा लेलो' गीत वाली फिल्म-३
५. 'किताबें बहुत सी' गीत वाली शाहरूख, काजोल, शिल्पा शेट्टी की फिल्म-४
६. राजेंद्रकुमार, माला सिन्हा की 'बांसुरी बजाय के' गीत वाली फिल्म-२
९. 'मिलने से पहले' गीत वाली शरद कपूर, मुकुल आनंद, सुष्मिता की फिल्म-३
१२. विवेक ओबेराय, दीया मिर्जा की 'दिल ही दिल में' गीत वाली फिल्म-२
१४. 'एक तो ये बैरी' गीत वाली दिलीपकुमार, शर्मिला की फिल्म-३
१६. रितिक, करीना की 'ए री रे एरी क्या है' गीत वाली फिल्म-२
१७. 'आपका चेहरा' गीत वाली धर्मेन्द्र, नसीर, सोनू, पल्लवी की फिल्म-४
१८. गोविंदा, ऋषिकपूर, नीलम, मीनाक्षी की 'तेरे डैडी ने दिया' गीत वाली फिल्म-३
१९. शाहरूख, सैफ, प्रीती जिंटा की 'कुछ तो हुआ है' गीत वाली फिल्म-२,१,१,१
२३. अमिताभ, सलमान, हेमा की 'चली चली फिर चली' गीत वाली फिल्म-४
२४. 'रूखी सूखी रोटी' गीत वाली फिल्म-३
२६. 'इंतहा हो गई' गीत वाली फिल्म-३

बायें से दायें:-

१. डिनो मारिया, बिपाशा बसु की 'जब दिल चुराए' गीत वाली फिल्म-३
३. 'ऐ हवा ये बता' गीत वाली धर्मेन्द्र, रेखा की फिल्म-३
५. सलमान, नगमा की 'चांदनी रात है' गीत वाली फिल्म-२
७. 'टुट गई तड़क करके' गीत वाली नाना पाटेकर, माधुरी की फिल्म-३
८. अनिल धवन, रेहाना सुल्तान की 'दिल बेचैन रहा' गीत वाली फिल्म-२,२
९. 'चाँदनी रूप की' गीत वाली संजयदत्त, सलमान खान, रवीना की फिल्म-२
१०. डैनी, विनोद मेहरा, मौसमी की 'संसार है एक' गीत वाली फिल्म-३
११. 'गाड़ी बुला रही है' गीत वाली धर्मेन्द्र हेमा की फिल्म-२
१३. जीतेन्द्र, रामेश्वरी की 'काहे बिंदिया लगाई' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'वो लड़की बहुत' गीत वाली अजय देवगन, नेहा धूपिया की फिल्म-४
२०. बॉबी, अक्षय खन्ना, अमीषा की 'दिल ने कर लिया' गीत वाली फिल्म-४
२१. 'मुझे साजन के' गीत वाली अनिल, जैकी, मनीषा, माधुरी की फिल्म-२
२२. सनी, सुनील, सेलिना की 'प्यार होने लगा' गीत वाली फिल्म-२
२५. 'क्या है तुम्हारा नाम' गीत वाली जैकी श्रॉफ, डिम्पल की फिल्म-२
२७. फरदीन खान, उर्मिला की 'दो प्यार करने वाले' गीत वाली फिल्म-३
२८. 'लाल लाल होठों पे' गीत वाली अजय देवगन, जूही की फिल्म-४
२९. फिल्म 'एलओसी' में अजय देवगन के साथ किस की जोड़ी है-२
३०. 'सोल्जर' में प्रीति का नायक?-२
३१. 'मेरे दिल का पता' गीत वाली राहुल राय, दीपक, पूजा की फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहेली- 4053

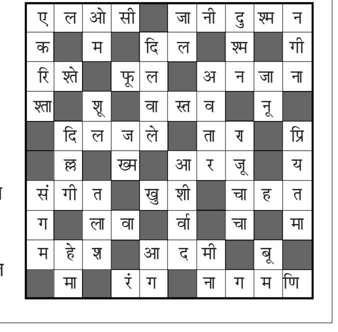

सूडोकु 4054

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु4053 का हल

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6

शब्द पहेली - 4054

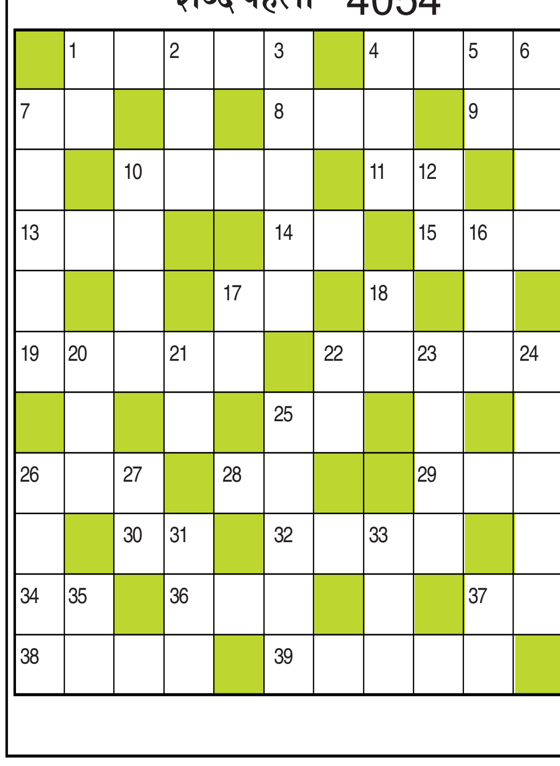

बाएँ से दाएँ

1.सहयोग की भावना-5
4.अकस्मात,एकाएक-4
7.पराजय-2
8.नाव चलाने वाला-3
9.भीगा हुआ-2
10.अनुवाद-4
11.बेल-2
13.योग्य,सही-3
14.घोड़ा गाड़ी-2
15.काव्य,गजल-3
17.अद्वैतभाव,कुर्बान-2
19.नामकरण-2,3
22.राजा का महल-5
25.प्रेम,ममता-2
26.कपड़े की दीवार-3
28.रास्ता,मार्ग-2
29.सिर,खोपड़ी-3
30.माप-2
32.गुस्सा करना-4
34.व्यंग,चुटीली बात-2
36.नायक,नेता-3
37.एक आंख वाला-2
38.रचनाकार-4
39.कृष्ण का एक नाम-3,2

ऊपर से नीचे

1.महोदय (अंग्रेजी-2)
2.डरपोक,भीरू-3
3.व्यंग कसना -5
4.बुद्धि-3
5.झुका हुआ-2
6.कर देने वाला-4
7.चोरी करना,छीनना (मु.-2,3)
10.तहखाना-4
12.एकटक देखना-2
16.वियोग,जुदाई-3
17.आमिर,काजोल की नई फिल्म-2
18.खुजली-2
20.घोटना,मंथन करना-3
21.पत्र,चिट्ठी-2
22.रास्ता-2
23.सुगंधित होना-4
24.बिजली का कौंधना-5
25.कुलीन स्त्री,देवी (उर्दू-5)
26.भगवान,ईश्वर-4
27.पेड़ का मध्य भाग-2
31.पटाखे की बाती,-3
33.अभिव्यक्ति-3
35.नृत्य,डांस-2
37.छोटी सवारी गाड़ी-2

शब्द पहेली 4053 का हल

भाजपा तमिलनाडु में 4 चरणों की यात्रा आयोजित करेगी, नागेंद्रन ने घोषणा की

एजेंसी

चेन्नई। भाजपा की राज्य इकाई आतंकवादी हमले का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए भारतीय सेना और प्रधानमंत्री मोदी के प्रति आभार व्यक्त करने को लेकर तमिलनाडु में चार चरणों में यात्रा आयोजित करेगी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष नैनार नागेंद्रन के मुताबिक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारतीय सशस्त्र बलों के दृढ़ नेतृत्व को उजागर करने के लिए अगले कुछ दिनों में राज्य भर में बड़े पैमाने पर तिरंगा यात्राएं आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। ये यात्राएं चार चरणों में की जाएंगी।

1. 14 मई को राज्य की राजधानी चेन्नई में
2. 15 मई को अन्य प्रमुख शहरों में
3. 16 और 17 मई को अन्य जिला और कस्बों में
4. यह निर्णय लिया गया है कि 18 से 23 मई तक विधानसभा क्षेत्रों और तालुकों के कस्बों और बड़े गांवों में राष्ट्रीय ध्वज के साथ जुलूस निकाला जाएगा। इसके लिए नेतृत्व से लगातार दिशा-निर्देश दिए जाएंगे। जनता से भी इस यात्रा में शामिल होने की अपील की गई है।

केजरीवाल ने पंजाब में जहरीली शराब त्रासदी पर दुख जताया, कहा-दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आआपा) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने आज पंजाब के अमृतसर जिले के मजीठा में जहरीली शराब पीने से कई लोगों की मौत पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार दोषियों के खिलाफ शख्त कार्रवाई करेगी। केजरीवाल ने इस हादसे पर कहा कि जहरीली शराब के पीछे जिस किसी का भी हाथ है, उसे बख्शा नहीं जाएगा। केजरीवाल ने एक्स पोस्ट पर कहा कि मजीठा में जहरीली शराब पीने से कई लोगों की मौत हुई है। इसमें जो लोग भी शामिल हैं वे चाहे कितने भी रसूख वाले क्यों ना हों। कितने भी बड़े क्यों ना हों। उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। उन्हें सख्त से सख्त सजा मिलेगी। उन्होंने कहा कि पीड़ित परिवारों को भगवान इस कष्ट को सहने की शक्ति दे।

पुलिस ने 28 किलो गांजे के साथ दो तस्कर किये गिरफ्तार

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिम जिला की नारकोटिक्स स्क्वाड यूनिट ने 'नशा मुक्त भारत अभियान' के तहत दो तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने आरोपितों के कब्जे से करीब 28 किलो गांजा बरामद किया है। गिरफ्तार आरोपितों की पहचान शिवनाथ साहनी (25) और पंकज कुमार (48) के रूप में हुई है। दोनों जहांगीरपुरी के रहने वाले है। उत्तर-पश्चिम जिले के डीसीपी भीष्म सिंह ने बताया कि पिछले कुछ समय से क्षेत्र में नशे के कारोबार की बढ़ती गतिविधियों को देखते हुए जिले की नारकोटिक्स स्क्वाड द्वारा विशेष अभियान चलाया गया। खुफिया जानकारी के आधार पर एक टीम बनाई गई। पुलिस टीम ने कई दिनों की निगरानी और तकनीकी जानकारी के आधार पर 11 मई को एक गुप्त सूचना के आधार पर जहांगीरपुरी से दो तस्करों को पकड़ा गया। पूछताछ में आरोपितों ने खुलासा किया कि वह हाल ही में नशे के धंधे में शामिल हुए थे और दिल्ली के विभिन्न इलाकों में गांजा सप्लाई कर रहे थे।

ठगी के मामले में एक आरोपित गिरफ्तार

नई दिल्ली। शाहदरा जिले की साइबर थाना पुलिस ने एक ऐसे साइबर ठग को गिरफ्तार किया है, जो युवाओं और कलाकारों को म्यूजिक वीडियो में काम दिलाने के नाम पर ठगी करता था। गिरफ्तार आरोपित की पहचान राहुल देव उर्फ सिद्धार्थ के रूप में हुई है। वह भारत कॉलोनी ओल्ड फरीदाबाद का रहने वाला है। शाहदरा जिले के डीसीपी प्रशांत गौतम ने बताया कि आरोपित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से युवाओं को फर्जी तौर पर खुद को 'टी-सीरीज' की कास्टिंग टीम का सदस्य बताकर संपर्क करता था।

कुछ समय पहले आरोपित ने विश्वास नगर निवासी सिमरन मान से संपर्क किया और उन्हें मुंबई में एक म्यूजिक वीडियो के लिए शॉर्टलिस्ट होने की जानकारी दी। इसके बाद उनसे फ्लाइट टिकट बुकिंग के नाम पर 20,462 की मांग की गई और फर्जी इंडिगो टिकट भेजकर भरोसा दिलाया गया। शिकायतकर्ता ने 25 मार्च को बताए गए बैंक खाते में रुपये ट्रांसफर कर दिए। रुपये मिलने के बाद आरोपित ने सभी फोन बंद कर दिए और उन्हें ब्लॉक कर दिया।पुलिस ने शिकायतकर्ता के बयान पर मुकदमा दर्ज कर लिया।पुलिस टीम ने बैंक, व्हाट्सएप और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से सबूत इकट्ठा कर जांच की। जांच में सामने आया कि आरोपित ने एकता शर्मा नाम की महिला के नाम पर खाता खुलवाया था। जिसे राहुल देव संचालित करता है। तकनीकी निगरानी के बाद पुलिस ने आरोपित को चंडीगढ़ पंजाब से गिरफ्तार किया।

अंबिकापुर में केंद्रीय मंत्री शिवराज ने की ऑपरेशन सिंदूर की तारीफ, सेना के पराक्रम को किया नमन

एजेंसी

अंबिकापुर। केंद्रीय मंत्री ग्रामीण विकास एवं कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के अंबिकापुर पीजी कॉलेज ग्राउंड में आयोजित मोर आवास मोर अधिकार कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान केंद्रीय मंत्री शिवराज ने ऑपरेशन सिंदूर की तारीफ करते हुए सेना के पराक्रम को नमन किया। उन्होंने कहा कि यह मोदी के नेतृत्व में समर्थ भारत है। भारत अपने फैसले स्वयं करता है। केंद्रीय मंत्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा ने चुनाव में 18 लाख पीएम आवास देने का वादा किया था जो आज पूरा हो गया। अब आवास प्लस-प्लस का सर्वे शुरू कर दिया गया है। आवास प्लस-प्लस में ऐसे लोगों को भी पीएम आवास मिलेगा, जिनके पास बाइक या स्कूटी है, जिनकी आय 15 हजार रुपये मासिक है और जिनके पास सीमित खेती की जमीनें हैं। उन्होंने आगे कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पाप किए थे। पीएम आवास योजना की राशि केंद्र भेजता था परंतु तत्कालीन सीएम उसे रोक देते थे, इसलिए छत्तीसगढ़ की जनता की हाय उन्हें लगी। वे कहां चले गए, यह सबको पता है। अब छत्तीसगढ़ में पीएम आवास की कोई प्रतीक्षा सूची नहीं बची है। आवास प्लस-प्लस में जितने भी मकान सर्वे में आएंगे, स्वीकृत होंगे। पीएम जन-मन योजना के तहत पक्के आवास की सिर्फ सूची भेज दें, स्वीकृति मिलेगी। उन्होंने कहा कि अलग-अलग राज्यों की विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों की अलग-अलग तिथियों के कारण अतिरिक्त पैसे खर्च होते हैं एवं काम काज प्रभावित होता है, इसलिए एक देश-एक चुनाव जरूरी है। जनता सभी दलों के लोगों से इसका समर्थन करने को कहे।

मप्र के दमोह में पिता ने तीन बेटियों के साथ खाया जहर, चारों की मौत

एजेंसी

दमोह। मध्य प्रदेश के दमोह जिले में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां एक पिता ने मंगलवार को अपनी तीन बेटियों के साथ कोई जहरीला पदार्थ खा लिया। इन चारों को गंभीर हालत में हटा सिविल अस्पताल लाया गया, जहां चारों की मौत हो गई। वह सुबह समोसा खिलाने की बात कहकर बेटियों को अपने साथ बाजार ले गया था। उसके बाद में उन्हें जहर दे दिया। पड़ोस के एक युवक ने उन्हें तालाब किनारे तड़पते देखा तो उनके घरवालों को सूचना दी। घटना का कारण अज्ञात है।

इस घटना के बाद गांव में मातम पसरा है। मृतक के ससुराल वालों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। घटना गैसाबाद थाना क्षेत्र के मुहरई गांव की है। हरियाणा निवासी विनोद जाट (कंसोरिया) की शादी दमोह जिले के हटा ब्लॉक में आने वाले मोहरई गांव में हुई थी। उसकी तीन बच्चियां भी थीं। पत्नी जूली ने बताया कि उसके मायके में शादी थी, इसलिए पिछले महीने 25 अप्रैल को वह लोग बच्चों के साथ गांव आए थे।

सुबह पति विनोद अपनी तीनों बेटियों को समोसा खिलाने ले गया। कुछ देर बाद गांव के एक व्यक्ति ने आकर बताया कि दामाद और तीनों बच्चियां तालाब के पास बेहोश पड़े हैं। परिजन तालाब के पास पहुंचे, तो उनके मुंह से झाग निकल रहा था। चारों को इलाज के लिए हटा सिविल अस्पताल लाया गया। डॉक्टर आरपी कोरी, डॉक्टर अमन श्रीवास्तव और डॉक्टर मनीष ने हरियाणा निवासी विनोद जाट (कंसोरिया), बेटी महक (2 वर्ष), खुशबू (4 वर्ष) को मृत घोषित कर दिया। 7 वर्षीय बेटी खुशी की हालत गंभीर होने पर उसे दमोह जिला अस्पताल रेफर किया गया, जहां जिला अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

मणिपुर में 16 उग्रवादी और तीन हथियार तस्कर गिरफ्तार

एजेंसी

इंफाल। मणिपुर में सुरक्षा बलों के सघन तलाशी अभियान के दौरान प्रतिबंधित उग्रवादी संगठनों के 16 कैडर और तीन हथियार तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस प्रवक्ता ने आज सुबह बताया कि इन सभी को थौबल, बिष्णुपुर, इंफाल ईस्ट और तेंगनौपाल जिलों में पकड़ा गया। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार तेंगनौपाल जिले के योंगखुल गांव के पास सात उग्रवादियों को गिरफ्तार किया गया। इनमें पीएलए के चार, केसीपी के दो और केवाईकेएल का एक कैडर शामिल हैं। इनकी पहचान लूरेम्बम मनोरंजन, चिंगंगबम संतोष, सोरम गुम्बा उर्फ तोनबा, नगसेपम मोमोन उर्फ लुहेनबा (पीएलए), लैफरकपम धनंजय सिंह, कोनसाम मनीचंद्र (केसीपी), और लैश्रम रोजित (केवाईकेएल) के रूप में हुई है। इसके अलावा थौबल जिले में केसीपी (पीडब्ल्यूजी) से जुड़े हुइड्रोम जीबन (45) को लिलोंग नुंगेई से गिरफ्तार किया गया। वह आम जनता को धमकाकर वसूली करता था। खुंडोंगबम पृथ्वीराज उर्फ सथिबा (23) को सोरोजिनी ऑयल पंप के पास से गिरफ्तार किया गया। उसके पास से हैंड ग्रेनेड बरामद हुए हैं। उन्होंने बताया कि बिष्णुपुर जिले के निंगथूकनॉंग वार्ड नंबर 3 से केसीपी (एमएफएल) के कैडर सलाम करन सिंह उर्फ निंगथौलकपा (21) को गिरफ्तार किया गया। वह सरकारी कर्मचारियों और व्यापारियों को धमकाता था। इंफाल ईस्ट जिले में हींगांग थाना क्षेत्र में प्रीपाक के दो सदस्य - खंगेमबम अपुई उर्फ नोंगपोकनगनबा और मोइरांगथेम एलेक्स को कोइरेंगी कबुई खुल गेट के पास से दबोचा गया है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार, सगोलमांग थाना क्षेत्र के पुखाओ में तीन हथियार तस्करों को पकड़ा गया। इनमें से एक यूएनएलएफ (पांबेई) समूह का कैडर नाओरेम नाओचा उर्फ छिंगलाकपा है। उनके पास से इंसास राइफल, आठ कारतूस, तीन मोबाइल, दो पर्स और दो आईडी कार्ड बरामद किए गए है।

अम्बिकापुर में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने धोए महिला के पैर

एजेंसी

रायपुर/अम्बिकापुर। अम्बिकापुर में 'मोर आवास-मोर अधिकार' कार्यक्रम में पहुंची पीएम जनमन के तहत आवास प्राप्त करने वाली हितग्राही महिला फूलो बाई के चरणों को देश के केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने धोकर उन्हें सम्मानित किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सहित मंत्रिमंडल के सदस्य, सांसद, विधायक, निगम, मंडल आयोग के अध्यक्ष, सदस्य उपस्थित थे।

ग्राम पंचायत पंडरापाठ निवासी फूलो बाई ने बताया कि वह अपनी चार बेटियों के साथ मिट्टी के कच्चे घर में रह रही थीं, बेटियों की शादी हो गई। पति का निधन हो चुका है। उन्होंने बताया कि पहले उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि उन्हें पक्का मकान मिलेगा, लेकिन अब उनका सपना साकार हो चुका है। फूलो बाई ने बताया कि वह घर में बिजली होने से काफी परेशानी दूर हो गई है, घर में ही शौचालय और नल कनेक्शन जैसी सुविधाओं के साथ गरिमामय जीवन व्यतीत कर रही हैं। जब केंद्रीय मंत्री चौहान फूलो बाई के पैर धो रहे थे, तब वे भावुक हो गईं। यह क्षण उनके लिए केवल सम्मान का नहीं बल्कि जीवन में पहली बार स्वयं को महत्वपूर्ण और सम्मानीय महसूस करने का था। शिवराज सिंह ने फूलो बाई से कहा कि 'विष्णु के सुशासन में सब सुविधाएं मिलने लगी हैं'। यह केवल एक टिप्पणी नहीं बल्कि उस नीति की पुष्टि है जो अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुँचाने के संकल्प को दर्शाती है। यह सुखद पल न केवल प्रशासन की संवेदनशीलता को उजागर करती है बल्कि यह भी दर्शाती है कि आज का शासन आमजन की पीड़ा को समझने और उसका समाधान करने के लिए गंभीर है। समाज में विश्वास, आत्मसम्मान और मानवता की भावना को ऐसे कार्य और मजबूत करते हैं। यह एक नई राजनीति की झलक है। जिसमें सेवा, सम्मान और सहभागिता तीनों का समावेश है।

जहरीली शराबकांड के दोषियों को नही बख्शेंग : भगवंत मान

एजेंसी

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि अमृतसर जिले में जहरीली शराब के कारण हुई त्रासदी में शामिल किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा, भले ही वह कितना भी अमीर या पहुंच वाला क्यों न हो। उन्होंने जहरीली शराब त्रासदी के पीड़ित परिवारों के साथ सहानुभूति जताते हुए सरकार की ओर से दस-दस रुपये की मदद का ऐलान किया। यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री मान ने कहा कि यह मौतें सिर्फ हादसा नहीं हैं, बल्कि हत्या है, जो कुछ व्यक्तियों के लालच के कारण हुई है। उन्होंने कहा कि यह एक स्पष्ट हत्या है और राज्य सरकार दोषियों को सख्त से सख्त सजा सुनिश्चित करेगी। मुख्यमंत्री मान ने कहा कि जहरीली शराब के कारण 17 लोगों की जानें चली गई हैं और इसके लिए जिम्मेदार लोग किसी भी रहम के हकदार नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने यह अपराध सोच-समझकर किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अपराध शक्तिशाली राजनेताओं के राजनीतिक संरक्षण के बिना नहीं किया जा सकता और पुलिस इस पहलू की जांच कर रही है। भगवंत सिंह मान ने बताया कि मुख्य आरोपित समेत 10 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है और साथ ही पुलिस ने इस घिनौने अपराध में शामिल गठजोड़ के संपर्क सूत्रों की भी पहचान की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस जहरीली शराबकांड के गठजोड़ के संबंध दिल्ली तक पाए गए हैं और इस अपराध में शामिल प्रत्येक व्यक्ति को राज्य सरकार सलाखों के पीछे डालेगी। उन्होंने कहा कि यह बात सामने आई है कि इस गंभीर त्रासदी के दोषियों ने 600 लीटर मिथेनॉल, ऑनलाइन मंगवाया गया था, जिसका उपयोग शायद नकली शराब बनाने के लिए किया गया था। भगवंत सिंह मान ने कहा कि पुलिस इस मामले के सभी पहलुओं की जांच कर रही है ताकि दोषियों को पकड़ा जा सके और उन्हें मिसाली सजा दी जा सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने नकली शराब की बिक्री और आपूर्ति रोकने में लापरवाही बरतने के लिए पहले ही चार अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। इन अधिकारियों में डीएसपी, एसएचओ और आबकारी विभाग के दो अधिकारी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि भले ही यह गठजोड़ बहुत मजबूत है और पिछली सरकारों के खुले संरक्षण के कारण इसने अपने पैर मजबूत किए हैं, पर इस शराब माफिया को राज्य से खत्म कर दिया जाएगा। भगवंत सिंह मान ने कहा कि यदि कोई भी राजनेता या सरकारी कर्मचारी, जहरीली शराब से हुई मौतों में शामिल पाया गया तो उसे बख्शा नहीं जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने पहले ही 'युद्ध नशों के विरुद्ध' मुहिम के तहत इस माफिया पर कार्रवाई करने के लिए पंजाब पुलिस को निर्देश दे दिए हैं। उन्होंने कहा कि इन शरारती तत्वों ने भारत-पाकिस्तान सीमाओं पर तनाव के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस की हुई तैनाती का फायदा उठाया ताकि पंजाबियों की जानों की कीमत पर अपना लालच पूरा किया जा सके।

जम्मू-कश्मीर: भारत-पाक संघर्ष के दौरान अस्पताल से गैर हाजिर रहे कर्मचारियों के खिलाफ़ कार्रवाई

एजेंसी

राजौरी। राजौरी में सरकारी मेडिकल कॉलेज (जीएमसी) और अस्पताल ने अपने कई कर्मचारियों का वेतन नहीं जारी करने का आदेश दिया है। आरोप है कि वह कर्मचारी भारत और पाकिस्तान के बीच हुए सशस्त्र संघर्ष के दौरान ड्यूटी से अनुपस्थित पाए गए थे।आदेश के मुताबिक दंडित कर्मचारियों में फैकल्टी, कंसल्टेंट, सीनियर रेजिडेंट, जूनियर रेजिडेंट, स्टाफ नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ, तकनीकी स्टाफ, मिनिस्टीरियल स्टाफ, मल्टी-टास्किंग स्टाफ, इंटर्न और कई अन्य जिम्मेदार पदों पर तैनात कर्मचारी शामिल हैं। यह सभी अस्पताल व मेडिकल कालेज से गैर हाजिर तो रहे ही, वहीं सात मई को शहर छोड़कर चले गए थे। जीएमसी राजौरी के प्रिंसिपल प्रोफेसर (डॉ) एएस भाटिया के अनुसार इसके अलावा उक्त अवधि को अनधिकृत अनुपस्थिति माना जाएगा और लागू नियमों व विनियमों के अनुसार उनके सेवा रिकॉर्ड सेवा पुस्तकों में उचित प्रविष्टियाँ की जाएंगी। गौरतलब है कि मेडीकल कालेज राजौरी और पुंछ के सीमावर्ती जिलों में फैले पूरे पीर पंजाल क्षेत्र के लिए एक प्रमुख चिकित्सा संस्थान के रूप में कार्य करता है। दोनों ही जिले पाकिस्तान द्वारा तोपखाने और मोर्टार गोलाबारी से सबसे अधिक प्रभावित थे। जम्मू और कश्मीर में संघर्ष में कुल 28 मौतों में से कम से कम 20 मौतें इन दो जिलों से हुई हैं, जबकि 50 से अधिक लोग घायल हुए हैं।

नए पंबन ब्रिज पर स्पीड बढ़ेगी: रामेश्वरम ट्रेन का समय बदला

एजेंसी

चेन्नई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले महीने 6 अप्रैल को पंबन और रामेश्वरम के बीच समुद्र पर नवनिर्मित पंबन ब्रिज का उद्घाटन किया था। इससे पहले, पुराने पुल पर गति सीमा 10 किमी/घंटा थी। रेलगाड़ियाँ अब तेज गति से चल सकती हैं। नये पुल पर 75 किमी/घंटा गति बढ़ाने की अनुमति दी गई है। इसके चलते दक्षिण रेलवे ने रामेश्वरम से आने और जाने वाली ट्रेनों के समय में बदलाव किया है। यह बदलाव इस प्रकार है:

रामेश्वरम-त्रिची एक्सप्रेस ट्रेन (ट्रेन संख्या 16850) 14 मई से दोपहर 2.50 बजे के बजाय दोपहर 3 बजे रवाना होगी। इसी तरह, रामेश्वरम-तिरुपति एक्सप्रेस ट्रेन (16780) 15 मई से शाम 4.20 बजे के बजाय शाम 4.30 बजे रवाना होगी। इसके अलावा, रामेश्वरम-चेन्नई एक्सप्रेस ट्रेन (16752) 14 मई से शाम 5.30 बजे के बजाय शाम 5.50 बजे रवाना होगी। रामेश्वरम-कोयंबटूर एक्सप्रेस ट्रेन (16617) 14 मई से शाम 7.30 बजे के बजाय 7.55 बजे रवाना होगी।

रामेश्वरम-चेन्नई एक्सप्रेस ट्रेन (22662) 14 मई से रात 8.35 बजे के बजाय 8.50 बजे रवाना होगी। रामेश्वरम-कन्याकुमारी एक्सप्रेस ट्रेन (22621) 7 जून से मंडपम रेलवे स्टेशन पर अस्थायी रूप से रुकेगी। साथ ही यह ट्रेन रामेश्वरम से रात 9.10 बजे के बजाय 9.15 बजे रवाना होगी।

प्रधानमंत्री ने सीबीएसई की 12वीं और 10वीं की परीक्षा पास करने वाले सभी विद्यार्थियों को दी बधाई

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सीबीएसई की कक्षा 12वीं और 10वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सभी विद्यार्थियों को बधाई दी।

मोदी ने कहा कि यह आपके दृढ़ संकल्प, अनुशासन और कड़ी मेहनत का परिणाम है। आज का दिन माता-पिता, शिक्षकों और अन्य सभी लोगों की भूमिका को स्वीकार करने का भी है, जिन्होंने इस उपलब्धि में योगदान दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जो लोग अपने अंकों से थोड़ा निराश महसूस करते हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं: एक परीक्षा कभी भी आपको परिभाषित नहीं कर सकती। आपकी यात्रा बहुत बड़ी है और आपकी ताकत मार्कशीट से कहीं आगे तक जाती है। आत्मविश्वास बनाए रखें, जिज्ञासु बने रहें क्योंकि महान चीजें आपका इंतजार कर रही हैं। प्रधानमंत्री ने एक्स पर पोस्ट किया, प्रिय परीक्षा योद्धाओं, सीबीएसई कक्षा बारहवीं और दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सभी लोगों को हार्दिक बधाई। यह आपके दृढ़ संकल्प, अनुशासन और कड़ी मेहनत का परिणाम है। आज माता-पिता, शिक्षकों और अन्य सभी लोगों की भूमिका को स्वीकार करने का भी दिन है जिन्होंने इस उपलब्धि में योगदान दिया है। परीक्षा योद्धाओं को आगे आने वाले सभी अवसरों में सफलता की शुभकामनाएं।

नेपाल में रहकर खलिस्तानी आतंकी संगठनो के नेटवर्क मजबूत करने में जुटा था आतंकी कश्मीर सिंह

एजेंसी

पूर्वी चंपारण। एनआईए और मोतिहारी पुलिस की संयुक्त कारवाई में मोतिहारी के मोतीझील क्षेत्र से गिरफ्तार दस लाख का इनामी खालिस्तानी आतंकवादी कश्मीर सिंह गलबड्डी उर्फ बलवीर सिंह को एनआईए ने ट्रांजिड रिमांड पर आवश्यक पूछताछ के लिए अपने साथ दिल्ली ले गई। बलबीर ने प्रारंभिक पूछताछ में नाभा जेल ब्रेक व अन्य आतंकी गतिविधि में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। इसके साथ ही यह भी जानकारी मिली है,कि बलवीर बब्बर खालसा इंटनेशनल सहित अन्य खलिस्तानी आतंकी संगठन के नेपाल नेटवर्क का अहम हिस्सा था।इसके 6 बैक अकांउट में करोड़ो रूपये के फंडिग और लेनदेन की जानकारी मिली है। बलबीर नेपाल में दलजीत सिंह के नाम से फर्जी दस्तावेज बनवा कर भारत नेपाल के सीमाई शहर वीरगंज में एक घर भी खरीदा था।इसके साथ ही उसने एक नेपाली महिला से शादी करने के बाद दिखावा के लिए एक समान्य नागरिक की तरह रहते हुए घुम-घुम कर कपड़े बेचने का काम कर रहा था,हालांकि इस दौरान खालिस्तानी आतंकी संगठन के नेटवर्क का हिस्सा बना रहा,जिसमे बब्बर खालसा इंटरनेशनल, खालिस्तान लिबरेशन फोर्स जैसे आतंकी संगठन शामिल है। बताया गया कि कश्मीर सिंह उर्फ बलबीर अंतरराष्ट्रीय सिख यूथ फेडरेशन से भी जुड़ा था।उल्लेखनीय है,कि कश्मीर सिंह उर्फ बलबीर नाभा जेल ब्रेक के दौरान खालिस्तान लिबरेशन फोर्स (केएलएफ) प्रमुख हरमिंदर सिंह रिंदू गैंगस्टर विक्की गौंडर, गुरप्रीत सिंह सेखों, नीता देओल और अमनदीप धोतियां जैसे आतंकी व गैंगस्टरो के साथ भाग निकला था।

राष्ट्र विरोधी पोस्ट कर अफवाह फैलाने वाले 40 सोशल मीडिया अकाउंट पर कार्रवाई, 25 गिरफ्तार

एजेंसी

लखनऊ। सोशल मीडिया पर राष्ट्र विरोधी पोस्ट कर अफवाह फैलाने के मामले में यूपी पुलिस ने 40 अलग-अलग सोशल मीडिया अकाउंट के खिलाफ कार्रवाई की है। अब तक 25 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

अपर पुलिस महानिदेशक कानून व्यवस्था अमिताभ यश ने बताया कि भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़े तनाव को लेकर इन दिनों सोशल मीडिया पर कई तरह की पोस्ट की जा रही है। इस पर अंकुश लगाने के लिए यूपी पुलिस मुख्यालय स्थित सोशल मीडिया सेंटर की विशेष टीम चौबीसों घंटे काम कर रही है। वे ऐसे सोशल मीडिया अकाउंट पर नजर रख रहे हैं, जिनसे भ्रामक अफवाहें और अभद्र वीडियो व फोटो पोस्ट किए जा रहे हैं। इसी क्रम में अब तक कुल 40 अलग-अलग सोशल मीडिया अकाउंट की पहचान कर उनके खिलाफ संबंधित जिलों में केस दर्ज किया गया है। 25 आरोपियों को गिरफ्तारी हुई है। सभी 40 सोशल मीडिया अकाउंट को ब्लॉक करने की कार्रवाई चल रही है। पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने सभी से अपील की है कि वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए कोई भी व्यक्ति बिना तथ्यों की पुष्टि किए सोशल मीडिया पर ऐसी कोई सामग्री पोस्ट न करे, जिसके कारण समाज में अफवाहें फैलती हैं, जनता में भय व्याप्त होता है। भारतीय सेना की प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इस पर अंकुश लगाने के लिए यूपी पुलिस मुख्यालय स्थित सोशल मीडिया सेंटर की विशेष टीम चौबीसों घंटे काम कर रही है।

स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी है

नींबू पानी

इसमें पानी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स और शर्करा मौजूद होती है। नींबू विटामिन सी का बेहतर स्रोत है। इसमें विभिन्न विटामिन्स जैसे थियामिन, रिबोफ्लोविन, नियासिन, विटामिन बी- 6, फोलेट और विटामिन-ई की थोड़ी मात्रा मौजूद रहती है। आज जानिए नींबू पानी के फायदे के बारे में।

नींबू बहुत ही गुणकारी है। कई रूपों में यह हमारे स्वास्थ्य के लिए फयदेमंद साबित होता है। नींबू विभिन्न विटामिन्स व मिनरल्स का खजाना माना जाता है। इसमें पानी, प्रोटीन, कारबोहाइड्रेट्स और शर्करा मौजूद होती है। नींबू विटामिन सी का बेहतर स्रोत है। इसमें विभिन्न विटामिन्स जैसे थियामिन, रिबोफ्लोविन, नियासिन, विटामिन बी- 6, फोलेट और विटामिन-ई की थोड़ी मात्रा मौजूद रहती है। आज जानिए नींबू पानी के फायदे के बारे में। नींबू पानी हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद है सिवाय उनके जिन्हें नींबू से एलर्जी होती है। यह खराब गले,कब्ज,किडनी स्टोन, और मसूड़ों की समस्याओं में राहत पहुंचाता है। ब्लड प्रेशर और तनाव को कम करता है। त्वचा को स्वस्थ बनाने के साथ ही लिवर के लिए भी यह बेहतर होता है। पाचन क्रिया,वजन संतुलित करने और कई तरह के कैंसर से बचाव करने में नींबू पानी मददगार होता है। नींबू पानी में कई तरह के मिनरल्स जैसे आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, कैल्शियम, पोटैशियम और जिंक पाए जाते हैं।

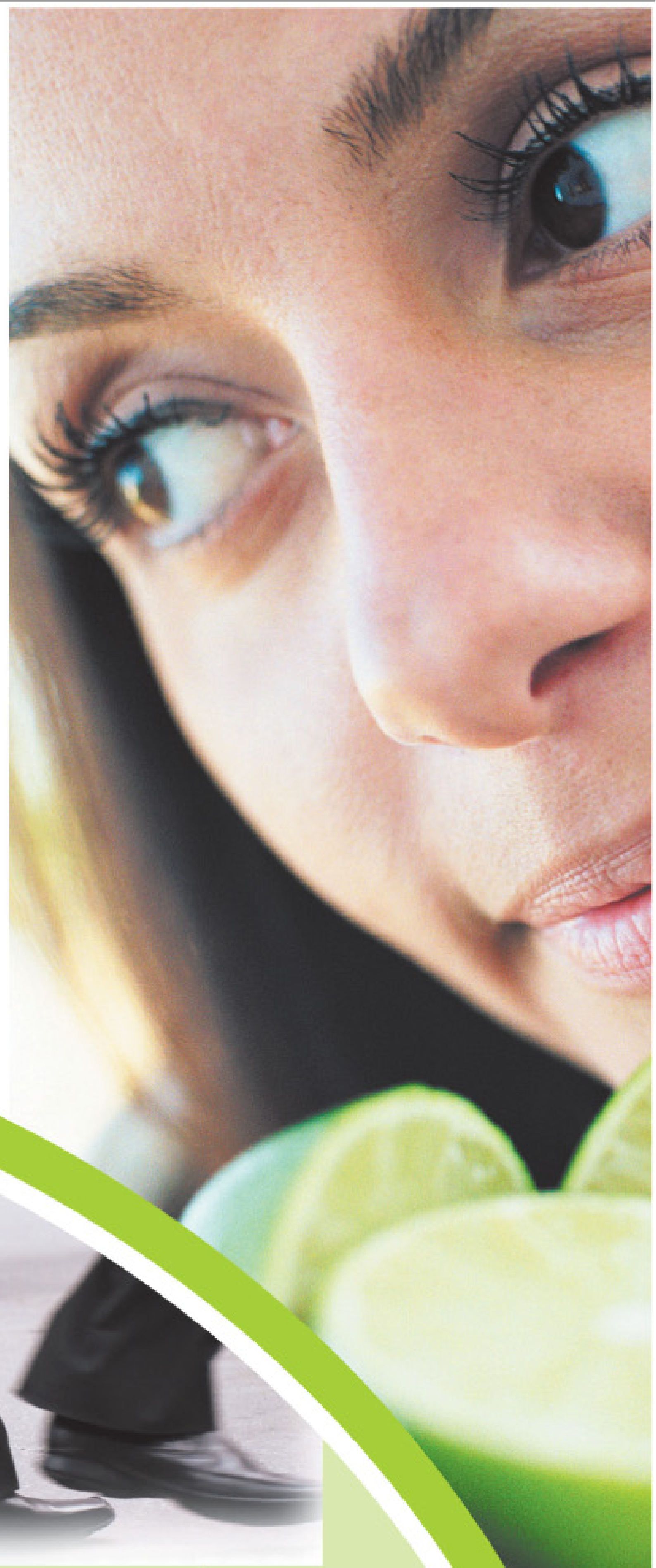

छोटे कदम रखना

चलते समय जिनके कदम छोटे होते हैं, उन्हें ऑस्टियोऑर्थराइटिस की आशंका हो सकती है। साथ ही अगर ऐसी महिलाएं हाई हील पहनने की आदी हैं तो उनकी परेशानी और बढ़ जाती है। ऐसे में हेमस्ट्रिंग और कॉफ ठीक से स्ट्रेच नहीं हो पाती है। घुटने संबंधी दोषों से भी ऐसा होता है।

आपकी चाल

बताती है आपका स्वास्थ का हाल

आपकी चलने की चाल से आपके स्वास्थ का पता लगाया जा सकता है। एक नए अअध्यन में अमेरिकी शोधकर्ताओं ने हाल ही में चलने के तरीके और उससे जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं का पता लगाया है। भविष्य में अगर आपको किन्हीं स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा है तो इसका अंदाजा चलने के तरीके से आसानी से लगाया जा सकता है।

धीमी चाल

यूनिवर्सिटी ऑफ लीड्स के शोधकर्ताओं के अनुसार चलने की गति भी सेहत का हाल बताती है। जो लोग एक घंटे में 3.6 किलोमीटर या उससे ज्यादा चल लेते हैं, उन्हें ऑर्थराइटिस का खतरा काफी कम होता है। वहीं, अगर किसी युवा व्यक्ति की चलने की औसत गति प्रतिघंटा इससे कम है और उसे जोड़ों में दर्द की शिकायत भी रहती है तो यह ऑर्थराइटिस का पूर्व संकेत हो सकता है। भले ही आप फिट हैं, लेकिन भविष्य में इसकी आशंका बढ़ सकती है।

मॉडल जैसी चाल

अगर आपकी आदत किसी मॉडल के समान चलने की है तो आपको पीठ दर्द की शिकायत हो सकती है। आमतौर पर चलते या दौड़ते समय कमर के नीचे की छोटी मसल ग्लूटिअस मीडिअस काम करती है, जो पेल्विस (पिंडली) को स्थिर और पैरों को सीधा रखने का काम करती है। आरामदायक जीवनशैली के चलते यह मसल कमजोर होने लगती है, जिससे पीठ पर अधिक स्ट्रेस पड़ता है।

सीढ़ियां चढ़ने में परेशानी

सीढ़ियां चढ़ते-उतरते समय पैर के अंगूठे के जोड़ में दर्द होता है तो यह बुनियन का लक्षण है। इस समस्या में चढ़ते-उतरते समय जब अंगूठा मुड़ता है तो जोड़ आपस में घिसते हैं, तभी दर्द होता है।

पैदल चलने में कठिनाई होना

जब चलते समय शरीर एक ओर झुकने लगें तो यह ऑस्टियोऑर्थरिटीक हिप का संकेत हो सकता है। शरीर का वजन जब हिप्स नहीं संभाल पाते हैं, तब ऐसा होता है। हालांकि कई बार एक हाथ से अधिक वजन उठाने से भी ऐसा होता है। ऐसे में स्पाइन झुक जाती है और पीठ के निचले हिस्से पर अधिक स्ट्रेस पडने से दर्द भी हो सकता है।

बार-बार पानी पीने से भी

प्यास शांत नहीं होती?

गर्मी के मौसम में शरीर का जल का अंश कम हो जाता है, वातावरण की गर्मी व धूप से वह तपने लगता है। ऐसे में प्यास बढ़ जाती है, बार-बार पानी पीने से भी प्यास शांत नहीं होती, ऐसे में

निम्नलिखित प्रयोग करें

- पानी में शहद मिलाकर कुल्ला करने या लौंग को मुंह में रखकर चूसने से बार-बार लगने वाली प्यास शांत होती है।
- अनन्नास का ऊपरी छिलका और भीतरी कठोर भाग निकाल कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर, इन टुकड़ों को पानी में पकाकर नरम बनाएं

और फिर चीनी की चाशनी बनकर उसमें डाल दें। इस मुरब्बे जैसे ज्यूस का सेवन करने से प्यास बुझती है तथा शरीर की जलन शांत होती है, इससे हृदय को बल मिलता है।
- गाय के दूध से बना दही 125 ग्राम, शकर 60 ग्राम, घी 5 ग्राम, शहद 3 ग्राम व काली मिर्च-इलायची चूर्ण 5-5 ग्राम लें। दही को अच्छी तरह मलकर उसमें अन्य पदार्थों को मिलाएं और किसी स्टील या कलई वाले बर्तन में रख दें। उसमें से थोड़ा-थोड़ा दही सेवन करने से बार-बार लगने वाली प्यास शांत होती है।
- जौ के भुने सत्तू को पानी में घोलकर, उसमें थोड़ा सा घी मिलाकर पतला-पतला पीने से भी प्यास शांत होती है।
- चावल के मांड में शहद मिलाकर पीने से भी तृष्णा रोग में आराम मिलता है।

डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए दक्षिण अफ्रीका की टीम घोषित, एनगिडी की वापसी

एजेंसी

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2023-25 फाइनल के लिए अपनी टीम की घोषणा कर दी है। टेम्बा बावुमा 15 सदस्यीय टीम की अगुआई करेंगे, जिसमें तेज गेंदबाज लुंगी एनगिडी की भी वापसी हुई है, जो चोट के कारण गर्मियों में घरेलू सीरीज से बाहर रहे थे।एनगिडी तेज गेंदबाजी लाइनअप में शामिल हो गए हैं, जिसमें कगिसो रबाडा, मार्को जेनसन, डेन पैटरसन और कॉर्बिन बॉश शामिल हैं। केशव महाराज सेनुरन मुथुसामी के साथ स्पिन विभाग संभालेंगे। मुख्य कोच शुकरी कॉनराड ने कहा, पिछले 18 महीनों में, हमने एक प्रतिस्पर्धी रेड-बॉल इकाई बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है और यह उपलब्धि उस प्रगति को दर्शाती है। उन्होंने कहा, हमारी सफलता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा चयन में निरंतरता है और हम उन खिलाड़ियों के मुख्य समूह के साथ बने हुए हैं जो इस डब्ल्यूटीसी चक्र का हिस्सा रहे हैं। हमने लॉर्ड्स में अपेक्षित परिस्थितियों के लिए एक संतुलित टीम का चयन किया है। डब्ल्यूटीसी फाइनल 11 जून से लॉर्ड्स में होगा।

डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए दक्षिण अफ्रीकी टीम इस प्रकार है-

टेम्बा बावुमा (कप्तान), टोनी डी ज़ोरज़ी, एडेन मार्कराम, वियान मुल्डर, मार्को जेनसन, कगिसो रबाडा, केशव महाराज, लुंगी एनगिडी, कॉर्बिन बॉश, काइल वेरिन, डेविड बेडिंघम, ट्रिस्टन स्टब्स, रयान रिकेल्टन, सेनुरन मुथुसामी, डेन पैटरसन।

फ्रेंच ओपन 2025 से पहले जोकोविच और कोच एंडी मरे हुए अलग

नई दिल्ली। सर्बियाई टेनिस चैंपियन नोवाक जोकोविच और एंडी मरे ने छह महीने के बाद अपनी कोचिंग साझेदारी समाप्त कर दी है। इसकी घोषणा सोशल मीडिया पर की गई है। जोकोविच ने इंस्टाग्राम पर लिखा, कोच एंडी, पिछले छह महीनों में कोर्ट पर और बाहर की सारी मेहनत, मौज-मस्ती और समर्थन के लिए आपका धन्यवाद। मुझे हमारी दोस्ती को और गहरा करने में बहुत मज़ा आया।पूर्व विश्व नंबर एक मरे इस साल के ऑस्ट्रेलियन ओपन से कुछ समय पहले कोच के रूप में अपने पूर्व ऑन-कोर्ट प्रतिद्वंद्वी के साथ शामिल हुए, जहां जोकोविच अलेक्जेंडर ज़्वेरेव से हारने से पहले सेमीफ़ाइनल में पहुंचे थे। हालांकि, यह साझेदारी अब नहीं रहेगी क्योंकि जोकोविच क्ले सीज़न के दौरान अपने खराब फॉर्म को कम करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसकी शुरुआत अगले सप्ताह जिनेवा ओपन से होगी और 25 मई को रोलैंड गैरोस में अपने चौथे फ्रेंच ओपन खिताब की तलाश में हैं। मरे ने कहा, नोवाक को साथ काम करने के अविश्वसनीय अवसर के लिए धन्यवाद और पिछले छह महीनों में उनकी कड़ी मेहनत के लिए उनकी टीम को धन्यवाद। मैं नोवाक को बाकी सीज़न के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

आईपीएल 2025: गुजरात टाइटन्स ने अहमदाबाद में प्रशिक्षण सत्र किया आयोजित

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 17 मई से फिर से शुरू होने के साथ ही गुजरात टाइटन्स (जीटी) अपने घरेलू मैदान अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में प्रशिक्षण के लिए लौट आई है। पिछले हफ्ते भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते सीमा पार तनाव के कारण भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने टूर्नामेंट के बाकी मैचों को एक सप्ताह के लिए स्थगित कर दिया था। जीटी के कप्तान शुभमन गिल, तेज गेंदबाज

मोहम्मद सिराज, बल्लेबाज साई सुदर्शन, वाशिंगटन सुंदर और शेरफेन रदरफोर्ड सत्र में उपस्थित थे। टाइटंस वर्तमान में 11 मैचों में से आठ जीत और 0.793 के नेट रन रेट के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर है। संशोधित कार्यक्रम के अनुसार, जीटी का अगला मुकाबला दिल्ली में दिल्ली कैपिटल्स से होगा और फिर अहमदाबाद लौटकर लखनऊ सुपर जायंट्स और चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ़ अपने लीग चरण का समापन करेगी।

बरौनी की फुटबॉल क्रांति : दिल की चोट बनी जीत की विरासत

बेगूसराय/पटना। बिहार के बेगूसराय की फिजाओं में फुटबॉल का रंग घुला है और यह सिर्फ फ्लाईओवर के खंभों पर लिखा एक नारा नहीं है, यह एक खामोश क्रांति की दास्तान है, जो बिहार के एक गुमनाम कोने में टूटी हड्डियों और आहत स्वाभिमान के साथ शुरू हुई थी। राजधानी पटना की भागदौड़ से दूर बरौनी के एक शांत मुहल्ले में फुटबॉल यूं ही नहीं आ गई। इसे अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। स्वतंत्रता सेनानी यमुना भगत की विरासत के रूप में पहचाना जाने वाला यह मैदान लगभग 80 साल पहले फुटबॉल का अप्रत्याशित घर बन गया था। वहीं, इस कहानी का असली मोड़ वर्ष 1990 में आया, जब स्थानीय लड़कियों की एक अनुभवहीन और आत्मविश्वास से रहित टीम एक प्रदर्शनी मैच में मुजफ्फरपुर की धुरंधर टीम के सामने बुरी तरह हार गई। यह हार मैदान की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित मैच में सिर्फ शारीरिक चोटें नहीं दे गई ।

यूएई नेशनल डे पर शुरू होगा डीपी वर्ल्ड टी20 लीग का चौथा सीजन

एजेंसी

नई दिल्ली। डीपी वर्ल्ड अंतरराष्ट्रीय लीग टी-20 के चौथे संस्करण की शुरुआत इस साल के अंत में 2 दिसंबर को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर होगी। यह प्रतियोगिता 4 जनवरी 2026 तक चलेगी, जिसमें 6 टीमों के बीच 34 मुकाबले खेले जाएंगे।इस बार टूर्नामेंट का आयोजन उसके पारंपरिक जनवरी-फरवरी समय से पहले किया जा रहा है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय टी-20 विश्व कप फरवरी-मार्च 2026 में होने वाला है। टी-20 लीग के अध्यक्ष और अमीरात क्रिकेट बोर्ड के उपाध्यक्ष खालिद अल जरूनी ने कहा, हमें यह घोषणा करते हुए बेहद खुशी हो रही है कि लीग का चौथा संस्करण यूएई के राष्ट्रीय पर्व ईद-अल-इत्तिहाद पर शुरू होगा। यह दिन

हमारे लिए गर्व का प्रतीक है और दुनियाभर के करोड़ों क्रिकेट प्रेमियों के लिए उत्सव का अवसर भी। यूएई विभिन्न देशों से आए लोगों का घर है और यह लीग हमारे इस विविधता भरे समाज को एकजुट करने का अवसर देती है।

टी-20 लीग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डेविड व्हाइट ने कहा, ÷हमने सभी संबंधित पक्षों से चर्चा के बाद दिसंबर-जनवरी की अवधि तय की है, जिससे विश्व कप से पहले खिलाड़ियों को राष्ट्रीय टीम की तैयारी का पूरा समय मिल सके।÷ उन्होंने आगे कहा, ÷यह समय टीमों को बेहतर खिलाड़ियों की उपलब्धता भी देगा, जिससे मुकाबले और रोमांचक होंगे। पिछले सीज़न में दुनियाभर के दिग्गज खिलाड़ी मैदान में नजर आए थे, जिनमें प्रमुख नाम निकोलस पूरन, सैम करन (सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी - लाल बेल्ट), शाई होप (सर्वाधिक रन - हरी बेल्ट), फज़लहक फारूकी (सर्वाधिक विकेट - सफेद बेल्ट), आंद्रे रसेल, सुनील नरेन, डेविड वॉर्नर, टिम साउदी, फखर ज़मान, और एडम ज़म्पा के हैं।

पाकिस्तान टीम के नए व्हाइट-बॉल कोच नियुक्त हुए माइक हेसन

एजेंसी

नई दिल्ली। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने माइक हेसन को राष्ट्रीय पुरुष टीम का नया व्हाइट-बॉल कोच नियुक्त किया है। न्यूजीलैंड के इस खिलाड़ी को 26 मई को कार्यभार संभालना है और उनके अनुबंध की अवधि अभी तक ज्ञात नहीं है। 50 वर्षीय हेसन के पास कोचिंग का अच्छा अनुभव है। वे 2012-18 तक न्यूजीलैंड पुरुष टीम के प्रभारी रहे हैं। इस अवधि में टीम ने सभी प्रारूपों में अपार सफलता हासिल की। हेसन ने 2019-23 तक इंडियन प्रीमियर लीग में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु में भी काफी सफल कार्यकाल बिताया। वर्तमान में, वह इस्लामाबाद यूनाइटेड के मुख्य कोच हैं, जिसने 2024 पाकिस्तान सुपर लीग का खिताब जीता था।पाकिस्तान के कोच के रूप में हेसन का पहला काम बांग्लादेश के खिलाफ आगामी टी20 सीरीज़ होगी, लेकिन उन मैचों का शेड्यूल बदल सकता है। वह अकीब जावेद की जगह लेंगे, जिन्होंने अक्टूबर 2024 में गैरी कर्स्टन के अचानक इस्तीफ़े के बाद अंतरिम व्हाइट-बॉल कोच के रूप में काम

किया था। पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी ने हेसन की प्रशंसा की और उम्मीद जताई कि अनुभवी कोच अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पाकिस्तान की सफलता की कहानियों को फिर से स्थापित करने में मदद करेंगे। पीसीबी की ओर से जारी विज्ञप्ति में नकवी ने कहा, मुझे न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर और मशहूर कोच माइक हेसन को पाकिस्तान की पुरुष टीम के व्हाइट-बॉल हेड कोच के रूप में नियुक्त करते हुए खुशी हो रही है।

रोहित के टेस्ट से संन्यास के बाद इंग्लैंड दौरे के लिए कप्तानी को लेकर तेज हुई दौड़

एजेंसी

नई दिल्ली। टेस्ट क्रिकेट से रोहित शर्मा के पिछले हफ्ते संन्यास लेने के बाद इंग्लैंड में होने वाली पांच मैचों की टेस्ट सीरीज़ के लिए भारतीय टीम के नए कप्तान को लेकर चर्चा तेज़ हो गई है। जहां एक ओर शुभमन गिल का नाम सामने आ रहा है, वहीं पूर्व भारतीय ऑफ स्पिनर आर. अश्विन ने तेज़ गेंदबाज़ जसप्रीत बुमराह को कप्तानी के लिए मज़बूत दावेदार बताया है।

अश्विन बोले- बुमराह हैं कप्तानी के हकदार

अपने शो 'ऐश की बात' में अश्विन ने कहा, 'इंग्लैंड जाने वाली टीम नई और बदली हुई होगी और उस टीम में शायद बुमराह सबसे सीनियर खिलाड़ी होंगे। वो निश्चित रूप से कप्तानी के विकल्पों में शामिल हैं। मैं मानता हूं कि वो इसके हकदार हैं, लेकिन चयनकर्ता उनके शारीरिक भार को देखकर फैसला लेंगे।

बुमराह को पहले भी मिल चुकी है कप्तानी

गौरतलब है कि जसप्रीत बुमराह ने 2022 में एजबेस्टन में खेले गए पुनर्निर्धारित पांचवें टेस्ट में भारत की कप्तानी की थी, जब रोहित शर्मा कोविड के कारण टीम से बाहर थे। उस मैच में भले ही भारत को हार का इतिहास देखते हुए चयनकर्ता उन्हें फुल-टाइम टेस्ट कप्तान बनाने से पहले उनके वर्कलोड और फिटनेस को लेकर सावधानी बरत सकते हैं।

मिली थी, लेकिन बुमराह की कप्तानी की काफी तारीफ हुई थी। इसके अलावा बुमराह ने पिछले साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक टेस्ट मैच में भारत को 295 रन से ज़बरदस्त जीत दिलाई थी।

फिटनेस होगी सबसे बड़ा सवाल: हालांकि बुमराह की चोटों

19 जून से लॉर्ड्स में शुरू होगी सीरीज़

इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज़ के लिए भारतीय टीम का ऐलान इसी महीने के अंत तक होने की उम्मीद है। पहला टेस्ट मुकाबला 19 जून से ऐतिहासिक लॉर्ड्स मैदान में खेला जाएगा।

देहरादून करेगा अगले महीने राइफल/पिस्टल स्पर्धाओं के नेशनल सेलेक्शन ट्रायल्स 3 और 4 की मेजबानी

एजेंसी

नई दिल्ली। नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) ने घोषणा की है कि ग्रुप 'ए' निशानेबाजों के लिए राइफल और पिस्टल स्पर्धाओं में नेशनल सेलेक्शन ट्रायल्स 3 और 4 का आयोजन 24 से 30 जून, 2025 तक देहरादून के रायपुर स्थित महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज के त्रिशूल शूटिंग रेंज में किया जाएगा। ये ट्रायल्स अगस्त में कजाकिस्तान में होने वाली 16वीं एशियन शूटिंग चैंपियनशिप 2025 और वर्ष के अंत में चीन और मिस्र में होने वाले आईएसएसएफ वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम चयन में अहम भूमिका निभाएंगे। देश के शीर्ष राइफल और पिस्टल निशानेबाज इन चयन ट्रायल्स में उस आत्मविश्वास के साथ उतरेंगे, जो उन्होंने अर्जेंटीना और पेरू में आयोजित दो चरणों की साउथ अमेरिकन आईएसएसएफ वर्ल्ड कप श्रृंखला में शानदार प्रदर्शन कर अर्जित किया है। इस दौरे में भारतीय निशानेबाजों ने 32 फाइनल मुकाबलों में जगह बनाई, जिसमें मिश्रित टीम स्पर्धाएं भी शामिल थीं, और कुल 15 पदक जीते जिनमें छह स्वर्ण पदक थे।चयन मानदंडों के अनुसार केवल ग्रुप ए में शामिल पात्र निशानेबाजों को ही इन ट्रायल्स में राइफल थ्री पोजीशन (पुरुष एवं महिला) में 30-30 स्लॉट, 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल (पुरुष) में 20 स्लॉट और 25 मीटर स्पोर्ट पिस्टल (महिला) में 30 स्लॉट

भाग लेने की अनुमति होगी। नेशनल सेलेक्शन ट्रायल्स 3 और 4 में सभी ओलंपिक राइफल और पिस्टल स्पर्धाओं को शामिल किया जाएगा और इसमें केवल शीर्ष रैंकिंग वाले सीमित संख्या में निशानेबाज ही भाग लेंगे। इसमें 10 मीटर एयर राइफल (पुरुष एवं महिला) और 10 मीटर एयर पिस्टल (पुरुष एवं महिला) में 50-50 स्लॉट, 50 मीटर होंगे। ट्रायल्स का पहला दिन, 25 जून, ट्रायल-3 के तहत 10 मीटर एयर राइफल पुरुष, 25 मीटर पिस्टल महिला और 50 मीटर थ्री पोजीशन महिला स्पर्धाओं के क्वालिफाइंग राउंड और फाइनल के साथ शुरू होगा। अगले दिन ट्रायल-4 में इन्हीं स्पर्धाओं के क्वालिफाइंग और फाइनल मुकाबले आयोजित किए जाएंगे।

इंग्लैंड दौरे के लिए वेस्टइंडीज महिला टीम घोषित, हेले मैथ्यूज करेंगी कप्तानी

एजेंसी

नई दिल्ली। क्रिकेट वेस्टइंडीज ने आगामी इंग्लैंड दौरे के लिए 15 सदस्यीय महिला टीम की घोषणा कर दी है। यह दौरा 21 मई से 8 जून के बीच खेला जाएगा, जिसमें तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय और तीन वनडे मैच शामिल हैं। टीम की कमान एक बार फिर स्टार ऑलराउंडर हेले मैथ्यूज के हाथों में होगी, जबकि शेमेन कैंपबेल उपकप्तान की भूमिका निभाएंगी।

दो नए चेहरों को मिला मौका

इस स्क्वाड में पिछले महीने पाकिस्तान में खेले गए वर्ल्ड कप क्वालिफायर की तुलना में दो बदलाव किए गए हैं। 20 वर्षीय गयाना की

ऑलराउंडर रियलियाना ग्रिमंड और सेंट किट्स की तेज गेंदबाज़ जहांज़ारा क्लैक्सन को टीम में शामिल किया गया है। ये दोनों खिलाड़ी रशाडा विलियम्स (विकेटकीपर-बल्लेबाज) और चिनेल हेनरी (ऑलराउंडर) की जगह टीम का हिस्सा बनी हैं।

13 मई को इंग्लैंड रवाना होगी टीम

वेस्टइंडीज महिला टीम 13 मई को इंग्लैंड रवाना होगी। सीरीज़ की शुरुआत 21 मई को पहले टी20 मुकाबले से होगी, जो द स्पिटफायर ग्राउंड, कैंटरबरी में खेला जाएगा।

पूरा कार्यक्रम

टी20 सीरीज़: पहला टी20 - 21 मई, कैंटरबरी

दूसरा टी20 - 23 मई, होव

वनडे सीरीज़:

पहला वनडे - 30 मई, डर्बी

दूसरा वनडे - 4 जून, लीसेस्टर

तीसरा वनडे - 7 जून, टॉन्टन

वेस्टइंडीज महिला टीम:

हेले मैथ्यूज (कप्तान), शेमेन कैंपबेल (उपकप्तान), आलिया एलेन, जहांज़ारा क्लैक्सन, अफी फ्लेचर, चेरी एन फ्रेजर, शबीका गजनबी, जनीलिया ग्लासगो, रियलियाना ग्रिमंड, ज़ायदा जेम्स, किआना जोसेफ, मैंडी मंगरू, अश्मिनी मुनिसार, करिश्मा रामहरक, स्टेफनी टेलर।

आईसीसी महिला वनडे रैंकिंग में दूसरे स्थान पर पहुंचीं स्मृति मंधाना

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने महिला त्रिकोणीय श्रृंखला के फाइनल में अपनी मैच जिताऊ शतकीय पारी की बदौलत बल्लेबाजों की आईसीसी महिला वनडे रैंकिंग में एक स्थान ऊपर चढ़ते हुए दूसरा स्थान हासिल कर लिया है। श्रीलंका के खिलाफ फाइनल में 116 रन की पारी खेलते हुए मंधाना ने अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उन्होंने अर्धशतक भी लगाया था। इस शानदार प्रदर्शन के बाद मंधाना ने 727 रेटिंग अंक प्राप्त किए हैं और वह अब नंबर एक बल्लेबाज लौरा वोल्वार्ड्ट से केवल 11 अंक पीछे हैं। मंधाना की टीम की साथी जेमिमा रोड्रिग्स भी अपनी शानदार 123 रनों की पारी की बदौलत 5 स्थान ऊपर चढ़कर करियर के सर्वोच्च 15वें स्थान पर पहुंच गई हैं। वहीं, दीप्ति शर्मा ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 93 रन बनाकर 13 स्थान ऊपर चढ़ते हुए संयुक्त 32वें स्थान पर पहुंची हैं। रनर-अप श्रीलंका की कप्तान चमारी अटापट्टू ने 2 स्थान ऊपर चढ़कर संयुक्त सातवां स्थान प्राप्त किया है जबकि विश्मी गुनारत्ने 8 स्थान ऊपर चढ़कर 63वें स्थान पर पहुंच गई हैं। अनुश्का संजीवनी ने सबसे बड़ी छलांग लगाते हुए 19 स्थान ऊपर चढ़कर 75वें स्थान पर जगह बनाई है। हालांकि दक्षिण अफ्रीका का टीम प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा, लेकिन उनके बल्लेबाजों ने व्यक्तिगत तौर पर अच्छा प्रदर्शन किया।

भारतीय शतरंज खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन, कई इंटरनेशनल टूर्नामेंट में बिखेरी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय चेस खिलाड़ी वर्तमान में दुनिया भर में चल रहे कुछ अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं और देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। आइए नजर डालते हैं कुछ प्रमुख टूर्नामेंट में, जिनमें भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन बेहतरीन रहा भारतीय शतरंज खिलाड़ियों ने एशियन चेस चैंपियनशिप में अब तक शानदार प्रदर्शन किया है। ओपन सेक्शन में पांच पुरुष और वीमेन सेक्शन में चार भारतीय महिला खिलाड़ी टॉप 10 में शामिल हैं। महिला वर्ग में सेषाद्री रिजा ने पांच में से पांच मुकाबले जीतकर तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया है।ओपन सेक्शन में भारत के एल. श्रीहरि चौथे स्थान पर हैं, जबकि ईरान के बर्दिया दानेशवर शीर्ष पर हैं। भारत के कार्तिकेयन मुरली और निहाल सरीन

भी टॉप 10 में शामिल हैं – क्रमशः सातवें और दसवें स्थान पर। यह चैंपियनशिप न केवल एशियन चैंपियन का खिताब तय करती है, बल्कि 2025 फाइडे वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफायर भी है। ग्रांड चेस टूर 2025 के दूसरे चरण और क्लासिकल इवेंट 'सुपरबेट चेस क्लासिक रोमानिया' में भारत के डी. गुकेश को राउंड 6 में अलीरेज़ा फिरोज़ा के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। छह राउंड के बाद गुकेश केवल 2 अंकों के साथ अंतिम स्थान पर हैं। वहीं, भारत के दूसरे प्रतिभागी आर. प्रज्ञानानंद ने जान-क्रिज़टोफ़ डूडा से ड्रॉ खेला। उनके अब 6 में से 4.5 अंक हैं और वह अलीरेज़ा फिरोज़ा, फबियानो कारुआना और मैक्सिम वाशिए-लाग्रेव के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर हैं।

फाइडे वीमेन ग्रां प्री 2024-2025

फाइडे महिला ग्रां प्री श्रृंखला के ग्रॉसलोबमिंग चरण में अन्ना मुझ्यचुक और झू जिनेर 5-5 अंकों के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर हैं। भारत की आर. वैशाली सातवें राउंड में अलेक्जेंड्रा कोस्टेनियुक से हारने के बाद चौथे स्थान पर खिसक गई हैं। तान झोंगयी, जो मौजूदा महिला वर्ल्ड चैंपियनशिप की रनर-अप हैं, 4.5 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। यह ग्रॉसलोबमिंग लेग 2024-2025 महिला ग्रां प्री की अंतिम प्रतियोगिता है और यह अगली वीमेन कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए अहम क्वालिफिकेशन इवेंट है।

आईपीएल के शेष हिस्से में खेलेंगे बोल्ट

मुम्बई। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के शेष हिस्से में अपनी टीम मुम्बई इंडियंस के लिए खेलने का निर्णय किया है। 36 वर्षीय बोल्ट को मुम्बई इंडियंस ने मेगा नीलामी में 12.5 करोड़ रुपये में खरीदा था। बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज ने आईपीएल के इस सत्र में 8.49 की इकॉनमी रेट से 18 विकेट लिये हैं। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 26 रन देकर चार विकेट अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। वह पूरे टूर्नामेंट में संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर हैं। पांच बार की चैंपियन मुम्बई को अब भी अपने तीन प्रमुख विदेशी खिलाड़ियों की उपलब्धता का इंतजार है। दक्षिण अफ्रीका के रायन रिकल्टन और कोर्बिन बॉश, और इंग्लैंड के ऑलराउंडर विल जैक्स की भागीदारी को लेकर अब भी संशय बना हुआ है। दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट बोर्ड के अनुसार उनके खिलाड़ियों की एनओसी 25 मई तक वैध है।

कोपा अमेरिका विवाद: सीएएस ने उरुग्वे के खिलाड़ियों की अपील खारिज की,पांच खिलाड़ी रहेंगे निलंबित

एजेंसी

लुसाने। खेलों की सर्वोच्च अदालत कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट (सीएएस) ने उरुग्वे के पांच अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों की अपील खारिज कर दी है। इन खिलाड़ियों पर पिछले साल जुलाई में कोपा अमेरिका सेमीफाइनल में कोलंबिया से हार के बाद बैंक ऑफ अमेरिका स्टेडियम (नॉर्थ कैरोलिना, यूएस) में दर्शकों से भिड़ने का आरोप था। कोर्ट ने साफ कहा कि यह हरकत 'स्वरक्षा' नहीं, बल्कि स्वेच्छा से की गई हिंसात्मक और अनुचित प्रतिक्रियाथी।इस विवाद में लिवरपूल के फॉरवर्ड डार्विन नुनेज़, बार्सिलोना के डिफेंडर रोनाल्ड अराउजो, और एटलेटिको मैड्रिड के डिफेंडर जोस मारिया गिमेनेज़ शामिल थे। इनके अलावा टॉटनहम के मिडफील्डर रोड्रिगो बेंटनकुर और नापोली के डिफेंडर माथियास ओलिवेरा भी इस झड़प में शामिल पाए गए। दक्षिण अमेरिकी फुटबॉल संस्था कॉनमेबोल ने इन सभी खिलाड़ियों को 3 से 5 मैचों के लिए निलंबित किया था।

वर्ल्ड कप क्वालिफायर में नहीं खेल पाएंगे नुनेज़

अब डार्विन नुनेज़ 5 जून को पराग्वे के खिलाफ और 10 जून को वेनेजुएला के खिलाफ होने वाले फीफा वर्ल्ड कप 2026 क्वालिफायर मुकाबलों में नहीं खेल पाएंगे।

मार्सेलो बिएल्सा की कोचिंग में उरुग्वे की टीम इस समय 10 टीमों की क्वालिफाइंग तालिका में तीसरे स्थान पर है और वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई करने की मजबूत स्थिति में है।

क्या है क्वालिफिकेशन की स्थिति?

दक्षिण अमेरिकी क्वालिफायर में शीर्ष 6 टीमें सीधे

विश्व कप में जगह बनाएंगी, जबकि 7वें स्थान पर रहने वाली टीम इंटरकॉन्टिनेंटल प्लेऑफ खेलेगी। उरुग्वे फिलहाल वेनेजुएला से 6 अंक आगे है और उसके पास क्वालीफाई करने के लिए कुल 4 मैच बचे हैं।

'ड्रीम लीग ऑफ इंडिया' सिर्फ एक लीग नहीं है, यह प्रतिभाओं को पंख देने का जरिया भी है : ऋषभ भाटिया

एजेंसी

नई दिल्ली। सर्वोटेक स्पोर्ट्स के डायरेक्टर ऋषभ भाटिया ने ड्रीम लीग ऑफ इंडिया की तारीफ की है। उन्होंने कहा है कि यह सिर्फ एक लीग नहीं है, बल्कि प्रतिभाओं को पंख देने का जरिया है। भारत में टेनिस क्रिकेट बॉल की बढ़ती लोकप्रियता के चलते अंतरराष्ट्रीय टेनिस क्रिकेट फेडरेशन (आईटीसीएफ) ने इसे मान्यता प्रदान की है। आईटीसीएफ को वर्ष भर चलने वाली ड्रीम लीग ऑफ इंडिया की अवधारणा काफी पसंद आई है। इसमें न केवल एक फ्रेंचाइजी प्रतियोगिता होगी, बल्कि इंटर-जोनल और जोनल चैंपियनशिप टूर्नामेंट भी आयोजित किए जाएंगे, ताकि खिलाड़ी साल भर सक्रिय रहें और हर क्षेत्र की प्रतिभा को तराशा जा सके। सर्वोटेक स्पोर्ट्स के डायरेक्टर ऋषभ भाटिया ने एक बयान में कहा, ÷यह जानकर दिल को बहुत सुकून मिलता है कि ड्रीम लीग ऑफ इंडिया ऐसी प्रतिभाओं को मंच देने जा रही है, जिन्हें शायद ही कोई देख पाता। यह सिर्फ एक लीग नहीं है, बल्कि प्रतिभाओं को पंख देने का जरिया है। हम ऐसे खिलाड़ियों की तलाश कर रहे हैं, जिनमें जुनून और प्रतिभा तो है, लेकिन मौके नहीं।इस विषय पर टेनिस क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (टीसीएआई) के अध्यक्ष कन्हैया गुर्जर ने कहा, ड्रीम लीग ऑफ इंडिया केवल एक मंच नहीं है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने का एक द्वार है। जो खिलाड़ी इस लीग में बेहतरीन प्रदर्शन करेंगे, उन्हें भारतीय जर्सी पहनने और टेनिस क्रिकेट वर्ल्ड कप, एशिया कप और अन्य अंतरराष्ट्रीय सीरीज में खेलने का अवसर मिलेगामई 2025 में सर्वोटेक स्पोर्ट्स ने ड्रीम लीग ऑफ इंडिया की शुरुआत की, जो टेनिस क्रिकेट बॉल पर आधारित अपनी तरह की पहली लीग है। इसमें भाग लेने वाले खिलाड़ियों को टेनिस क्रिकेट बॉल वर्ल्ड कप और एशिया कप में भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका भी मिलेगा। देशभर में होने वाली इस प्रतियोगिता के दौरान स्काउट्स खिलाड़ियों पर करीबी नजर रखेंगे, जो विश्व कप और एशिया कप के लिए भारतीय टीम के चयन का आधार बनेगा। टेनिस क्रिकेट बॉल वर्ल्ड कप और एशिया कप भारत में आयोजित किए जाएंगे। ऐसा पहली बार होगा जब पूरी तरह टेनिस बॉल से खेले जाने वाले वैश्विक और महाद्वीपीय टूर्नामेंट भारत में होंगे। ड्रीम लीग ऑफ इंडिया जूनियर्स (13-18) और सीनियर्स (18+) दोनों वर्गों के लिए होगी, जिसमें प्रत्येक श्रेणी में 6 फ्रेंचाइज़ी टीमें भाग लेंगी। इच्छुक खिलाड़ी लीग की आधिकारिक वेबसाइट या स्टार्जपिट ऐप पर पंजीकरण कर सकते हैं। पूरे भारत के विभिन्न जिलों और केंद्रों में 1,500 से अधिक प्रमाणित कोचों की देखरेख में खुले और निष्पक्ष ट्रायल्स आयोजित किए जाएंगे।ड्रीम लीग ऑफ इंडिया के लिए 860 जूनियर और 860 सीनियर खिलाड़ियों को ऑक्शन के लिए शॉर्टलिस्ट किया जाएगा। प्रत्येक श्रेणी में छह फ्रेंचाइज़ी टीमें अपने-अपने खिलाड़ियों का चयन करेंगी। फेयर ट्रायल्स से शॉर्टलिस्ट हुए खिलाड़ी ड्रीम लीग ऑफ इंडिया के ऑक्शन में भाग लेंगे। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय टेनिस क्रिकेट फेडरेशन (आईटीसीएफ) की ओर से भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिल सकता है। इसके अलावा, जो खिलाड़ी ऑक्शन में नहीं बिकेंगे, वे देश के सबसे बड़े इंटर-जोनल टूर्नामेंट में भाग लेंगे।

'नागिन' में शेषा बनकर हुईं मशहूर, जानें अब कहां हैं और क्या कर रही हैं

अदा खान

अपने करियर में अदा खान ने कई तरह के किरदार निभाए हैं, लेकिन नागिन में उनका शेषा का किरदार आज भी लोगों को याद है. अदा खान के जन्मदिन पर उनके फैंस यही चाहते हैं कि वो जल्दी ही किसी नए और दमदार काम के साथ टीवी या ओटीटी पर वापसी करें.

'नागिन' सीरियल से मशहूर हुईं टीवी एक्ट्रेस अदा खान का आज यानी 12 अप्रैल को जन्मदिन है. अदा 36 साल की हो गई हैं. अपनी खूबसूरत आंखें और लाजवाब एक्सप्रेशंस से उन्होंने टीवी पर अपनी अलग पहचान बनाई है. 'बहनें' और 'अमृत मंथन' जैसे सीरियलों से अदा ने अपने करियर की शुरुआत की, लेकिन 'नागिन' में उनका निभाया हुआ 'शेषा' का किरदार उनके लिए उनके करियर का टर्निंग पॉइंट रहा.इस सीरियल में वो निगेटिव किरदार में नजर आई थीं. इस सीरियल में उनकी एक्टिंग सभी लोगों को खूब पसंद आई. तो चलिए, उनके जन्मदिन पर जानते हैं कि आजकल टीवी की ये मशहूर 'नागिन' अदा खान कहां हैं और क्या कर रही हैं ?

इन टीवी शोज में भी किया काम ?

'नागिन' सीरियल के बाद अदा खान और भी कई टीवी शोज में दिखाई दीं. 'विश या अमृत: सितारा', 'कानपुर वाले खुराना' के साथ नागिन के हर नए सीजन में भी अदा खान अपना कमाल दिखाते हुए नजर आई हैं. टीवी सीरियल के अलावा अदा ने रिएलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी 10' में भी अपना हाथ आजमाया था. लेकिन इस शो में अदा कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाईं. 2 साल पहले 'बागले की दुनिया' में अदा 'सखी वर्गे' के किरदार में नजर आई थीं. इस सीरियल के बाद उन्होंने छोटे पर्दे से दूरियां बना ली.

वेब सीरीज में भी कर चुकी हैं काम

सिर्फ टीवी ही नहीं अदा ओटीटी पर भी नजर आई हैं. पिछले साल वेब सीरीज 'एक लड़की को देखा तो' में अदा खान ने डॉक्टर अंकिता यानी अंकिता गुलेरिया का किरदार निभाया था. टीवी से दूरी बनाने वाली अदा अब ओटीटी पर भी कुछ मजेदार काम करना चाहती हैं. उन्हें सिर्फ सही मौके का इंतजार है. एक्टिंग से दूरियां बनाने वाली अदा खान इन दिनों सोशल मीडिया पर खूब एक्टिव रह रही हैं और अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी फोटो और वीडियो डालती रहती हैं. फैंस को उम्मीद है कि उनकी ये पसंदीदा एक्ट्रेस जल्द ही नए प्रोजेक्ट के साथ एंटरटेनमेंट की दुनिया में बड़ा कमबैक करेंगी.

बदलेगी कहानी की चाल, 'अनुपमा' से लेकर 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' तक... टीवी के इन 5 हिट शोज में होंगे बड़े बदलाव

छोटे पर्दे के चाहने वालों के लिए आने वाला समय काफी दिलचस्प होने वाला है. आपके पसंदीदा पांच मशहूर टीवी शोज जल्द ही एक नया मोड़ लेने वाले हैं. इन शोज में या तो कहानी कई साल आगे बढ़ जाएगी (जिसे लीप कहते हैं) या फिर कुछ ऐसे नए बदलाव आएंगे, जो कहानी को पूरी तरह से बदलकर रख देंगे. आइए जानते हैं कौन से हैं वो पांच शोज और उनमें क्या नया होने वाला है.

1. अनुपमा

स्टार प्लस का सुपरहिट शो 'अनुपमा' लगातार दर्शकों के दिलों पर राज कर रहा है. अब इस शो में भी एक बड़ा लीप आने की चर्चा है. हालांकि अभी तक ये स्पष्ट नहीं हो पाया है कि ये कहानी कितने साल आगे बढ़ेगी, लेकिन माना जा रहा है कि अनुपमा की जिंदगी में कुछ नए रिश्ते और नए चुनौतियां देखने को मिल सकती हैं.

2. ये रिश्ता क्या कहलाता है

सालों से दर्शकों का प्यार पा रहा टीवी शो 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' भी एक नए पड़ाव पर पहुंचने वाला है. खबरें हैं कि इस शो में कुछ नए कलाकारों की एंट्री होने वाली है. यानी, जो पुराने मुख्य किरदार हैं, उनके साथ मिलकर कुछ नए एक्टर्स अब शो को आगे बढ़ाएंगे. अब ये देखना दिलचस्प होगा कि नई पीढ़ी दर्शकों को कितना पसंद आती है और कहानी में क्या नया रंग भरती है.

3. झनक

कुछ महीने पहले शुरू हुआ स्टार प्लस का नया शो 'झनक' भी कम समय में ही दर्शकों के बीच अपनी जगह बना चुका है. इस शो में भी लीप की खबरें आ रही हैं. माना जा रहा है कि कहानी में कुछ ऐसा बड़ा ट्विस्ट आएगा, जिससे झनक की जिंदगी पूरी तरह से बदल जाएगी.

4. भाग्यलक्ष्मी

जी टीवी के टीवी सीरियल 'भाग्यलक्ष्मी' में भी जल्द ही एक बड़ा लीप देखने मिलेगा. लीप के बाद इस शो की कहानी ऋषि और लक्ष्मी के रिश्ते के इर्द-गिर्द घूमेगी. लीप के बाद इनकी कहानी में क्या नया मोड़ आता है, क्या इनके रिश्ते और मजबूत होंगे या फिर कोई नई मुश्किल आएगी, ये देखना दिलचस्प होगा.

5. परिणीति:

कलर्स टीवी के सीरियल 'परिणीति' में परी और नीती इन दो बहनों की कहानी बताई गई है. इस शो में भी जल्द ही धमाकेदार लीप देखने मिलने वाला है. लीप के बाद कहानी में कुछ ऐसे नए किरदार आएंगे या फिर मौजूदा किरदारों की जिंदगी में कुछ ऐसा बदलाव आएगा, जिससे कहानी और भी दिलचस्प हो जाएगी.

एल्विश यादव को इलाहाबाद हाईकोर्ट से झटका, सांप के जहर का इस्तेमाल करने के मामले में नहीं मिली राहत

सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर और यूट्यूबर एल्विश यादव भले ही छोटे पर्दे के कुकिंग शो के जरिए लोगों को हंसाते हुए नजर आ रहे हैं. लेकिन असल जिंदगी में एल्विश की मुसिबतें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं. यूट्यूबर को इलाहाबाद हाईकोर्ट से बड़ा झटका लगा है. रेव पार्टी में ड्रग्स-सांप के जहर के इस्तेमाल करने के मामले में कोर्ट ने एल्विश यादव की चार्जशीट-समन रद्द करने की याचिका को खारिज कर दिया है.एल्विश ने इस याचिका को खारिज करने की अपील की थी. लेकिन मामले में सुनवाई करते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट की सिंगल बेंच ने उनकी मांग को खारिज कर दिया. सोमवार को जस्टिस सौरभ श्रीवास्तव ने रेव पार्टी में ड्रग्स-सांप के जहर के इस्तेमाल के मामले में फैसला सुनाया. इस मामले में तीन नवंबर 2023 को नोएडा के सेक्टर 49 में यूट्यूबर एल्विश यादव समेत कई लोगों पर एफआईआर दर्ज हुई थी.

जिंदा सांप के साथ एल्विश ने वीडियो बनाया

कोर्ट ने कहा है कि याचिकाकर्ता के पास चार्जशीट रद्द करने के पर्याप्त आधार नहीं हैं. पीएफए आर्गेनाइजेशन के एनिमल वेलफेयर ऑफिसर गौरव गुप्ता ने सभी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी. सभी पर रेव पार्टी में ड्रग्स, स्नेक वेनम के प्रयोग व जिंदा सांपों के साथ वीडियो बनाने का आरोप लगा था.

एल्विश यादव पर लगे हैं ये इल्जाम

3 नवंबर 2023 को एल्विश यादव समेत अन्य लोगों के खिलाफ पुलिस ने एफआईआर दर्ज की थी. सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर और यूट्यूबर का ये केस नोएडा के सेक्टर 49 से जुड़ा हुआ था. पीएफए आर्गेनाइजेशन के एनिमल वेलफेयर ऑफिसर गौरव गुप्ता ने आरोप लगाया था कि एल्विश और उनके साथी रेव पार्टी में ड्रग्स और स्नेक वेनम के इस्तेमाल के लिए जिंदा सांपों के साथ वीडियो बनाते हैं. इसके अलावा यूट्यूबर को लेकर ये भी कहा गया था कि वो अपने एनसीआर वाले फॉर्म हाउस पर जिंदा सांपों के साथ वीडियो शूट करते थे. मामले में आरोपी राहुल यादव का एक ऑडियो क्लिप भी पुलिस को मिला था. पुलिस को राहुल के पास से 20 मिली जहर भी मिला था.

'हाउसफुल 5' के 'लाल परी' गाने पर खेसारी लाल यादव की दोस्त ने दिखाई अदाएं,

अकांक्षा पुरी

को देख मदहोश हुए फैंस

बॉलीवुड एक्ट्रेस अकांक्षा पुरी को जब भोजपुरी सिनेमा के सुपरस्टार खेसारी लाल के साथ काम करने का मौका मिला तो उन्होंने इसे बिल्कुल जाने नहीं दिया. 2024 में रिलीज हुई खेसारी लाल की फिल्म राजाराम में अकांक्षा का एक आइटम नंबर था, लेकिन इसके बाद उन्होंने खेसारी के साथ कुछ फिल्में साइन की हैं. अकांक्षा का सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा, जिसमें उनके मूव्स काफी पसंद किए जा रहे हैं.अकांक्षा पुरी इंस्टाग्राम पर काफी एक्टिव रहती हैं और इस बार जो वीडियो उन्होंने शेयर किया है वो उनके फैंस को मदहोश करने के लिए काफी है. इस वीडियो में अकांक्षा फिल्म हाउसफुल 5 का हिट गाना लालपरी पर डांस करती नजर आ रही हैं.

अकांक्षा पुरी ने किया 'हाउसफुल 5' के गाने पर डांस

एक्ट्रेस अकांक्षा पुरी ने इंस्टाग्राम पर आज यानी 12 मई को एक वीडियो शेयर किया है. इस वीडियो के कैप्शन में उन्होंने लिखा, 'आपकी स्क्रीन को कुछ सम्मोहक ताप से जला रही हूं.' इसके साथ एक्ट्रेस ने लाल परी भी लिखा है और आग वाली इमोजी भी लगाई है.

इस वीडियो में अकांक्षा 'लालपरी' नाम के गाने पर कुछ रोमांटिक मूव्स करती दिख रही हैं. वो किसी रूम में हैं और ये मूव्स करते हुए उनकी आंखों में वो भाव देखने को मिलेगा जो फैंस को काफी पसंद करते हैं. इस पोस्ट के कमेंट बॉक्स में ज्यादातर फैंस हार्ट और आग वाली इमोजी शेयर कर रहे हैं. वहीं एक फैन ने लिखा, 'आप बेहद खूबसूरत हैं.' वहीं किसी दूसरे फैन ने लिखा, 'आपकी फिटनेस बहुत कमाल की है.'

वीडियो शूट की तस्वीरें अकांक्षा पुरी ने की थीं शेयर

वहीं 4 दिन पहले अकांक्षा पुरी ने इसी वीडियो शूट की कुछ तस्वीरें शेयर की थीं. इसके कैप्शन में उन्होंने लिखा था, 'मैं इंस्टाग्राम पर कुछ फायर लेकर आ रही हूं.'